जमींदार, पूंजीपति और पुलिस पाखण्डियों की लोकप्रियता का फायदा किस प्रकार उठाते है और किस तरह उन्हें लोकप्रिय बनाने मे अहम भूमिका अदा करते है, किस प्रकार कभी-कभी कानून की गिरफ्त मे आये ऐसे धूर्त जेल के अन्दर भी अधिकारियों की चेतना मे बद्धमूल अन्धविश्वासों का लाभ उठाकर अपराध की सजा पाने के बदले, जेल मे भी अपनी कारगुजारियाँ करते रहते हैं—इन सारी वास्तविकताओं का यथार्थ चित्रण इस रचना मे मिलता है। ऊपर से त्यागमय जीवन जीने वाले इन पाखण्डियों और इनके आस-पास जुड़े लोगो के भीतर भोग की अतृप्त लालसा ठाठे मारती रहती है। इन अतृप्त वासनाओं को तृप्त करने की प्रक्रिया मे ऐसे व्यक्तियो के पतन की सीमा नही रहती है।

'जमनिया का बाबा' नागार्जुन का एक श्रेष्ठ तथा अत्यन्त रोचक उपन्यास है। इसमें कथाकार ने भारतीय समाज के एक नासूर की चीर-फाड़ की है। जमनिया का बाबा धर्म के नाम पर समाज का शोषण करने वाले ऐसे वर्ग का प्रतिनिधि है जो जनता के अन्धविश्वासों और भोली निष्ठाओं का दोहन करके अय्याश जिन्दगी जीता है। नागार्जुन की विशिष्ट शैली मे लिखा गया यह उपन्यास हिन्दी कथा साहित्य की एक अक्षय निधि है

जमानया का चावा

जमनिया का बाबा

(आंचलिक उपन्यास)
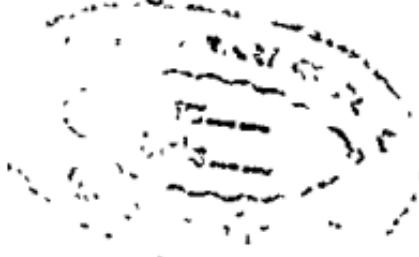
नागार्जुन

सिद्ध-साधुओं की वात नहीं,
पर
'वावा' कहलाने वाले लोगों
की
जिन्दगी के ऊपर से पर्दा
उठाकर देखिए,
आप आश्चर्य से
ठक रह जायेंगे—

जमनिया का बाबा

यात्रा

चार-पाँच रोज बाद बड़ी मुश्किलों से आज थोड़ी-भर चरस मिली। बड़े जमादार की मेहरबानी हुई तो मिजाज बनाने का मौका मिला।

मैं लेटे-लेटे सोच रहा हूँ। मुझे मस्तराम ने बतलाया कि आगे से इतनी चरस रोज मिला करेगी। भला हो बड़े जमादार का जिसके दिल में साधु-बैरागी के लिए श्रद्धा-भक्ति उमगी है।

मोटा कम्बल दोहरा बिछा है। बाहर से बिजली की रोशनी आ रही है। मेरे दोनों पैर प्रकाश में हैं। घुटनों से ऊपर अंधेरा है। बायीं बाँह पर आधे सिर का बोझा डालकर मैं लेटा पड़ा हूँ।

छोटे-छोटे बाल बाँह की चमड़ी में बुरी तरह गड़ रहे हैं, लम्बी जटाओं की याद दिला रहे हैं। अब उन जटाओं का कोई निशान बाकी नहीं है। लेकिन, दिल पर उनकी खुमारी अब भी है।

हाजत में बन्द करने के बाद पहला काम जेलवालों ने यही किया कि मेरी लम्बी जटाओं को इस तरह मुड़वा दिया। ऊपर से कैम्प मजिस्ट्रेट का ऐसा ही हुक्म था। साहब अगर हिन्दू होता तो वैसा हुक्म कैसे देता? वह तो पारसी था, उसके दिल में बाबा की लम्बी जटाओं के लिए रत्ती-भर भी मोह नहीं था। जटाओं का भारी बोझ गमछे में बाँधकर हजाम बाहर निकलने लगा तो मस्तराम की आँखों से दो बूँद आँसू टपके। हजाम के कान से मुँह सटाकर मस्तराम ने कुछ कहा और पॉकेट से निकालकर एक रुपये का नोट थमाया। मैंने अच्छी तरह भाँप लिया कि मस्तराम ने हजाम को रकम देकर इसलिए खुश किया है कि उतरी हुई जटाओं के लच्छे ले जाकर वह नदी में बहा आये, इधर-उधर सड़क के किनारे झाड़ी-झुरमुट के अन्दर डाल देना तो साधू के सिर के

पवित्र बालों का अपमान होगा।

उस रोज मस्तराम की आँखों से बार-बार आँसू छलक आते थे। मुझसे नहीं देखा गया, कहा—"पागल कहीं के! बालों के लिए रोता है! जैसे नाखून वैसे बाल। मैं तो समझता हूँ अच्छा हुआ, इतने वर्षों बाद सिर का बोझ उतरा। जेल से बाहर निकलेंगे तो साल-दो साल के अन्दर फिर से जटाएँ नहीं तैयार होंगी ?"

मस्तराम दिल का साफ आदमी है, हथेलियों से आँखें रगड़कर बोला, "बाबा, यह हमारे पाप का फल है कि आपकी जटाओं पर उस मलेच्छ की दृष्टि पड़ी। हम सोच भी नहीं सकते थे कि हमारे देवता का तेज-हरण होगा। आप तो हमारे लिए सब कुछ ठहरे। वैसी लम्बी जटाएँ छितराकर जब आप नहाने के बाद बरामदे में बैठा करते थे तो वह नजारा कितना अच्छा लगता था!"

"बुद्धू कहीं के!" मैंने मस्तराम से कहा, अपने आप में मुस्कुराने की कोशिश की। इसमें कामयाबी नहीं मिली।

मस्तराम की निगाहें नीचे पैरों की तरफ गड़ी थीं। लगता था, वह मेरे सूने सिर की ओर देख नहीं सकेगा। दरअसल मेरी जटाओं की सेवा ही मस्तराम का खास काम था।

मैं हसरत से अपनी घुटी खोपड़ी पर दाहिनी हथेली को फेरा करता हूँ। सोचता हूँ, सचमुच ही मेरा तेज-हरण हुआ है। साधुओं के लिए भेष ही सब कुछ है। यह कोई नहीं देखेगा कि तुम पढ़े-लिखे नहीं हो या ज्ञानी नहीं हो या तुम्हारी उम्र छोटी है। हाँ, आडम्बर की तरफ सभी का ध्यान खिंचेगा। रँगे हुए चटकदार कपड़े, लम्बी सुनहरी जटाएँ, मालाओं के मोटे दाने, पीछे चलने वाले चेला। चाँदी···इन सबका बहुत बड़ा महत्त्व है, साधुओं के जीवन में। सचमुच जटाएँ मेरे लिए जादू का घोंसला रही हैं। अब इस उदास भेष में अगर दुनिया मुझे देख ले तो कैसे विश्वास [illegible]रे ? कि मैं ही जमनिया का बाबा हूँ। किसे यकीन होगा ?

कहते हैं दो साल की सजा होगी, ठीक है, काट लेंगे सजा दो साल। चहारदीवारी के अन्दर आ ही गये हैं तो साल क्या और दो महीना ? जिन्हें बीस-बीस साल की सजा हुई है, मैंने उन्हें भी हँसते-

मुस्कुराते देखा है। मैंने मस्तराम से उस रोज कहा था—"सोच-फिकर काहे की। और, तेरा तो नाम ही मस्तराम है। बाहर भी मस्ती काटता था, जेल के अन्दर भी मस्ती काटेगा।"

बड़े जमादार की पतोहू को भूत लगता है। महीने में एक-दो बार अनाप-शनाप बकती है। परसों रात मैं अपने आसन पर देर तक आँखें मूँदे बैठा रहा। पलकें खुलीं तो क्या देखता हूँ कि बड़ा जमादार सीखचों के सहारे खड़ा है। उसके साथ एक वार्डर और था। आँख खुलते ही मुझे उसने झुककर प्रणाम किया। भावभीनी आवाज में बोला—"बाबा, हम लोगों का भाग जगा है, तभी आपके दर्शन हुए हैं, वर्ना इतने नामी सन्त यहाँ कहाँ मिलेंगे ? जिस रोज श्री-चरणों का आगमन हुआ, उसी दिन मैंने अपने लड़के से कहा था—सन्तजी जेल नहीं काटने आये हैं, हमें अपनी लीलाएँ दिखाने आये हैं। हमने यहाँ सभी से कह दिया है कि बाबा को किसी बात का कष्ट न होने पावे।"

फिर आहिस्ते-से बड़ी मूँछों वाले उस बुजुर्ग सिपाही ने अपनी पतोहू के बारे में मुझसे कहा। मैंने उसे तसल्ली दी। बोला—सब ठीक हो जायेगा, दया बनी रहे नीली छतरी वाले की।

अगली रात एक वार्डर के हाथों मैंने चिकनी मिट्टी का ढेला बड़े जमादार की पतोहू के लिए भिजवा दिया—यह कहकर कि इसमें मन्त्रों का असर डाल दिया है। परसों बराबर खोंट-खोंट कर खाती रहेगी तो मिजाज अच्छा हो जायेगा।

मस्तराम यहाँ मुझसे अलग रहता है। जानबूझ कर मैंने उसे अलग रखा है। दिल से तो हम साथ-साथ हैं ही, रात को वह हाजतियों के साथ रहता है। मैंने जेलर से कह-सुनकर अपने लिए इस जेल के अन्दर रहने का इन्तजाम करवा लिया है। साधू अगर अकेला रह सके तो दुनिया पर उसका दुहरा रोब पड़ता है। संसार कौतूहल को पसन्द करता है न ? उलटबाँसी सिर्फ शब्दों में ही नहीं, अमल में भी कहीं दिखलाई पड़े तो लोगों को अपनी ओर खींचती है। घर-गिरस्ती के पचास झमेले होते हैं। उन झमेलों से ऊबा हुआ प्राणी अपने से अलग ढंग की जिन्दगी को देखकर खुश होता है। उसे लगता है, उसी की खोई पड़ी लालसाएँ सामने

वाले विचित्र व्यक्ति के अन्दर बदुर आई हैं।

जमनिया की उस जिन्दगी से मैं भी तो ऊब चुका था। अक्सर तबीयत बगावत की ओर मचलती थी। मन करता था कि भागकर किसी अनचीन्ही दुनिया में चला जाऊँ, मगर जमनिया में मुझे इस कदर जकड़ रखा गया कि छुटकारा पाना सपना था। मस्तराम, लालता प्रसाद, भगवती, रामजनम, सुखदेव वगैरह मुझे भोगने थोड़े देंगे।

मस्तराम की बेहूदगी के चलते ही मेरी यह गति बनी है। हमेशा इन लोगों को समझाता रहा हूँ—"अरे बाबा, जोर से मत मारा करो, आशीर्वादी के तौर पर यह जो एक-एक की पीठ पर पाँच-पाँच बार बेंत फटकारते हो; इसमें जोश दिखाने की जरूरत नहीं है। हल्के से पीठों को छू-भर दो। बेंत से पाँच बार पीठ छू दोगे तो जनता उसको दुआ मानेगी। मगर मेरी यह सलाह कभी इनके दिमाग में नहीं घुसी। हाँ, आशीर्वाद के लिए अगर कोई बड़ा आदमी सामने होता तो उसको बेंतों की हल्की छुवन का ही प्रसाद मिलता था। जाहिल-जपाट आदमी की पीठ पर बेंत जोर से पड़ती थी।

मुझे कई बार बतलाया गया कि पब्लिक आशीर्वाद की पिटाई को पसन्द करती है, वह आग्रह करती है कि पीठ पर बेंत जरा जमकर पड़े और बाबा का आशीर्वाद फले। औरतें हठ करती थीं कि उन्हें जोर से पीटा जाए। मुसहर जाति की एक जवान औरत एक बार अड़ के बैठ गयी कि मस्तराम कम से कम पच्चीस बार उसकी पीठ पर बेंत फटकारे। मस्तराम ने उसकी पीठ पर, चूतड़ों पर और जाँघों पर जमकर बेंत फटकारी। नीले-नीले निशान उभर आये, चमड़ी छिल गयी। उन हल्के घावों से पनीला खून छलछला आया तो साँवले रंग का वह गदराया बदन रबड़ के पेड़ की तरह दिखाई देने लगा। औरतिया बड़ी खुश थी और जमनिया के हमारे उस दरबार में पाँच रोज रही। अगले वर्ष गोद में बच्चा लेकर मेरे पैर छूने आयी।

भगौती, लालता इस पिटाई के गुन गाते नहीं थकते। अच्छी-अच्छी ...त वाले भले आदमी जमनिया के हमारे दरबार में आते हैं और झुकाकर मस्तराम के सामने तब तक खड़े रहते हैं जब तक वह

उन्हें पाँच बार बेंत से छू नहीं देता ।

मल्लराम को लोग कालभैरव का अवतार कहते हैं । मैं उनके लिए शंकर का अवतार हूं ।

और आज, शंकर और कालभैरव दोनों जेल की हवा खा रहे हैं । बड़े जमादार ने ठीक ही कहा था —हम जेल के अन्दर सजा काटने थोड़े आये हैं हम तो अपनी लीला दिखाने आये हैं । लीलाएँ देखने के सैकड़ों उम्मीदवार यहाँ जेल के अन्दर भी मौजूद हैं । ये अधिकारियों में भी हैं, सिपाहियों में भी हैं, कैदियों में भी हैं । इसका सबूत मुझे परसों मिला । कटोरा-भर खीर मेरे सामने आयी तो मैं दंग रह गया, ऊपर-ऊपर मलाई तैर रही थी और पिस्ते झाँक रहे थे । निगाहों के इशारे से मैंने पूछा तो जेल का कैदी रसोइया बोला— "खास जेलर का हुकुम था, आज कार्तिक की पूरनमासी थी न, बड़े जमादार भगत जीव ठहरे, बाबा, आप जो चाहेंगे, सब कुछ मिलेगा ।"

सत्ताईस साल पहले भी आठ-दस रोज के लिए यह शरीर हवालात के अन्दर बन्द रहा था । तीन साधू पकड़े गये थे बिना टिकट के । एक की झोली में से आधा पाव गाँजा निकला, उसे पूरा महीना जेल के अन्दर रहना पड़ा ।

उन दिनों हम नौजवान थे । दुनिया देखने की उमंग हमें घर से बाहर खींच लाई थी । एक और बात थी जिसके चलते मुझे साधू का बाना लेना पड़ा । एक छोकरी के तीन दीवाने थे मेरे गाँव में । एक ने दूसरे का कत्ल करवा दिया तो तीसरा भी भाग निकला और जटाएँ बढ़ा ली । फिर तो हिन्दुओं ने उस नौजवान साधू को इस तरह अपना लिया कि मेरा रोआँ-रोआँ उनके एहसान में जिन्दगी-भर डूबा रहेगा । मेरी यह पक्की राय है कि हिन्दुओ-जैसी लचकीली तबीयत और किसी जाति को नसीब न हुई । नेक, रहमदिल, सहनशील, समझदार हिन्दू-समाज बरगद का वह बूढ़ा समाटदार पेड़ है जिसकी टहनियों से हजारों चमगादड़ लटके रहते हैं, जिसकी छाया में हाथी और ऊँट और बैल साथ-साथ जुगाली करते हैं । कुत्ते, गधे, कछुए, सबकी गुंजाइश रहती है । उनसे अलग न रहो, उनमें घुलमिल कर रहो, फिर देखो कि कैसे तुम पर सर्वस निव-

इसमे मुझे सफलता कहाँ मिलती है ? लगता है, वह सब सचमुच ही उन जटाओ का खेल था। यहाँ फिर से अगर जटाएँ बढ़ाने की इजाजत मिली तो दिखला दूँगा। मगर यह सब यहाँ नहीं चलेगा। जेलर तो खैर हिन्दू है, सुपरिन्टेन्डेन्ट ईसाई है। उसके अन्दर साधुओ के बारे में जरा भी दिलचस्पी नही होगी। नहीं, जेल के हाकिम इजाजत दे ही देंगे, फिर भी मैं बाल नही बढ़वाऊँगा। जटाएँ तैयार हो और फिर से उन पर कैंचियो की मार पड़े ! नही, ऐसा नही होने दूँगा।

अवधूतिन को बड़ी तकलीफ है। कल उसे बुखार आ गया था। बड़े जमादार से कहलवा दिया था। डाक्टर ने दो टेबलेट दी थी। सुना, आज बुखार नही था।

इस बेचारी को नाहक ही गिरफ्तार किया गया। इसने कौन-सा कसूर किया था। भगौती प्रसाद इस कोशिश में है कि अवधूतिन को जमानत पर छुड़वा लिया जाये। आज तक जमानतदार नहीं मिल सका, दो-चार रोज के अन्दर कोई न कोई जमानतदार मिल ही जायेगा।

इमरतीदास बुरा नाम है ? नहीं, कौन इस नाम को बुरा कहेगा ? माई थी इमरतीदास जी महाराज। अवधूतिन को जमनिया के दरबार मे लोग इसी नाम से याद करते है। हमने यह नाम दिया तो वह खुद भी बेहद खुश हुई थी। बात थी भी खुश होने की। उसका फिर से जनम हुआ था। उद्धार तो बहुत छोटा शब्द हुआ।

कितनी उम्र होगी इमरितिया की ? होगी यही कोई तीस-बत्तीस की। तन्दुरुस्ती अच्छी है, लगती नही है तीस-बत्तीस की। पच्चीस-छब्बीस की लगती है। खुराक अच्छी मिले और बाल-बच्चो का झमेला न रहे तो औरतो की उमर अक्सर कम दिखाई देती है। इमरितिया पर कई लोगो की निगाह गड़ी है। देखें किसके नसीब मे जाती है ! मैं नही रोकूँगा। न, मुझको रत्ती-भर भी ललक नही है इमरितिया के लिए। वो वह रहना चाहे तो जमनिया का मठ हमेशा उसे रखने के लिए तैयार रहेगा।

जमनिया क्या था ? कुछ तो नहीं था। नारायणी नदी के किनारे छोटा-सा गाँव था। बिहार और उत्तर प्रदेश की सीमाएँ नजदीक पड़ती हैं। रेलवे का स्टेशन होने से जमनिया बाहरी दुनिया से जुड़ गया है।

छावर करते हैं। घूमने-मिलने का आसान तरीका है साधू बनकर उनके बीच रहना। बाल बढ़ाने में तो धेला भी खर्च नहीं पड़ता है। मगर सत्ताइस साल पहले मेरी जटाएँ नहीं थी, न इतना नाम ही फैला था। इन दिनों तो इर्द-गिर्द के इलाकों में पचास कोस तक जमनिया के बाबा की सिद्धई की बातें फैली हुई हैं। जेल के अधिकारियों को यकीन ही नहीं आता होगा कि मैं किसी जुर्म में गिरफ्तार हुआ हूँ। उनका दिल कहता होगा, बाबा को लोगों ने फँसा दिया है।

बाबा को लोगों ने नहीं फँसाया, मस्तराम की बेहूदगी ने फँसा दिया। सीधा-सादा, एक बौड़म साधू के लिबास में उस रोज हमारे सामने जाने कहाँ से आ गया। मस्तराम पर सनक सवार हो गई, उसने साधू की पीठ को बेंत की फटकारों से भुरता बना दिया। वह था भी जिद्दी, मस्तराम की बात आखिर तक नहीं मानी उसने। जमनिया के बाबा को उसने मत्था नहीं टेका···

बेहोश हो गया तो बेंत रुक गया और मस्तराम ने गाली दी, "साले का दिमाग क्रेक है! बाप रे, इत्ती पिटाई के बाद तो पत्थर भी बिछ जायेगा!" मैंने मस्तराम की बाँह पकड़कर उसे खींचा। मुँह के अन्दर मगही पान की गिलोरियाँ दबी पड़ी थी। भौंहें नचाकर मैंने इशारा किया—"उठो यहाँ से, इस पगलवा को यहीं छोड़ दो!"

हम उठकर अन्दर वाली कुटिया की ओर आये। थोड़ी देर बाद पता चला कि वह साधू कहीं चला गया है।

चार रोज बाद मालूम हुआ कि वह सीधे अदालत के हाकिम के सामने पहुँच गया·· तभी तो हफ्ता पूरा होते-होते गिरफ्तार हो गये।

गिरफ्तारी के बाद, दस दिनों के अन्दर कितना बड़ा फ़र्क आ गया, मैं कैसा दीखता हूँ। यहाँ शीशे में मुँह देखने की सहूलियत नहीं है। पानी पीते वक्त कमण्डल के अन्दर निगाहें अपने आप पड़ जाती है तो डर लगता है। कितना उदास हो गया है चेहरा! लगता है, अरसे से बीमार हूँ, लगता है, वह सहज सलोना मुखमण्डल अपना ओज खो बैठा है! लगता ...ख पीली हो गई हैं और होंठ सूख गये हैं! मेरी कोशिश रहती है ...-मुस्कुरा कर चेहरे की रौनक को जैसे-तैसे बनाये रखूँ, लेकिन

इसमे मुझे सफलता कहाँ मिलती है ? लगता है, वह सब सचमुच ही इन जटाओं का खेल था। यहाँ फिर से अगर जटाएँ बढ़ाने की इजाजत मिली तो दिखला दूँगा। मगर यह सब यहाँ नहीं चलेगा। जेलर तो खैर हिन्दू है, सुपरिन्टेन्डेन्ट ईसाई है। उसके अन्दर साधुओं के बारे मे जरा भी दिलचस्पी नही होगी। नही, जेल के हाकिम इजाजत दे ही देंगे, फिर भी मैं बाल नही बढ़वाऊँगा। जटाएँ तैयार हो और फिर से उन पर कैंचियो की मार पड़े ! नही, ऐसा नहीं होने दूँगा।

अवधूतिन को बड़ी तकलीफ है। कल उसे बुखार आ गया था। बड़े जमादार से कहलवा दिया था। डाक्टर ने दो टेबलेट दी थी। सुना, आज बुखार नही था।

इस बेचारी को नाहक ही गिरफ्तार किया गया। इसने कौन-सा कसूर किया था। भगौती प्रसाद इस कोशिश मे है कि अवधूतिन को जमानत पर छुड़वा लिया जाये। आज तक जमानतदार नहीं मिल सका, दो-चार रोज के अन्दर कोई न कोई जमानतदार मिल ही जायेगा।

इमरतीदास बुरा नाम है ? नहीं, कौन इस नाम को बुरा कहेगा ? भाई श्री इमरतीदास जी महाराज। अवधूतिन को जमनिया के दरबार मे लोग इसी नाम से याद करते है। हमने यह नाम दिया तो वह खुद भी बेहद खुश हुई थी। बात थी भी खुश होने की। उसका फिर से जनम हुआ था। उद्धार तो बहुत छोटा शब्द हुआ।

कितनी उम्र होगी इमरतिया की ? होगी यही कोई तीस-बत्तीस की। तन्दुरुस्ती अच्छी है, लगती नही है तीस-बत्तीस की। पच्चीस-छब्बीस की लगती है। खुराक अच्छी मिले और बाल-बच्चो का झमेला न रहे तो औरतों की उमर अक्सर कम दिखाई देती है। इमरतिया पर कई लोगों की निगाह गड़ी है। देखें किसके नसीब मे जाती है ! मैं नही रोकूँगा। न, मुझको रत्ती-भर भी ललक नहीं है इमरतिया के लिए। यों वह रहना चाहे तो जमनिया का मठ हमेशा उसे रखने के लिए तैयार रहेगा।

जमनिया क्या था ? कुछ तो नहीं था। नारायणी नदी के किनारे छोटा-सा गाँव था। बिहार और उत्तर प्रदेश की सीमाएँ नजदीक पड़ती हैं। रेलवे का स्टेशन होने से जमनिया बाहरी दुनिया से जुड़ गया है।

चीनी का कारखाना क्या खुला, हिन्दुस्तान के उद्योग-धन्धों में इसे जगह मिल गई। आसपास नदी के इधर-उधर पचासो मील तक दोनो प्रदेशों के पिछड़े हुए इलाके फैले पड़े हैं। नेपाल काफी नजदीक है। तराई के अंचल, तलहटी वाली पहाड़ियाँ, पतले-घने जंगल, तेज बहाव वाली पहाड़ी नदियाँ, बीच-बीच मे फसलो के लायक खेत, खपरैल और फूस के छोटे-छोटे घर। चरती हुई गायो और भैंसो के गले की टुनटुनाती घटियाँ। बाघ और सुअर के पैरो की छाप। मगर की सड़ी हुई खाल। बाढ मे बहकर आये हुए साखू के मोटे लट्ठे। इस तरह पचीसों और भी बातें होंगी जिनका जमनिया से निकट का सम्बन्ध है।

मैंने बहुत सोच-समझ कर जमनिया को अपना अड्डा बनाया। पहली बात तो यह थी कि मुझे पिछड़ी जातियो से विशेष प्रेम है। साधुओं का जितना आदर वे करती हैं, उतना और कोई नही करता। ऊँची जातियों के बड़े लोग मूर्ख साधुओं का मखौल उड़ाते हैं। भेष और रग के पीछे वे ज्ञान की परख करते हैं। पक्की भाषा मे बड़ी-बड़ी बातें करने वाला साधु ही उन्हे प्रभावित कर सकता है। हमारे जैसों के लिए अनपढ़ भगत ही काम का साबित होता है। जमनिया के इर्द-गिर्द लाखो की तादाद मे गरीब और अनपढ़ लोग फैले है।

दूसरा लाभ था नेपाल का नजदीक होना। शासन की तीसरी आँख से बचने के लिए न जाने कितनी बार नेपाल भाग-भाग कर गया हूँ। जमनिया की तीसरी खूबी मेरे लिए यह थी कि पुलिस का अड्डा पश्चिम की तरफ 45 मील दूर था और पूरब तरफ नदी के उस पार 12 मील पर। चौथी बात वहाँ यह देखी कि आस-पास कहीं पर स्कूल-कालेज नही थे। न किसी के हाथ मे कभी कोई अखबार ही देखा और न किताब ही देखी। और, सबसे बड़ी बात यह थी कि नेता लोग पाँच साल बाद ही दिखाई पड़ते थे। पार्टियों के झण्डे एलेक्शन के ही समय मे नजर आते थे।

लोग कहते है कि गरीबो के पास पैसे नही होते। मैं नही मानता हूँ। सावन, कातिक, फागुन और वैशाख के महीने हमारे लिए जम- आमदनी के महीने है। ठीक है, रुपये-दो रुपये के नोट नही

चढते, लेकिन रेजगारियों का ढेर लग जाता है। एक पैसा, दो पैसा, पाँच पैसा, दस पैसा—सिक्के ही सिक्के नजर आते हैं। चढावे के तौर पर मठ को बीस एक बोरियाँ रेजगारी मिल जाती हैं। श्रद्धा की इस खेती को तैयार करने के लिए शुरू-शुरू में हमें बड़ी मेहनत करनी पड़ी। बहुत सारी तरकीबें भिड़ानी पड़ी। कई नाटक खेलने पड़े…

"कहो बाबा, का हाल-चाल बा"— सिपाही रामसुफल सुकुल ने मूँछें टोकते हुए बाहर से पूछा तो मैं कहता हूँ—"ठीक है सुकुल ! क्या टाइम हुआ है ?"

"एगारह।"

मैं कम्बल पर से उठ बैठा हूँ—"ग्यारह बज गये ?"

"जी, बाबा जी महराज।"

मैं सोच ही रहा था कि और क्या बातें की जायें। सिपाही जेल के सींखचों से सटकर खड़ा हो गया है। कुछ रुककर उसने कहा है—"बाबा, आप हमारा एक ठो काम कर दीजिए। यह देखिए क्या है…।"

उसने गणेश की एक छोटी-सी प्रतिमा आगे बढ़ाई। मैं उठकर आगे बढ़ा। सिपाही के हाथ से गणेश की मूर्ति लेकर उसे गौर से देखता हूँ। बार-बार उलटता-पलटता हूँ गणेश को।

सुकुल बेचैनी से इन्तजार कर रहा है। उसकी निगाहें मेरे चेहरे पर गड़ी हैं, बूटों वाले कदम अडिग हैं। झालरदार पगड़ी की परछाईं सींखचों में से होकर जेल के अन्दर आ रही है। भारी-भरकम कोट बदन पर पड़ा है। लट्ठ सेल से बाहर दीवार से टिका है।

मैंने कहा— "यह प्रतिमा पूना की बनी है। बहुत पुरानी है।"

सिपाही फुसफुसा कर पूछ रहा है—"सोने की तो नहीं है ? हमारी नानी का विश्वास था कि गणेश जी की इतनी अच्छी प्रतिमा सोने की ही हो सकती है। शायद, होगी…"

सिपाही ने आशा और भय से मेरी ओर देखा। मुझे अन्दर ही अन्दर हँसी आ रही है। यों मैं उस अबोध सिपाही पर तरस ही खा रहा हूँ।

मैंने गम्भीर होकर कहा—"गणेश जी का समूचा बदन ठोस पीतल का है। मामूली पीतल नहीं। बेहतरीन किस्म के पीतल की गजानन-

लम्बोदर की प्रतिमा पूने के कारीगर ने ढाली थी। पचास साल पहले कारीगर ज्यादा मेहनती और ईमानदार होते थे···"

उस मूर्ति को दाहिनी हथेली पर जमाकर बायाँ हाथ उसकी सूंड़ पर फेरता रहा। एकाएक मेरी आँखो मे चमक भर आयी। मैं सिपाही की ओर देखने लगा हूँ। आहिस्ते-से बोला—"इसको मैं सोने मे बदल सकता था, लेकिन यहाँ जेल के अन्दर क्या होगा।"

सिपाही रामसुभग सुकुल ने झुककर सीखचों मे से अपना हाथ अन्दर बढाया, मेरे पैरो को छूने की कोशिश की। कातर दृष्टि से मेरी ओर देखा और गिड़गिड़ाया—"बाबा जिनगी भर राऊर गुलाम होके रहब, कवनो तरकीब भिड़ावल जाय, गरीब के उद्धार हो जाई।"

मुझे हंसी आ गई। अपने पैरों को मैंने पीछे हटा लिया। कहने लगा—"देखो घबराने से कुछ नही होगा। मन को बाँधो। सब्र से काम लो। परमात्मा तुम्हारा मनोरथ पूरा करेगा। मैं जब जेल से रिहा होकर बाहर जाऊँगा तो मुझसे मिलना।"

उस मूर्ख का गिड़गिड़ाना कम नही हुआ। मुझे उस पर हँसी भी आ रही है और दया भी। इतना तय है कि अगर उल्टी-सीधी कोई बात न बता दूं तो सुकुल रोज परेशान करेगा। आखिर मैंने कहा—"देखो, पीतल के इस गणेश को सोने का गणेश बनाना बिलकुल असम्भव है। कोई भी यह काम नही कर सकता। हिमालय मे जमनिया से ठीक पचास कोस उत्तर एक बहुत बडी बर्फानी चोटी है। उसी से नारायणी नदी निकली है। मुक्तिनाथ महादेव वही हैं। उधर पहुँचना आसान नहीं है। मेरे गुरु महराज वही पहाड़ की खोह मे रहते हैं। उनकी उम्र दो सौ पचास वर्ष से कम की नही होगी। सिर के बाल और दाढ़ी-मूंछ सब कुछ सुनहरे हैं। दाँतो की पाँत ऐसी लगती है मानो मकई के दाने दो मसूढ़ों मे जमे हों। भौंहे सुनहली। शरीर का रंग चम्पे की पंखुड़ी की याद दिलाता है। एक बार ऐसा हुआ कि जाड़े की सुबह मे हम गुरु जी महाराज की टहल मे मशगूल थे। इतने में भोटिया डाकुओं का सरदार आ पहुँचा। अपना घोड़ा उसने अलग ही बाँध दिया। गुरु जी के सामने आकर धरती पर मत्था टेक गया। हमारे से गुरु जी ने बैठने को कहा और वह पालथी मारकर बैठ-

गया। थोड़ी देर बाद मैंने उसे चाय लाकर दी, नमकीन भोटिया चाय। चाय पीकर डाकू सरदार ने इसी तरह पीतल की एक प्रतिमा निकाली और उसे गुरुजी के सामने रख दी। गुरुजी ने कहा—छोड़ जाओ, दो रोज बाद आकर ले जाना। सरदार चला गया। दो रोज बाद वापस आया। उसकी देवी की प्रतिमा सोने की हो गई थी। अपनी तारादेवी को उस रूप में पाकर भोटिया सरदार नाचने लगा—

"जी सरकार, जरूर नाचने लगा होगा, मेरा तो सुनकर ही नाचने का जी करता है। बाबा, आपके गुरु महाराज ने जब उस पीतल वाली प्रतिमा को सोना बनाया तब आप वहीं रहे न ?"

सिपाही बेचैन नजर आता था। उसे पीतल को सोना बनाने की विधि कम से कम सुन तो लेनी है। मैंने कहा—"रात-दिन गुरु महराज की टहल-सेवा में रहना होता था। वह मुझसे कुछ छिपाते थोड़े थे ? भादों की अमावस के अँधेरे में नदी-किनारे अगर काला बारहसिंगा लीद करे और उस लीद को पूरनमासी के दिन धूप में सुखा लिया जाय और उसी लीद की आग में इस पीतल वाले गणेश को डाल दो तो यह सोने का हो जाये।"

सुकुल ने सिर हिलाकर हामी भरी और बोला—"मगर यह काम तो महाराज, सबसे नहीं होगा। कहाँ काला बारहसिंगा, कहाँ उसकी सूखी लीद ?"

मैं इस पर खिलखिलाकर हँसा हूँ। सुकुल अपनी लाठी सँभालकर आगे बढ़ा। कहता गया—"ई सब काम आप लोग कर सकते हैं। रिहाई के बाद इस दास को याद रखिएगा—"

"जरूर ! भगवान तुम्हारा भला करे।" मैंने पीछे से कहा।

जाड़े का मौसम आ गया है। मेरे लिए भगौती ने दो कम्बल बाहर से भिजवा दिए हैं। ऊनी अलफी भी आ गई है। काले रंग की यह अलफी शिवनगर की रानी साहिबा ने पिछले साल बनवा दी थी। हिरन की खाल के जूते भी आ गये हैं। पीतल का वह चमकदार कमण्डल भी आ है। हाथी-दाँत के मनकों की माला भी आई है। मृगछाला भी पहुँच गयी है। बाघम्बर के लिए जेलर साहब से आडर नहीं मिला है।

इधर कुछ वर्षों मे दिन मे खाने के बाद सोने की आदत पड़ गई है। आज भी सोया हूँ। जाड़े की लम्बी रात सोकर बिताना साधुओं के हक मे नही है। किताबों से मेरी नफरत नई नही, काफी पुरानी है। हाँ, चार जने बैठकर सारी-सारी रात ताश खेलते रहें और मैं अलग बैठा रहने पर भी एक ओर झुककर उनमें से किसी का साथ दूँ, यह मुझे अच्छा लगता है। यहाँ जेल के अन्दर भी मैं ताश की चौकड़ी जमा सकता हूँ, मगर इसमे अपना नुकसान रहेगा। इससे आम कैदियो की श्रद्धा-भक्ति मे कमी आयेगी। लोग कहने लगेंगे—वह देखो, जमनिया के बाबा चोरो और डकैतो के साथ बैठकर ताश खेल रहे है। बाबा है तो क्या हुआ, मिजाज के बड़े रँगीले है—

मैं जो हूँ, सो हूँ। अपने दिल की दुनिया का नाटक औरो को क्यों देखने दूँ। बाहर-बाहर से सिद्धई का जितना स्वाँग बनाए रहूँगा, उतना ही अधिक लाभ पहुँचेगा अपने को।

रविवार को सबेरे नौ बजे बडा साहब अपने दल-बल के साथ अन्दर आता है, घूम-घूम कर जेल का कोना-कोना विजिट करता है। मैं कल ऐसा नाटक लगाऊँगा कि साहब की अकल गुम हो जाएगी। ईसाई है न ! ईसाईयों का दिल बंजर-वीरान की तरह चटियल होता है, उनके अन्दर दूसरे धर्मों के लिए श्रद्धा का अकुर पैदा करना मुश्किल है। कुछ हो, मान तो जाएगा ही। जरा भी रौब पड़ जाय तो काफी होगा।

चीनी के कारखाने मे लाल झण्डा वालों ने हड़ताल कर दी है। पचास-पचपन मजदूर पकडे गए हैं। पिछली रात बडी देर तक नारे लगते रहे। जेलर से लेकर लेबर मिनिस्टर तक को मुर्दा बनाया जाता रहा। नौजवानो के गलो मे जोर बहुत था, जेलर को आखिर झुकना पडा। हड़ताली हवालातियो की माँग जेलर को मंजूर करनी पडी। जमात में बडी ताकत होती है न ? और कही उस ताकत के पीछे पढ़े-लिखे समझदार लोगो की सूझ-बूझ भी हुई तो फिर क्या कहना !

जमनिया की फैक्ट्री के मजदूरो ने दो साल पहले भी हड़ताल की थी। लेकिन, वहाँ लाल झण्डा नही था, तिरंगा था। दो रोज बाद ही [illegible] हो गया था। उसमे किसी को जेल नही जाना पडा। लाल

झण्डा वाले जिद्दी होते है। झण्डा उठा लेंगे तो परेशान कर देंगे, मिल वालो की नाक का पानी निकाल देंगे।

हमारे यहाँ उस रोज जो साधू आया था, उसके साथ दो वालण्टियर देखे गए थे, लाल झण्डा वाले। मठ के अन्दर तो साधू अकेले ही आया था। जरूर हमे फँसाने मे लाल झण्डा वालो का हाथ है। तिरगा वाले तो मठ वालो को मिलाकर ही चलते हैं। उन्हे मदद मिलती है मठ से।

अब मै सो जाऊँगा। बारह बार घड़ियाल को ठोककर सदर फाटक वाला सिपाही शायद फिर स्टूल पर बैठ गया है फाटक के मोटे सीखचो से पीठ टिकाकर।

सबेरे जेलर साहब ने कस्तूरी भेजी थी। उनकी माँ पिछली यात्रा मे केदार और बद्री की यात्रा कर आई है। चमोली बाजार मे एक तिब्बती सौदागर मिला था, उसी से माताजी ने कस्तूरी ली थी। ठीक इसी किस्म की बढ़िया कस्तूरी शिवनगर की रानी साहिबा ने भेजी थी। एक बार कस्तूरी को मैने सँभाल कर रख लिया है, बड़ा नगर वाले जज साहब को भिजवा दूँगा।

नाटक वाला स्वाँग खूब सफल रहा। दोनो पुतलियो को मैने ऊपर चढ़ा दिया था। पद्मासन लगाकर बैठा रहा। पीठ की हड्डी सीधी कर ली थी। साँसो को देर तक साधे रहा। प्राणायाम की पूरक, कुम्भक और रेचक विधियो का अभ्यास बर्षो तक किया था। वह काम आया। इसी बीच सुपरिण्टेण्डेण्ट की बारात जेल का पूरा चक्कर लगा गई।

बड़ा जमादार खुद आकर हमे बतला गया—"साहब आप पर बड़े खुश थे। कह रहे थे, किसी ने बेचारे साधू को फँसा दिया है।"

चलो, अच्छा हुआ। बड़े साहब ने बेकसूर मान लिया। अब चाहे कितना भी अरसा जेल के अन्दर गुजारना पड़े, तकलीफ नही होगी। तबीयत मस्त रहे तो ऊपरी हमले यो भी कहाँ असरते है। जैसे फलो और फूलो की बागवानी सीखनी होती है, इसी तरह मन को प्रसन्न रखने का भी ढग सीखना होता है। आम आदमी बाहरी तकलीफो को झेलता जाय, उन्हे हटाने का उपाय न करे, चाहे जैसी स्थिति मे खुश नजर आए, शिकवा-शिकायत न करे तो दुनिया उसे बेहया कहेगी। लेकिन, हम बेहया

नही कहलायेंगे। हमारे लिए यह सब खूबी ही खूबी मानी जाएगी। दर-असल इन्ही खूबियो के चलते मैंने अपने सबसे प्यारे शिष्य को मस्तराम कहना शुरू किया। मुझे अक्सर रामकृष्ण परमहस की कहानियाँ सुनाई गई हैं। उनकी लीलाओं के बारे मे हमे काफी कुछ मालूम है। मैंने मस्त-राम के अन्दर भी कुछ वैसे ही गुण पाए हैं। कोई कष्ट उसे झुका नही सकता। कोई घटास मस्तराम के दिल को फाड नही सकती। आगे चल कर कही कोई रानी मिल गई तो हमारा मस्तराम भी अच्छा-खासा परमहस निकल जाएगा।

आज न मिल सका, कल तो मस्तराम से जरूर मिलूँगा। अब कुछ ऐसा रंग जमाना है कि बाहर से कोई चीज न मँगवानी पडे। यही जेल के अन्दर ही सारे पदारथ सुलभ हो जाएँगे। नीम की इन्ही डालो से मिसरी के डले बरसने लगेंगे। अगस्त्य मुनि की मरजी हुई तो विन्ध्याचल झुक गया। मेरी मरजी होगी तो ऊँची दीवारो का परकोटा नही झुक जाएगा ? मैं तो यही देख रहा हूँ कि इस जेल की दुनिया बाहर वाली दुनिया से मिली हुई है। यह दीवारें नही हैं, हिलते हुए ढीले-ढाले परदे हैं। कितनी आसानी से बाहर की झाँकी मिलती है ! कितनी सफाई से बाहर के माल अन्दर टपा लिये जाते है। जेल के अन्दर जितने भी प्राणी हैं, मैं सभी को भंडारा दूँगा। मैं इतना भारी भोज दूँगा कि जेल के अधि-कारी दाँतों तले उँगली दबाएँगे। मस्तराम उदास रहता है। भोज भण्डारा होगा तो उसकी कर्मशक्ति मुखर होगी। वह आदमी थोड़े है, पूरा पिशाच है। जितना ज्यादा लादोगे, उतना मस्त रहेगा। जितना हुलकाओगे, उतना ही झपट्टा मारेगा। इस मस्तराम से कोई काम न लिया गया तो बेचारा मिट्टी हो जाएगा। लेकिन, काम इससे दूसरा कोई नही ले सकता। मैं ही ले सकता हूँ काम मस्तराम से। जेल के सिपाही इससे कुछ नही करवा सकते। अभी उस दिन मैंने मस्तराम से कहा—"सजा हो जाय तो हम लोग भी दूसरे कैदियो की तरह सरकार बहादुर का कुछ काम कर दिया करेंगे। बाहर जेल की अपनी बगीची है, तुम चाहोगे तो वहाँ भी काम मिल जाएगा।"

इस पर मस्तराम के लिलार मे बल पड गए, गर्दन की नसें फूल

उठी। जमी हुई आवाज में उसने कहा—"इनको ऐसी-तैसी! हम दामाद बनकर रहेंगे और इनके सीने पर सिल रगडा करेंगे। काम कौन लेगा हमसे? किसकी मजाल है महाराज? हम जाएँगे जेल की बगीची में फावडा चलाने?" और जब शरारत-भरी आँखों से मैंने उसकी ओर देखा तो मेरी मुस्कान दबाए नहीं दबी। मेरे मुँह से निकला—"अरे, बडी अच्छी बगीची है। बीच में पुराना कुआँ है। उसका पानी अमृत को मात करता है।" मस्तराम ने मेरे मन की बात भाँप ली और हुलसकर बोला—"भंग-बूटी छनेगी, चलेंगे बाहर बगीची में करेंगे काम सरकार बहादुर का!"

मस्तराम से ही इमरती का हाल मालूम करता रहता हूँ। सुकुल से भी जनाना वार्ड की एक-आध खबर मिल जाती है। देखें, कब तक जमानतदार मिलता है!...जनाना वार्ड में कुल मिलाकर सात-आठ केबिनें हैं। एक पगली है, वह औरों पर दाँत चलाती है। उसे सेल के अन्दर बन्द रखा गया है...इमरतिया उसकी निगाहों पर न चढ जाए' 'अन्देशा बना रहता है!

घबराती तो जरूर होगी। अन्दर ही अन्दर मुझे गालियाँ भी दे रही होगी। औरतें जरा-जरा-सी बातों से परेशान हो उठती हैं। इसमें औरतों का कोई कसूर नहीं है। कुप्पी इतना तो दिल होता है बेचारियों का। और सच पूछो तो औरतों का यों घबरा उठना मर्दों को बडा अच्छा लगता है। घबराएँ नहीं, झिझकें नहीं, सकुचायें नहीं, डर के मारे पसीना-पसीना न हो जाएँ तो फिर औरत ही क्या? उनकी इन्हीं खूबियों पर कवि और शायर फिदा रहे हैं। इन्हीं खूबियों पर पोथा पर पोथा रचा गया। कहते हैं सिकन्दर, औरंगजेब, नादिरशाह, हिटलर और स्तालिन औरतों से कतराते थे। कहते हैं, औरतों के नखरे पहाड को बिछा देते हैं, फौलाद को गला डालते हैं। मैं उनसे बचता रहा हूँ। आगे की राम जाने।

इमरतिया क्या हमेशा जमनिया मठ में रहेगी? लक्ष्मी नहीं रही। गौरी चली गई। तो फिर इमरतिया ही क्यों रहेगी?

इमरतिया जाएगी तो जलेबिया नहीं आ जाएगी? एक-आध साधु-

आइन न रहे तो मठ उदास लगता है ! भगतो की तबीयत उचटी-उचटी-सी रहती है। कहते हैं, दफ्तरों में इन दिनों औरतें काम करने लगी हैं। औरतों के बिना संसार चलेगा ?

साहब चाहे छोटा हो या बड़ा, तेज-तर्रार खूबसूरत छोकरी बगल के कमरे से निकलकर सामने आकर खड़ी हो जाती होगी तो अच्छा नहीं लगता होगा ? स्त्रियों को नरक का द्वार कहा गया है। लगता है, किसी अभागे ने खीझकर यह बात कही होगी; वर्ना पुरुष और स्त्री एक-दूसरे से कब तक भागते फिरेंगे। सावन का आसमान बादलों से घना हो उठता है, मगर वहाँ भी जाने किस काँत से कैसे बिजली कौंध जाती है !

आज शाम को एक पुरजी और दो रुपये का नोट मेहतर को दिया। सुकुल से बात हो चुकी थी। मेहतर जी के हाथों इमरितिया तक कोई भी छोटी-मोटी चीज आसानी से पहुँचाई जा सकती है। पुरजी में मैंने इतना-भर लिखा कि घबराना नहीं, आठ-दस रोज के अन्दर ही तू' छुटकारा पा जाएगी···।

इमरितिया लिखना जानती है। किसी दूसरे से लिखवाने की सहूलियत नहीं होगी। बहरहाल चिट्ठी-चपाती से क्या फरक पड़ता है? मतलब की बात मेहतरनी मालूम करती ही रहेगी और मुझे पता चलता रहेगा। सोचता हूँ अगहन की पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण भगवान की पूजा करवा दूँ। बड़ा जमादार, सुकुल, जेलर सभी को यह प्रस्ताव पसन्द आएगा। पुराने और मुखिया टाइप के जितने भी कैदी है, सभी इस प्रोग्राम को सफल बनाने के लिए जी-तोड़ मेहनत करेंगे।

भगौती दिन-रात कोशिश में लगे है कि बाबा को बी-डिवीजन वाले कैदियों की तरह आराम से रखे सरकार बहादुर। लेकिन सरकार बहादुर ध्यान नहीं दे रही है बाबा की तरफ। लगता है, पारसी हाकिम ने सरकार बहादुर को मना कर दिया है। मुझ पर उसकी कितनी नाराजी है, यह तो इसी से मालूम हो गया कि हवालात के अन्दर पहुँचते ही मेरी जटाएँ उतर गईं···हाय राम, किसी ने भी जुबान नहीं हिलाई; कोई तो कहता कि साधू-महात्मा की जटाओ को तहस-नहस करवा रहे हो, तुम हाकिम , शैतान हो ? क्या हो आखिर ? हाय राम, कोई कुछ नहीं बोला !

सभी टुकुर-टुकुर ताकते रह गए और जेलर ने उसके हुक्म की तामील करवा ली। हजाम तैयार नहीं था, लेकिन दरोगा के डर से उसे अपनी कैंची निकालनी पड़ी।

नेपाल में किसी साधू के साथ ऐसी जोर-जबर्दस्ती होती तो लोग खून बहा देते। साधु-सन्यासी साँड की तरह आजाद घूमते हैं नेपाल में। हिन्दुस्तान में अब वो मजा नहीं रहा। मैं जेल से बाहर निकलूँगा तो सीधे नेपाल की ओर ही अपना रुख करूँगा। जमनिया में अब कोई नहीं रोक सकेगा मुझको।

हाँ, भगौती और ललिता को किसी सन्त-महन्त की पकड़ के रखना ही हो तो उसका भी इन्तजाम कर दूँगा।

लेकिन यह काम तो मस्तराम भी कर सकता है। नहीं कर सकता है? जरूर कर सकता है। मैं उससे कहूँगा—साल-भर के लिए मैं अपने गुरु महाराज की सेवा में जाना चाहता हूँ, मुक्तिनाथ महादेव से थोड़ी दूर पर ही एक खोह के अन्दर मेरे गुरु महाराज रहते हैं। ढाई सौ वर्ष की उम्र है। दस-दस साल बाद वह बारह महीने की समाधि लेते हैं और उस समाधि के वक्त कोई दूसरा वहाँ रह नहीं पाता, बस, मैं ही रह सकता हूँ। मुझ पर गुरु महाराज की कृपा है। ये बारह महीने मेरी जगह तुम्ही जमनिया की इस बाघम्बरी गद्दी पर बैठे रहो, मस्तराम, तुमको छोड़कर यह जिम्मेदारी मैं किसी और पर नहीं डाल सकता।

मस्तराम जरूर मान जाएगा।

आज दुपहर का खाना खाकर हम जेल के बाहर सरकारी बगीचे में गए। इसके लिए बड़े जमादार की सिफारिश काम आई। उसने कई दिनों से जेलर को पटा रखा था। महज दो घण्टे के लिए हमें यह इजाजत मिली थी।

जेल से थोड़ी दूर आमों की बगीची है। किसी नवाब का बाग था। पिछले पचास वर्षों से सरकार के कब्ज़े में है। अब जेल वाले इस बगीचे के अन्दर सब्जियाँ ही ज्यादातर उगाते हैं। दस-बीस पेड़ अमरूद के भी लगा दिए हैं। चार-छै पेड़ नींबू के भी दिखे। कुछ दरख्त और-और फलों के भी थे। कटहल, जामुन, आँवला, इमली और जाने क्या-क्या?

इमली का पेड़ बहुत बड़ा था। काफी पुराना।

नीचे टूटा-फूटा चबूतरा।

चबूतरे से लगा हुआ मजार।

जरा हटकर कुआँ।

मस्तराम ने अन्दर झाँककर देखा, पीछे हटता हुआ बोला—"लोगों ने क्या गत बना रखी है कुएँ की!"

"क्या है कुएँ में?" मैंने पूछा तो वह बोला- "देखिए न महाराज मकड़ियों के झुंड भरे पड़े हैं! बस, जरा-जरा-सा पानी चमक रहा है..."

"तो तुम क्या करोगे?" मैंने हँसकर कहा।

मस्तराम बोला— "मजार की जगह यहाँ बजरंगबली की प्रतिमा होती तो कुआँ भी हँसता-मुस्कराता होता, जिन्दा-जागता होता। मजार मुर्दा है इसलिए कुआँ भी मर गया है।"

इस पर मैं क्या कहता! गम्भीर होकर आगे बढ़ गया। मुझे लगा कि यह मस्तराम नहीं, उसके अन्दर का भोलाराम बोल रहा है। दर-असल इतना अच्छा कुआँ इसलिए मुर्दा पड़ा है कि जेल वाले मर गए हैं। मजार का क्या कसूर है यहाँ?

सजीवन ने बाग के बीचोंबीच, छाँह में खासा कम्बल बिछा रखा था।

हम नीम की उस छाया के तले देर तक बैठे।

मुद्दत के बाद नीम की ऐसी प्यारी छाँह मिली।

सजीवन अन्दर से भंग का गोला लाया था। बैल चरस खींच रहे थे, उधर से पानी भरी बाल्टी आ गई और भंग का दौर चलने लगा।

इस वक्त पहली बार बड़े जमादार ने हमारा साथ दिया, यहाँ तक कि खुलकर ठहाके भी लगाते रहे।

मस्तराम थोड़ी देर के लिए अकेले बाग घूमने निकला। लौटा तो मेरे सामने ढेर-सारे आँवले फैला दिए। मुरब्बे वाले बड़े-बड़े आँवले।

जमादार ने हाथ जोड़ लिये और दीन स्वरों में बोला—"मस्तराम बाबा, आँवले के पेड़ पर बाहर के लोगों ने आपको देखा होगा। यह बात जेलर के कानों तक पहुँचेगी, वह मुझसे कैफियत तलब करेंगे। बतलाइए,

से क्या कहेंगे साहब से ?"

"ऊपर कुछ नहीं बोलिए," मस्तराम ने झपट के कहा, "और हमें क्या चोर की तरह उस तरफ कूद जाते ? बाग की दीवार भी बाहर है ? देखिए जमादार साहब, मस्तराम दिन-दहाड़े डाका डाल सकता है, दो चार आदमी का खून कर सकता है लेकिन चोर की तरह चुपचुप भाग नहीं जाएगा। यह उसका या कमीना नहीं है कि आपका पांव से डाल कर खत्म हो जाएगा।"

मैंने उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया नहीं तो मस्तराम कुछ और कहता। ऐसा कुछ कहता जिससे बड़े जमादार के दिल को चोट पहुँचती।

कंधे पर से मेरा हाथ हटा दिया मस्तराम ने। बड़ी-बड़ी आँखों से देखता रहा मेरी ओर। अन्दर ही अन्दर जाने कैसा तूफान उठ रहा था। उसके प्रति अविश्वास जाहिर किया था बड़े जमादार ने, साधारण कैदी की कोटि में रख कर उसे देखा था बड़े जमादार ने। मस्तराम जैसा साफ-दिल आदमी इस पर रंज हो उठा तो यह कोई अनहोनी नहीं हुई।

लेकिन बड़े जमादार ने जाने क्या सोचकर मस्तराम के पैर पकड़ लिये और भीगे गले से कहने लगा – "मस्तराम बाबा, सचमुच ही जेल की नौकरी करते-करते मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। मैंने क्यों सोचा कि लोग जेलर के कानों तक यह बात पहुँचा देंगे ! भला यह भी कोई बात हुई ! आप आँवले के दरख्त पर चढ़े थे, दीवार के उस पार कूद ही जाते तो क्या था ? बाहर ही बाहर जेल के गेट पर आकर खड़े होते और पुकार कर संतरी से कहते और वह आपको अन्दर ले लेता। दर-असल, मेरा मन मलिन है। इसी से मैंने उल्टा सोचा। मुझे आप माफ कर दीजिए, मस्तराम बाबा !"

मस्तराम ने अपने पैर हटा लिये और बड़े जमादार के सिर पर हाथ फेरा।

मुझे लगा कि मस्तराम के आगे मैं कुछ नहीं हूँ। वह मुझसे कहीं ऊँचा है, कहीं आगे है वह मुझसे ! बेचारे के अन्दर जरा-सी हिकमत होती तो संसार उसकी पूजा करता। फिर उसके भी इर्द-गिर्द भगौती,

लालता प्रसाद जैसे भगतों की भीड़ बटुर आती। फिर मस्तराम भी वीराने में मठ जमा लेता कहीं !

मस्तराम सचमुच ही आँवले के दरख्त से अगर दीवार के उस पार कूद जाता और टहलता-टहलता किसी तरफ निकल जाता ! भारी मुसीबत खड़ी होती न ?

नहीं, अब मैं दुबारा जेल की बगीची के अन्दर मस्तराम को नहीं ले जाऊँगा। और खुद भी क्या करने जाऊँगा ? कोई जरूरत नहीं है इन नखरों की। यहाँ तो बस उतने ही नखरे फैलाओ, जितने से काम बने··· उस रोज वह नाटक वाला नखरा बिल्कुल सही उतरा ! जमादार की पतोहू सनीचर की शाम को दर्शन करने आई। मैं उसके सीने पर फूँक मार-मार के भभूत मलता रहा। सुकुल ने बतलाया, कई रात उस औरत को अच्छी नींद आई। हफ्ते में तीन रोज अगर आधा-आधा घण्टा भभूत मला जाता तो डेढ़-दो महीने में वह निरोग हो जाती, मगर मैं इस झमेले में पड़ना नहीं चाहता। वहाँ जमनिया में झाड़-फूँक का यह धंधा बहुत बड़ा धंधा है। यहाँ जेल के अन्दर इस झाड़-फूँक में कोई दम नहीं है।

बड़ा जमादार बेहद डर गया था मस्तराम से। मैंने उसे अच्छी तरह समझा दिया है। सुबह-शाम मस्तराम का दर्शन करेगा, थोड़ी-बहुत गपशप करेगा, बस, इतने में ही वह भोलानाथ खुश रहेगा।

इमरितिया ने आज फिर दो रुपये मँगवाए !

क्या करती है, रुपये लेकर ?

जुआ तो खेलती है !

नहीं, मिठाई-सिठाई मँगवाती होगी बाहर से ! मिठाइयों से इमरितिया का जी कभी भरा ही नहीं। जमनिया में सबसे ज्यादा मिठाइयाँ वही खाती थी, बासी हो *या ताजा, कैसी भी मिठाई उसे चाहिए।* पिछले वर्ष पूस के सारे महीने वह गन्ने ही चूसती रही। मिल वाला सेठ विर्धीचन्द बतला रहा था—महाराज, अवधूतिन तीन सौ से ऊपर गन्ना चबा गई !

गौरी भी गन्ने चूसती थी, लेकिन इमरितिया की तरह नहीं।

इमरितिया की तरह वह मिठाइयों पर नहीं टूटती थी ! लछमी को शौक था खट्टी चीजों का । मास-मछली वालों को मिठाई नहीं चाहिए । उन्हें चरपरी वस्तुएँ चाहिए । लछमी तो बारहों महीने खट्टे फल चूसती रहती थी । हरी मिर्च और अदरक की चटनी कितना खाती थी ! लेकिन मस्तराम को खट्टा-चरपरा खाना अच्छा नहीं लगता है । लछमी गई तो छै-सात महीने में गौरी आई । गौरी को आए साल बीता तो मस्तराम पहुँचा । गौरी, मस्तराम, इमरितिया, तीनों का जनम एक ही राशि में हुआ था । कम-से-कम इन तीनों के अन्दर एक बात तो मिलती है कि तीनों मीठा खाना पसन्द करते हैं ।

शिवनगर की रानी साहिबा वर्ष में दो बार साधुओं को भण्डारा देती हैं । इस साल अब तक कातिक का भण्डारा नहीं हुआ । कौन करवाता ? हम इधर जेल आके बैठ गए, उधर भगौती कचहरी की दौड़-धूप में उलझ गया । देखें, बैशाख वाला भण्डारा रानी साहिबा का होता है या नहीं । तब तक कचहरी का काम खत्म हो चुका रहेगा । भगौती फुर्सत में होंगे तो भण्डारा क्यों नहीं होगा ?

लेकिन मैं नहीं रहूँगा तो रानी साहिबा की तबीयत होगी भंडारा के लिए ? मुझे तो शक है !

उस बार लालता की बेवकूफी से मुझे गुस्सा चढ गया । मैं समाधि वाली अपनी गुफा में आ बैठा । अन्दर से किवाडी बन्द कर ली···

हुआ यों कि असाढ का मेला करीब था । सामान की फेहरिस्त बनाई जा रही थी । भगौती, लालता, रामजनम, सेठ भूरामल, ठाकुर शिवपूजन सिंह वगैरह मौजूद थे । श्रद्धा और भक्ति, धर्म और कर्म, लोक और परलोक···बहुत सारी बातों की कुटाई-पिटाई चल रही थी ।

भूरामल ने बीच में कहा—"पैसा न हो तो सब कुछ फालतू है, सब कुछ बकवास !"

सब लोग तोंदवाले उस नौजवान मारवाड़ी की तरफ देखने लगे । वह कह रहा था—"भगत लोग वक्त पर अपनी गाँठ न खोलें तो बाबा का क्या हाल होगा ? लक्ष्मीजी रूठ जाएँ तो सारे मठ-मन्दिर खँडहर हो जाएँ, उल्लू बोलने लगें उन पे···"

इस पर सबने हामी भरी ।

घण्टा-भर बाद सेठ भूरामल की बात मेरे कानों तक पहुँच गई; सालिगा प्रसाद ने नमक-मिर्च मिला कर इमरितिया से कहा। वह आकर आरती के बाद मुझे बकता गई—"बाबा क्या है, भगत लोग अपना हाथ खींच लें तो टुटकी भर निशान दुर्लभ हो जाय···सेठ भूरामल बोल रहा था महाराज जी !··· भगोती, रामजनम, सभी तो थे । सालता उठके चले आए, उनसे सुना नहीं गया यह सब !"

मुझे तो सालता की ही बेवकूफी खलने लगी । अरे, मठ के बारे में या बाबा के बारे में कोई अनाप-शनाप बकता है तो बकने दो ! कूवत हो तुम्हारे अन्दर तो वहीं आमने-सामने जवाब दो, नहीं तो निगल जाओ उन बातों को ! उन्हें मेरे कानों तक क्यों आने देते हो भाई ?

और, तब मुझे लगा कि सेठ भूरामल की तरह दूसरे लोग भी इसी तरह सोचते होंगे ! सोचते होंगे, भगतों की बदौलत ही बाबा गुलछर्रे उड़ाता है ।

मैंने मन ही मन तय कर लिया कि इन सेठों का घमंड चूर-चूर कर दूँगा । मेले का सारा इन्तजाम अपने आप होगा । बाजार वालों से न एक पाई लूँगा, न एक दाना ! भगवान की दया से सब कुछ पिछले वर्षों की तरह होगा । लंगर भी चलेगा । भजन-कीर्तन भी चलेंगे । हाट-बाजार भी लगेगा । थिएटर-तमाशे भी जमेंगे । तम्बू भी तनेंगे । शामियाना भी खड़ा होगा । नाच भी जमेगा । भाषण-वाषण भी होंगे । सब कुछ होगा । मैं सालों की हवा निकाल दूँगा । पैरों पर इनसे नाक न रगड़वा लूँ तो···

जमनिया में समाधि के लिए मैंने चार छोटी-बड़ी गुफाएँ तैयार करवाई थीं । पहले लोगों की समझ में नहीं आता था कि गुफा क्या होती है । जमनिया के सीधे-सादे देहाती आज भी उन्हें 'मांद' ही कहते हैं ।

समाधि में जाने से पहले बाबा का फर्मान निकलता था । उस बार भी निकला सिलेट की पाटी पर पत्थर की पेन्सिल से लिखा हुआ फर्मान···

"··· [illegible] । समाधि में रहेंगे । मिलना-जुलना सब बन्द । असाढ़ का [illegible] । लोगों में नोटिस बँट जाएगी, उन्हें आगाह कर असाढ़ का मेला इस बार नहीं लगेगा, मेले के नाम पर

कोई ग्रहम जमनिया नही आए। बाबा आहार नही ग्रहण करेंगे, सिर्फ एक-एक गिलास दोनो जून लेंगे। सेवा में मस्तराम को छोड़कर कोई दूसरा नहीं होगा…"

ईंट और सीमेण्ट की इन पक्की गुफाओ को जमीन के अन्दर-अन्दर बनवाया गया है। जमीन पर देखने पर फर्श नजर आती है। सीमेण्ट की फर्श। ऊपर फर्श 'पक्का आँगन' मालूम देती है। गुफाओ मे जाने वाली सीढ़ियाँ कोठरियो के अन्दर है। इन कोठरियो मे जँगले है, वे बगीचे की तरफ खुलते हैं। जानकार आदमी, यानी अपना आदमी ढक्कनदार सूराखो से मुँह लगाकर अपनी बातें गुफाओ के अन्दर पहुँचा सकता है।

किवाड़ी बन्द करके मैं अन्दर जा बैठा।

थोड़ी देर मे इमरितिया आकर आसन-बासन ठीक-ठाक कर गई। चौमुख दीपक को तेल से भर गई। रेंड का तेल जलता था इन दीपको मे। रोज शाम को वही इन समाधि-कुटीरो मे गुग्गल की धूप सुलगा जाती थी। एक योगी के लायक आराम और सुभीते की सारी व्यवस्था वहाँ यो भी रहती थी।

भगौती और सेठ विर्धीचन्द किसी भी हालत मे मेला टालने को तैयार नही थे। लगभग दस हजार का नुकसान था। दिन करीब थे। इससे बेचैनी बढ रही थी। मस्तराम ही गुफ्तगू का एक मात्र जरिया था, लेकिन उसकी नीयत साफ थी। मेला वालो का साथ नही दे रहा था मस्तराम। मेरी तरफ से उन्हे जमकर जवाब देता था। बाज दफे झिटक भी देता था, बाज दफे गुस्सा भी होता था। सेठ भूरामल ने बाबा के बारे मे और मठ के बारे में जिस तरह की ओछी बात कही थी, मस्तराम का रोआँ-रोआँ उससे दहक रहा था। वह यो भी सेठो को गालियाँ देने मे तेज था और इस बार तो बड़ी मुश्किल से मैंने उसे अपने काबू मे रखा। बिचारी इमरितिया पैरो पड़ी, अपने कसम दे-देकर मस्तराम के गुस्से पर पानी सींचा, वर्ना वह सेठ विर्धीचन्द को फाड़कर खा जाता!

पाँचवें दिन रानी साहिबा आ पहुँची।

मुझे पता चल गया था एक रोज पहले ही।

इमरितिया को समझा-बुझा दिया था।

———— ————

रानी साहिबा अपनी समझदारी के लिए कई जिलों में मशहूर हैं। मेरे 'असहयोग' का कारण तो आनन-फानन में उनके दिमाग में दौड़ गया। भक्त-भाइयों की मदरसी ने, खास कर सेठों के प्रतिनिधि भूरामल ने बाबा की इजाजत के आगे घमंड की अपनी दीवार खड़ी कर दी थी और वे मठ की हस्ती को अनजाने ही धूल में मिलाने जा रहे थे। शिवनगर की रानी ने उनमें से एक-एक को झाड़ा, उनकी गलतियों को उधेड़-उधेड़ कर उनके सामने रखा। सभी ने अपराध कबूल किया। सभी ने माना, वे गुनहगार हैं। सेठ बिर्धीचन्द ने समूची जमात की ओर से रानी साहिबा के चरणों पर अपनी पगड़ी डाल दी और कहा, "आप बाबा को मना दीजिए ! हम किस मुँह से बाबा के सामने जाएँगे। आप न आतीं तो बाबा रूठ कर जाने किधर निकल जाते ! फिर तो इस मठ का सत्यानाश ही हो जाता। जमनिया मठ के आदि पुरुष बाबा ही हैं, हम सभी उनके बच्चे हैं ...बच्चों के अपराध बुजुर्ग नहीं तो और कौन क्षमा करेगा ?"

सेठ बिर्धीचन्द की घिग्घी बँध गई थी, गालों पर आँसू ढुलक आए थे, भगौती उधर अलग सुबक रहा था। ठाकुर शिवपूजन सिंह रूमाल से आँखें पोंछ रहे थे।

हाँ, इमरितिया ने देखा था यह नजारा !

फिर रानी साहिबा ने अपने हाथों से मुझे लिखके भेजा और भक्त-मंडली की तरफ से क्षमा-याचना की। कहलवाया : "मैं भी सत्याग्रह करूँगी। खाना तो छोड़ ही दूँगी, पानी भी नहीं लूँगी। आप समाधि पर चाहे महीनों बैठें, लेकिन कम से कम फलाहार तो अवश्य लें। असाढ़ का मेला भी जमने दें। बाजार वालों से मेले की तैयारी या हवन-पूजन-लंगर आदि के लिए न एक दाना लिया जाएगा, न एक पाई ! कुल खर्चा इस बार शिवनगर स्टेट देगा। बस, अब आपकी कृपा चाहिए !"

छठे दिन, सवेरे ही मैंने मस्तराम को भेजा रानी के पास।

...र मठ की अतिथिशाला के उस खास हिस्से में ठहराई गई थी जो ... के लिए ही तैयार हुआ था।

...-भर मोसंबी साथ लाई थीं। खुद से उन्होंने रस निकाला।

भरा हुआ चाँदी का गिलास रानी ने मेरी तरफ बढ़ाया। घूंट-घूंट करके धीरे-धीरे मैं वह पी गया !

और तब, असाढ की पूर्णिमा तक रानी साहिबा जमनिया रही।

मेला खत्म हुआ तो उन्होंने साधुओं को भंडारा दिया। वैसा शानदार भंडारा आज तक जमनिया के मटवालों को कहीं किसी ने दिया !

पीछे उन्होंने भंडारा के लिए कातिक और वैशाख तय कर दिये। यह भी तय कर दिया कि बाबा को भंडारे के वक्त जमनिया में मौजूद रहना होगा !

अब भगवान ही जानता है, कितने कातिक और वैशाख बाबा जेल के अन्दर रहेगा !
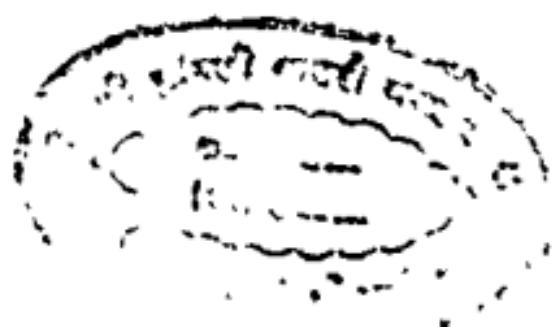
मस्तराम

बाबा ने बहुत सोच-समझ कर मेरा यह नाम रखा मस्तराम ! उमर अभी चालीस भी नहीं हुई है। बड़े जमादार ने कई बार मुझसे कहा है—सन्त जी, तुम तीस-बत्तीस के नजर आते हो। बाल बढ़े हो, छटे-तराशे हों, दाढ़ी-मूंछ सफाचट हो और टेरीलीन का पैंट-बुशर्ट डाटकर खड़े हो जाओ, बीस-बाईस के नौजवान मालूम होगे ! क्या सूरत पाई है, कैसा ढाँचा मिला है ! बड़े जमादार जब मेरे सामने से गुजरते हैं तो एकटक निगाहों से मेरे बदन की छटा को पीते हुए गुजरते हैं। लगता है, मस्तराम उनकी नजरों में हमेशा के लिए बस जाएगा।

लाल रंग की दो लँगोटियाँ जेल के ही दर्जी से सिलवाकर बड़े जमादार ने आज मेरे लिए भिजवा दी हैं। दो कम्बल और आ गए हैं। इन कम्बलों को देखकर जेल वालों की अक्ल पर मुझे हँसी छूटती है। उन्हें क्या पता कि मस्तराम के बदन की चमड़ी को जाड़ा-पाला कुछ नहीं लगता है। हम तो मामूली कपड़ों में केदार-बद्री घूमे हैं। हमने गंगोत्री, यमुनोत्री, उत्तर काशी, टिहरी, चमोली, कर्णप्रयाग और रुद्रप्रयाग की गंगा में गोते लगाए हैं। बर्फानी जल से स्नान करते थे पूस, माघ में भी। मस्तराम को जाड़े ने कभी नहीं सताया। हाँ, चरस और गाँजे की तलब ने मस्तराम को सताया है। छटाँक-आधा पाव माल झोली में पड़ा रहे तो तबीयत मस्त रहती है...जो न पीवे गाँजे की कली, उस लड़के से भली रे...बम भोले की गली...अपनी तो तबियत चली...भली रे

शब्दों को यों भी वक्त-बेवक्त दोहरा दो तो बदन में गर्मी दौड़ ।। मुझे जरूरत नहीं पड़ेगी इन कम्बलों के इस्तेमाल की। बस के तौर पर इन्हें काम में लाया जायेगा। जेल वाले चाहे तो मेरे

लिए दस कम्बल और डाल जाएँ ! कम्बलों के ढेर पर बैठकर मस्तराम विचार-सागर का पाठ किया करेगा।

सफाई का नाटक इतना कहीं नहीं देखा। जेल के अन्दर जहाँ देखो वहीं सफाई-सफाई का कोलाहल मचा रहता है। नालियों मे ब्लीचिंग पाउडर छिड़कते ही रहते हैं। जहाँ-तहाँ फिनाइल की महक उठती रहती है। रात के वक्त जिस वार्ड के अन्दर मैं बन्द किया जाता हूँ उसमे दस और कैदी होते हैं। गोदामनुमा जेल-वार्ड बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ रहने से नागवार नहीं लगता है। नागवार लगता है वार्ड के अन्दर की छोर पर पाखाना-पेशाब के बर्तनों का पड़ा रहना। शहरों मे नये ढग के पाखाने बनने लगे हैं। उनमे जरा भी गन्दगी नहीं रहती, न दुर्गन्ध की गुंजाइश ! सोने-बैठने वाले कमरे से बिल्कुल लगे हुए नये ढग के वे पाखाने किसी के अन्दर घिन नहीं पैदा करते। अपनी जेलों के अन्दर हमारी सरकार क्या सफाई का नया इन्तजाम नहीं करवा सकती ? मैंने उस रोज सुकुल जी से कहा तो खैनी ठोंकते हुए वे बोले—"समाज के अन्दर जब तक भंगी-मेहतर रहेंगे, तब तक सफाई का यही सिलसिला चलता रहेगा।" इस पर सुकुल से मैंने पूछा—"तो हमेशा जेल के अन्दर भंगी-मेहतर रखने पड़ेंगे। ऐसा भी तो होता होगा कि कभी-कभी एक भी भंगी या मेहतर न रहता हो। दूसरी जातियों के कैदी और सब कुछ करेंगे, पाखाने नहीं साफ करेंगे तो अक्सर मेहतरों के अभाव मे यहाँ सफाई का काम रुक जाता होगा ?"

इस पर सिपाही रामसुभग सुकुल भभाकर हँसे। हथेली पर सुर्ती तैयार थी। उसे होठों के हवाले करके उन्होंने गोलाई मे आँखें नचाईं और बोले—"नहीं महाराज, कभी मेहतर की कमी यहाँ नहीं होती। दो टो, एक टो हमेशा रहते ही हैं।"

मैंने कहा—"आप लोग जादू जानते हैं ! मिट्टी का मेहतर गढ़ लेते होंगे वही पाखाने की सफाई करता होगा ! कोई जरूरी है कि भंगी-मेहतर हमेशा नियमित तौर पर अपराध करते चलें और गिरफ्तार होकर नियमित तौर पर पाखाने की सफाई के लिए जेल के अन्दर रहा करें ?"

सुकुल जी ने लाठी पटक कर कहा—"हाँ, ऐसा ही होता है ! जेल

के दफ्तर में चार्ट बना होता है, उसमें छोटी-बड़ी जेलों के अन्दर मेहतरों, मालियों, रसोइयों, हज्जामों की सजा की अवधि, छूटने की तारीख आदि के बारे में लिखा रहता है। उसी के अनुसार शहरों और देहाती इलाकों की छोटी-बड़ी कोतवालियों के दफ्तर भी इस बात का पता रखते हैं। गिरफ्तारियों के बाद ही अभियुक्तों या अपराधियों को निकटवर्ती शहरों की जेलों में भेज दिया जाता है। छोटी जाति वालों और आदिवासियों पर खास निगाह रखी जाती है। सचमुच का भंगी-मेहतर न हुआ तो दबाव डालकर आदिवासी से भी सेवा का यह काम लिया जाता है।"

मुझसे एक बार किसी ने बतलाया था कि गांधी महात्मा खुद ही पाखाने की सफाई का काम करने का जोर अपने चेलों पर डालते थे। इस पर ऊँची जातियों के उनके चेले बड़ी मुश्किल से राजी होते थे। मैं पाखाने की सफाई के इस मसले को एक वेदान्ती और औघड़ की दृष्टि से देखने की कोशिश करता हूँ। मल और मूत्र तो इसी शरीर से निकलते हैं, अपने चूतड़ों की सफाई कहाँ कोई भंगी से करवाता है? पाखाने की सफाई में क्या रखा है! अपनी गन्दगी साफ करने में हम खुद ही अपने भंगी-मेहतर का काम क्यों न करें? दिशा-फराग़त से निवट आने के बाद या टट्टी और ढोल-डाल से निबट आने के बाद हम साबुन या मिट्टी से हाथ धोते हैं, नहा कर कपड़े बदलते हैं, फिर अपने को पवित्र मानते हैं। पूजा-पाठ करने बैठते हैं या चौके में अन्दर बैठकर खाना खाते हैं। इसी तरह मेहतर भी सफाई का काम कर चुकने पर नहा-धो ले, कपड़े बदल ले, फिर हमारे साथ बैठकर वह पूजा-पाठ में क्यों नहीं शामिल होगा? आत्मा तो एक ही है, शरीर का चोला अलग-अलग हो सकता है।

यह बात मेरी समझ में कभी नहीं आई कि शास्त्रों में शूद्रों की उपमा शरीर के पैरों से क्यों दी गई, ब्राह्मणों को सिर क्यों बताया गया?

मैं स्वयं ब्राह्मण के ही खानदान में पैदा हुआ था। बाप और चाचा [illegible] में थे। माँ अपने प्रेमी के साथ ऋषिकेश भाग आई थी। उस [illegible] तीन साल का बच्चा रहा हूँगा। बाद में सहारे के लिए मेरी माँ दो-तीन जगहों पर रहना पड़ा। उचित निगरानी के अभाव में मैं कुछ

पढ़-लिख नहीं पाया और बारह साल की उम्र में ही आजाद हो गया, यानी माँ से अलग रहने लगा। लगातार पन्द्रह वर्ष चिमटा फटकारते हुए घुमक्कड़ी करता रहा। तीन-चार नौजवान घुमक्कड़ों की मेरी अपनी जमात थी। फिर उज्जैन और नागदा के इलाकों में छोटी-सी किसी मठिया में उपमहन्त के तौर पर तीन-चार वर्ष गुजारे। पिछले छः-सात वर्षों से जमनिया में रहने लगा हूँ।

सारी दुनिया को अपने से छोटा समझने का ब्राह्मणत्व वाला संस्कार मेरे अन्दर कूट-कूट कर भरा है। बाबा को अच्छी तरह मालूम है कि मस्तराम किसी भी वक्त अपना कमण्डल और अपनी झोली उठाकर चल दे सकता है।

उत्ती पिटाई की जरूरत नहीं थी। वह तो दुबला-पतला मरा-भुखा-सा साधू था, उसकी पीठ पर चालीस-पैंतालीस बार बेंत फटकारना मेरा पागलपन ही था''' बात यह हुई कि पोखरा से एक नेपाली भगत ने बहुत दिनों बाद सेर-भर बढ़िया माल भेजा था। इतना बढ़िया, इतना तेज, इतना ताजा कि एक बार दम लगाने पर दिमाग काफी देर तक आसमान में चक्कर लगाता था। ऐसी मस्ती उपजती थी कि दीवाल में टक्कर मारने की तबियत होती थी। शिकार की तृप्ति के बाद शेर की तरह आधी मुंदी आँखों से बेफिक्र लेटे रहने की तबीयत करती थी'''उस रोज वह साधू अन्दर आया तो बाबा आरामकुर्सी पर बैठे थे। सवेरे नौ बजने का वक्त था, आँगन में बारह खम्भों वाले मण्डप में बाबा का आसन विराजमान था। मैं करीब ही बैठा था और जटाओं की लुटियों को हथेलियों से सहला-सहला कर चिकना बना रहा था।

आगन्तुक साधू ने सामने आकर बाबा को नमस्कार किया। बाबा उसकी ओर देखते रहे, कुछ बोले नहीं।

मैंने उससे कहा—"बोल, सच्चे दरबार की जय।"

साधु ने जवाब में कुछ नहीं कहा, बेवकूफ की तरह खड़ा रहा। मैंने इशारे से समझाया—"बाबा के सामने साष्टांग मुद्रा में लेट जा!"

वह फिर भी खड़ा रहा।

अब मेरा गुस्सा भड़का। अन्दर जाकर मैं बेंत उठा लाया और [illegible]

बार उसकी पीठ पर जोर की फटकार दी।

यह फिर भी पड़ा रहा।

मैंने चीखकर कहा—"अबे बोलता है कि नहीं ! बोल सच्चे दरबार की जय।"

अब भी साधू हँसने लगा। अपने आप मे बोला—"यहाँ तो सबकी खोपड़ी औंधी लगती है ! मैं कहाँ आ गया !"···और बाबा की तरफ हाथ उठाकर उसने कहा—"आपने अपने दरबार मे अच्छा गुण्डा पाल रखा है। लगता है आपके दरबार की सबसे बडी सच्चाई यह गुण्डई ही है···।"

इस पर मैंने गरज कर कहा—"ले, मै तुझे समझा दूँ सच्चे दरबार की सच्चाई। मिनटो में असलियत जान जाएगा···।"

मैं लपक कर साधू की पीठ पर से नारगी रग वाली वह मोटी चादर हटाने लगा। उसने रुकावट नहीं डाली।

चादर हटाकर मैं तब तक उसकी पीठ पर बेंत मारता रहा जब तक वह ऐंठकर बिछ नहीं गया !

मुझे अब यह सोचकर भारी अचम्भा होता है कि बाबा ने अपनी आँखो से यह सब कैसे देखा ? किस तरह कोई महात्मा किसी बेकसूर की पीठ पर पडने वाली वैसी पिटाई को अपनी आँखो देखता रहेगा ? लेकिन इस तरह झूठ-मूठ की दया-माया उस वक्त बाबा के अन्दर नहीं पैदा हुई तो यह ठीक ही था। रहमदिल होना भारी कमजोरी होती है और कानून-कायदा तो बिल्कुल अचल ही हो जायगा, अगर रहम ने बीच मे टाँग अडाई !

चालीस-पचास बेंत पड चुकने पर वह बेहोश हो गया तो बाबा ने जटाएँ समेटकर गले मे लपेट ली, उठकर मेरे पास आए। नीचे की अँगनई मे आने के लिए उन्हें बारह पहलू वाले मण्डप से तीन सीढियाँ उतारना पडा।

आहिस्ते से बाबा ने मेरी बाँह पकडी। गुस्से में मेरे नथने फडक रहे होंठ काँप रहे थे, निगाहो मे लाली उतरा रही थी, कपार की रगें उठी थी। बाँहो मे बिजली की हरकत आ गई थी।

"मस्तराम!" बाबा ने गम्भीर होकर कहा—"चलो, अन्दर चलो! अब इस पागल पर रहम करो।"

और खींचकर बाबा मुझे मठिया के अन्दर ले गए थे।

इमरितिया यह सब देख रही थी। उसने बाबा के कानों में होंठ सटाकर कुछ कहा।

बाबा ने स्वीकार की मुद्रा में माथा हिला दिया।

बाबा ने मुझे भी उस वक्त छुट्टी दे दी। कहा—"अपने आसन पर जाकर आराम करो।"

दुपहरी ढल चुकी थी, तब जाकर मुझे मालूम हुआ कि पिटाई खाने के बाद साधू मुश्किल से आधा घण्टा वहाँ रहा। फिर जाने कहाँ चला गया, पता नहीं लगा।

मैंने इन हाथों से हजार-हजार बार श्रद्धालु जनता की पीठों पर बेंतें फटकारी होंगी। मगर उनमें से कहाँ कोई अदालत-कचहरी गया? अकेले इसी को लगी थी क्या? मुझे शक है, यह आदमी साधू नहीं होगा। सी० आई० डी० का आदमी रहा होगा कि आखिर किसी पार्टी-वार्टी का सिर-फिरा मेम्बर जो बाबा को यों ही परेशान कर रहा है।

वारंट का कागज लेकर चार सिपाही और एक सब-इन्सपेक्टर मठ के अन्दर पहुँचे तो हमें यकीन नहीं हुआ कि वे किसी खास मतलब से आये होंगे।

भगौती दर्जा दस तक पढ़ा है। चालीस की उमिर में स्कूली विद्या तो जरूर ही भूल-भाल गया होगा, लेकिन कामचलाऊ अंग्रेजी वह जानता है। वारण्ट का सरकारी कागज भगौती ने ही देखा। उसने दारोगा साहब से अलग अकेले में कुछ देर बातचीत की। दारोगा की राय हुई कि बाबा को गिरफ्तार होने में आनाकानी नहीं करनी चाहिए। साथ ही अभि-युक्तों में मेरा और इमरितिया का भी नाम था।

तय हुआ कि खा-पीकर दो बजे के बाद हमें मठ से निकलना चाहिए।

पास-पड़ोस में डेढ़-दो मील के अन्दर तीन गाँव हैं—केरवनिया, लखनपुरा, मसगाँवा। कानों-कान गिरफ्तारी की बात फैल गई। लोग इकट्ठे होने लगे। उनमें बच्चों और औरतों की संख्या ज्यादा थी।

भगौती ने दारोगा साहब से कहा—"बाबा और किसी सवारी पर चलते नहीं हैं। या तो पैदल जायेंगे या तो फिर डोली का इन्तजाम होगा।" मेरे दिमाग में एक नई बात सूझी···आठ जने पलंग उठाकर चलेंगे, बाबाजी उसी पलंग पर विराजमान रहेंगे। लेकिन यह बात पुलिस वालों ने नहीं मानी। डोली भी कबूल नहीं की गई। आखिर जीप में बैठाकर बाबा थाना पहुँचाए गए। लोगों को यकीन नहीं हो रहा था कि बाबा सचमुच ही किसी जुर्म में गिरफ्तार हुए हैं। सबने कहा कि जेल-जीवन की मौज उठाने के लिए बाबा ने यह लीला फैलाई है। बेंत की चोट खाकर कोई अदालत तक पहुँच सकता है इसकी कल्पना सीधे-सादे लोगों को नहीं थी।

भगौती ने यहाँ जेल के बाहर, थोड़ी दूर पर एक मकान ले लिया है भाड़े पर। अब वहीं से खाना बनकर हमारे लिए आने लगा है। यह इन्तजाम जरूरी था। कैसा भी हो, जेल की रसोई का खाना रद्दी ही होगा···परसों से खाना आने लगा है। कल मखाने की खीर आई थी। आज मालपुआ आया था। सब्जी में आलू-गोभी थी। जब से जेल का खाना चला, गोभी नजर नहीं आई। यों इशारा पाकर बड़ा जमादार महँगी से महँगी सब्जी का इन्तजाम बाबा के लिए करवा सकता था। सवेरे सूजी का हलवा और समोसे आए थे। अब हमारे कपड़े भी धुलकर वहीं से आ जाएँगे। थर्मस में चाय भी आने लगी है। आज शाम को बालूशाही और रसगुल्ले के लिए कह दिया गया है।

बाबा को इतने-भर से सन्तोष तो होगा नहीं।

वह जेल में भी रहेंगे तो शाही ठाठ से रहेंगे। यहाँ भी भोज-भण्डारे का सिलसिला चलाना चाहेंगे। समूचा जेलखाना बाबा का अपना परिवार हो जाएगा।

कल से मेरी पुरानी ड्यूटी फिर शुरू हो जायगी। हाँ, यहाँ भी बेंत से पीठ छुआकर दुआ देने का सिलसिला चालू होगा। मैं मंजूर नहीं कर रहा था, बाबा भी राजी नहीं हो रहे थे, लेकिन बड़ा जमादार कई दिनों से अपनी जिद्द पर अड़ा हुआ है। कल मंगलवार है न, पाँच जने अपनी-अपनी पीठ बेंत से छुआयेंगे। उनमें से दो जेल के दफ्तर में काम

करने वाले बाबू है। एक बड़ा जमादार खुद और एक उसका बड़ा लड़का और एक रामशुभग शुकुल। इस तरह पांच भक्तो की पीठ पर मस्तराम को कल उसी तरह बेंत से हल्के-हल्के छू देना होगा···आज सबेरे कई दिनो के बाद हमारा मिलना हुआ। बाबा ने हिदायत दी है · देखो मस्तराम फिर उसी तरह का बचपना नही करना। रस्मी तौर पर पीठ को बेंत से छू-भर देना। कही ऐसा न हो कि तुम्हे फिर बेंत फटकारने मे मजा आने लगे और जोश मे आकर कही फिर तुमने किसी की पीठ उधेड़ दी तो भारी बदनामी होगी। फिर कोई तमाशा न खड़ा करना मस्तराम।

मैं सब समझता हूँ। नीम की मामूली टहनी-जैसी हल्की-पतली एक बेंत आई है। मारने पर भी वह चोट नही करेगी। फूल के डंठल से या तिनके से जिस तरह चोट पहुँचाई जा सकती है, उतनी ही चोट पहुँचेगी। यह तो अपने-अपने मन की भावना से सम्बन्ध रखता है। हमने तो यहाँ किसी से नही कहा कि अपनी पीठ पर बेंत लगवाओ। लोग खुद ही पीछे पड़ गए है। इनमे पढ़े-लिखे लोग भी है। जेल के दफ्तर मे काम करने वाले ये दोनो बाबू पढ़े-लिखे हैं। एक तो बी० ए० तक की विद्या हासिल कर चुका है, दूसरा इण्टर तक पढा है। एक ब्राह्मण है, दूसरा राजपूत। इन दोनो से कौन कहने गया था कि अपनी पीठ पर बेंत लगवाओ, मैंने तो नही कहा था। जमनिया मे भी कभी किसी से मैंने इस बारे मे नही कहा। लोग खुद ही अड़ जाते थे। लगता था बेंत नही पड़ेगी पीठ पर तो पेट का खाना हजम नही होगा इनका! अब वही बीमारी यहाँ जेल के अन्दर पहुँच गई। हाँ, बीमारी ही कहो···मान लो बड़े जमादार की पतोहू अड़कर बैठ जाय तो उसकी पीठ पर जोरो से नही मारोगे? नही पतली टहनी से क्या होगा! जवान और निपूती औरत की पीठ पर जमकर नही पड़ेगी तो उसका जी कैसे भरेगा?

नहीं, यह सब कुछ नही करेगा मस्तराम। अब की वह बहकावे मे नही जाएगा। लोग बहुत परेशान करेंगे तो मस्तराम जेल की दीवार कूद-फांदकर भाग जाएगा। वह जमनिया के बाबा को हमेशा के लिए छोड़कर चला जाएगा। मस्तराम की मरजी के खिलाफ बाबा कोई काम

[illegible]

[illegible] है। [illegible] को [illegible] संजीवन है। [illegible] बड़ी-बड़ी मूँछें [illegible] संजीवन [illegible]। [illegible] और [illegible] नहीं है। [illegible] में संजीवन को हुक्म दे रखा है [illegible] की सेवा करो, तुम्हारे सारे मनोरथ पूरे होंगे। अभी तुरंत [illegible], अभी इतनी उम्र में आकर सब जाओ··· लूट-मार में [illegible] बार यहीं संजीवन मेरे लिए चरस और बीड़ी की जुगाड़ करता था। [illegible] बार पकड़े भी मेरे पास [illegible] है। हम कई दिन एक ही बार्ड में अन्दर साथ को बन्द होते थे। संजीवन ने मेरे पैरों की मालिश की है। मुझे चरस की अपनी व्यवस्था मुझे अच्छा नहीं लगता। लेकिन श्रद्धा के मारे तुम्हारे पैरों को कोई चाटने ही लग जाए तो क्या करोगे! संजीवन से उसकी ज़िन्दगी के बारे में मैंने अब तक कुछ नहीं पूछा। बेकार है सब पूछना! वही लूट-खसोट, वही छीना-झपटी, वही जंगलों में छिपते फिरना, रेगिस्तान में भटकने वाले अरबी बंजारों की भाँति चेहरे को कपड़े से लपेटकर, सिर्फ़ आँखों को खुली रखना···यह सब तो बिना पूछे भी मालूम किया जा सकता है। लेकिन संजीवन मेरा आदेश पाकर कुछ भी कर सकता है। यह सबका चेला बन सकता है मेरा। लेकिन अभी दस वर्षों तक मैं किसी को चेला नहीं बनाऊँगा। अभी तो मैं खुद ही पट्ठा हूँ।

नहा-धोकर, तिलक-चन्दन करके बड़े सिपाही यानी जेल के हेड-कान्स्टिबिल साहब सवेरे आठ बजे मेरी सेल के सामने डट गए हैं। आस-पास छः-सात कुर्सियाँ लग चुकी हैं। नीम के दरख्त से लगा हुआ सामने वाला छोटा चबूतरा यहाँ कैदियों के लिए तीर्थस्थान का काम करता है। पेड़ से लगे हुए दो बाँस खड़े हैं जिनके छोरों पर लाल पताकाएँ फहराती रहती हैं। शनिवार और मंगलवार को इन बाँसों पर कोई न कोई सिंदूर मसल जाता है, मालाएँ चढ़ा जाता है और अगरबत्तियाँ

जला जाता है। मेरे लिए आज यह पहला शनिवार है। बजरगबली का नाम लेकर आज का दिन शुरू हुआ। पीठों मे पाँच बार छड़ी छुआकर आशीर्वाद देने की जिम्मेदारी यहाँ भी मुझ पर ही पडी है। सकटमोचन हनुमान जी की कृपा बनी रही तो बाबा को जल्दी ही छुटकारा मिल जायेगा''''आइए, जमादार साहब ! मैं सबेरे हनुमान चालीसा का पाठ कर चुका हूँ। बेंत को गगाजल से धो-पोछकर कल शाम को ही रख लिया था। फूल और नैवेद्य और अगरबत्ती सुकुल जी रख गए हैं। लेकिन आपने कहा था, पाँच जन आशीर्वाद लेंगे। वे कहाँ है ?"

"जी, सन्तजी ! आ चले सब लाग। उन्ही के लिए कुर्सियाँ लगी हैं।" बडा जमादार इतना कहकर सहज भाव मे अपनी बडी मूँछो पर दाहिने हाथ की उँगलियाँ फेर रहा है।

पाँच मिनट के अन्दर ही कुर्सियाँ भर गई है, चारो।

मैं पीले रेशम के टुकडे मे लिपटी हुई बेंत की उस नन्ही-पतली छडी को सामने रख लेता हूँ। पालथी लगाकर बैठा हूँ। साखू के ताजे पत्तो से बनी हुई तीन पत्तलें मेरे सामने है। एक पर फूल और मालाएँ, अच्छत-रोली हैं। दूसरी पत्तल पर नैवेद्य की मिठाइयाँ और तराशे हुए फल सजे हैं। तीसरी पत्तल पर रेशम मे लिपटी हुई वही आशीर्वादी छडी है।

सिपाही रामसुभग सुकुल मानो घडी देखकर ठीक वक्त पर आ गया है। नौ बजने वाले है और सुकुल ने अगरबत्तियाँ जला दी हैं। चन्दन की खुशबू तबीयत को मस्त करने लगी है।

मैसूर-बगलौर का माल होगा। वहाँ चन्दन का तेल, साबुन, अतर, फुलेल सब कुछ तैयार होता है।

एक बार भगौती का छोटा दामाद कानपुर से चन्दन की टिकिया ले आया था। मुझसे उसने कहा था—"मस्तराम बाबा, डेढ़ रुपये का यह साबुन इस बार हम आपके लिए ले आए है, फेंक नही दीजिएगा।"··· गजब की टिकिया थी।

दूसरी बार मेरे गालो की फुंसियो मे लगाने के लिए लालता प्रसाद चन्दन का तेल लाए थे। दो बार या तीन बार लगाया होगा वह तेल, फिर कभी इन गालो पर फुंसियाँ नही हुई। तब से मैं मैसूर-बंगलोर के

चन्दन वाले गालों का दोपहरा करता आता हूँ।

बस, मैंने मौन धारण कर लिया। दस-पन्द्रह मिनट लगेंगे। इससे अधिक नहीं लगेगा।

इशारे से बड़े जमादार को नजदीक बुला लेता हूँ। बेंत को पाँच बार हवा में उछालता हूँ और फिर उसे कन्धे पर रख लेता हूँ। पवित्र जल छिड़ककर अच्छत, सिन्दूर, फूल चढ़ाकर बेंत की पूजा करता हूँ। होंठों में रामायण की चौपाइयाँ बुदबुदाता रहता हूँ। बड़े जमादार के गले में इकहरी माला डालता हूँ और उसके कपार में रोली और अच्छत का टीका देता हूँ।

बड़ा जमादार दोनों हाथ जोड़कर कन्धों को झुकाकर, सामने उकड़ूँ बैठा है। मैं आहिस्ते-आहिस्ते उसकी पीठ पर पाँच बार उस नन्ही पतली बेंत से जरा-जरा-सी छू देता और रुक जाता हूँ।

जमादार सिर उठाकर उत्साहना-भरी आवाज में कहता है—"मस्तराम बाबा, यह तो कुछ नहीं हुआ। रत्ती-भर भी मालूम नहीं पड़ा कि आप आशीर्वाद दे रहे हैं!"

मुझे बाबा की दी हुई हिदायत अच्छी तरह याद है। यों भी होशो-हवास दुरस्त हैं। सात्विक वातावरण और जेल का एकान्त जीवन अपना जादू बिछाए हुए है। उँगली के इशारे से बड़े जमादार को चुप रहने का आदेश देता हूँ।

इसी तरह बाकी चारों को भी बेंत की हल्की छुवन से आशीर्वाद मिलते हैं। एक-एक को पाँच-पाँच बार।

संकेत पाकर मुकुल प्रसादी बाँटता है। मैं नीम वाले चबूतरे पर पहुँचता हूँ। ध्वजा के बाँसों पर अच्छत, रोली, फूल चढ़ाता हूँ। पेड़ की तीन बार परिक्रमा करता हूँ। फिर अपने आसन पर वापस आकर अंगोछे से बेंत को अच्छी तरह पोंछता हूँ। उसे रेशमी टुकड़े में लपेटकर रख देता है। अगले शनिवार तक बेंत की यह छड़ी विश्राम करेगी।

मुकुल ने कहा—"अब आप भी प्रसाद लीजिए।" और मैं बर्फी के टुकड़े टपाटप मुँह के अन्दर डाल लेता हूँ।

एक गिलास पानी चढ़ाकर इत्मीनान से बैठता हूँ।

दफ्तर के बाबुओं ने भी शिकायत की है, आशीर्वादी बेंत इतनी हल्की नहीं पड़नी चाहिए···

ठहाका लगाकर हँसने का मेरा जी करता है ! कैसे भोले होते हैं हमारे देश के लोग ! इनकी पीठ पर कोई साधु-महात्मा जमकर बेंत फटकारे, तभी बेचारों की तबीयत भरती है।

लेकिन वह साधु हमारे देश की इस मिट्टी से नहीं पैदा हुआ है क्या ? जमनिया के बाबा की आशीर्वादी बेंत खाकर इससे पहले कोई आदमी हाकिम से शिकायत करने नहीं गया। लगता है, यहाँ भी आशीर्वाद का यह सिलसिला जोर पकड़ता जाएगा ! नहीं पकड़ेगा जोर ? जरूर पकड़ेगा ! तो फिर बेटा मस्तराम, क्या करेगा तू ? कहीं ऐसा न हो कि तेरी मस्ती के चलते बाबा को किसी और झमेले में फँसना पड़े।

मुझे पढ़े-लिखे लोगों से बड़ी नफरत है। मैं जान-बूझकर इनसे बातें नहीं करता हूँ। दफ्तर के दोनों बाबू थोड़ी देर इस इन्तजार में बैठे रहे कि ज्ञान-ध्यान की कोई बात करूँगा ! लेकिन नहीं, मैंने बड़े जमादार से कह दिया है – "रात नींद नहीं आयी ! अभी खाना खाकर शाम तक सोने का इरादा है।"

बड़ा जमादार प्रणाम करके जा रहा है। बाकी चारों कुर्सियाँ भी खाली हो गईं।

खाना वक्त पर नहीं आया, आधा घण्टा देर हुई। यह देर-अबेर तो लगी ही रहेगी। सारी जिन्दगी थोड़े यहाँ गुजारना है। हद से हद चार-छः महीने तक मुकदमा चलेगा। फिर या तो छूट जाएँगे या किसी और जेल में भेजे जाएँगे सजा काटने के लिए।

हमारे सुख और सुविधा के लिए कमेटी ने जो रुपया भाड़ा देकर बाहर एक मकान लिया है। आराम और मटरगश्ती के सिलसिले में मठ वाले बाबा के नाम पर जितना खर्च करें, थोड़ा ही है। यह मठ यानी जमनिया का महन्थी दरबार इस बाबा की ही सृष्टि है। यह कोई पुराना धर्म-स्थान नहीं है। किसी पुराने महन्थ या धर्माचार्य ने यहाँ गद्दी की स्थापना नहीं की थी। यह सारा नक्शा इसी बाबा का खड़ा किया हुआ है। कुल जमा बारह वर्षों का वक्त लगा है। इसी में जमनिया के बाबा

की हरियानी जिले-भर में मशहूर है। इस वर्ष शायद दूसरे कुएँ में भी बिजली लग जाय। यह सब भगौती और लालता की हिम्मत पर निर्भर करता है। ये अगर बाबा को इस मुकदमे से बरी करवा लेते हैं तो मठ का नुकसान नहीं होगा। अगर बाबा को साल-दो साल के लिए सजा हो गई है तो मठ की इज्जत को भारी धक्का लगेगा।

कल शाम को लगभग छ बजे इमरितिया को हवालात से बाहर निकाला गया। भगौती उसे रिक्शे पर ले गए। शायद, अभी कुछ दिनों तक इमरितिया टाउन में ही रहे। क्या बुरा है? मकान ले ही लिया गया है। खाना पकाने के लिए एक बाभन देवता की भी बहाली हो चुकी है। मुकदमे के चलते भगौती और लालता को बार-बार शहर आना पड़ता है। फिर क्या दिक्कत होगी इमरितिया को? हाँ, जेल की ऊँची-ऊँची दीवारों के अन्दर उसकी तबीयत इधर बुरी तरह घुट गयी होगी। जर्मनिया लौट जाने से उसके दिल को भारी तसल्ली मिलेगी। शहरातू छोकरी होती तो शायद रह भी जाती।

मुकुल ने बतलाया है, कल से बाबा समाधि पर बैठेंगे। तीन दिन तीन रात ध्यान लगा रहेगा। कोई मिल नहीं सकेगा। खाने के लिए फलों की व्यवस्था रहेगी। दूध-दही चलेगा। परदे की आड़ से थाली अन्दर खिसकाकर रख दी जाएगी। दूध-दही के कटोरे, पानी का लोटा, शहद की बोतल - सब चीजें इसी तरह परदे से अन्दर की ओर बढ़ा दी जाएँगी। इस अरसे में कोई मिलने नहीं पाएगा।

जर्मनिया में पन्द्रह-पन्द्रह दिनों के लिए बाबा की समाधि लगती थी। मुझे छोड़कर किसी को अन्दर नहीं जाने दिया जाता था। यहाँ भी मेरी जरूरत पड़ सकती है। लेकिन नहीं, बाबा अकेले ही काम चला लेंगे। सेल जितनी छोटी जगह में साधना नहीं चल सकती। इसी से अब तक यहाँ जेल के अन्दर बाबा की समाधि नहीं लगी। इतने दिनों के बाद अब वहीं उनके लिए एक अच्छी जगह खाली की गई है। आज शाम तक बाबा पोलिटिकल वार्ड वाले कॉटेज में चले जाएँगे। उसमें दो बड़े-बड़े कमरे हैं, बरामदा है और छोटी-छोटी तीन कोठरियाँ अलग हैं, रसोई आदि के लिए। पखाना है, नहाने की कोठरी है। आगे आँगन है, पीछे

मगोची है। कुल मिलाकर बड़ी अच्छी जगह है। बाबा को यहाँ आराम रहेगा।

यह कॉटेज अंग्रेजी अमलदारी में उन स्वराजी नेताओं के लिए तैयार हुआ था जो बड़े खानदान या ऊँची हैसियत के होते थे। इस कॉटेज में कृपलानी जी रखे गए थे। सच्चिदानन्द सक्सेना और किदवई साहब भी इसमें रह चुके हैं। बड़े जमादार के पास इस कॉटेज की ढेर-सी सारी कहानियाँ सुरक्षित हैं। कोई भी उन्हें सुन सकता है।

मैं चाहता तो बाबा के साथ कॉटेज में आराम से रह सकता था। लेकिन मैं कॉटेज में बाबा के साथ नहीं रहूँगा। जेल वाले मन ही मन हँसेंगे और आपस में कानाफूसी करेंगे। कहेंगे कि मस्तराम पेटू है, इसकी साधुअई जीभ पर टँगी है। खाने-पीने की चीजों पर हाथ साफ करने के लिए बाबा से चिपका हुआ है। इस तरह की बातें कैदियों में भी होंगी, सिपाही लोग भी इसी तरह की बातें करेंगे! मस्तराम सब समझता है। वह बाबा की टहलदारी के लिए तैयार है। लेकिन इस तरह की बातें वह नहीं सुनेगा।

मैं, यानी मस्तराम बैरागी, अक्खड़ जरूर हूँ, भुक्खड़ नहीं हूँ।

यहाँ जेल के अन्दर देख रहा हूँ कि एक प्याज के लिए लोग जान देते हैं, छोटी-सी हरी मिर्च कैदियों का ईमान डिगा देती है। किसी को तुम मिस्री की डली दिखला दो, वह दुम हिलाने लगेगा। आधा गिलास छाछ हासिल करने के लिए यहाँ महाभारत मच जाता है…ऐसी हालत में अब बाबा के साथ कॉटेज के अन्दर कौन रहना चाहेगा?

मैं अगर कभी बाबा के पास जाऊँगा भी तो काम करके तुरत-फुरत लौट आऊँगा। एक गिलास पानी भी वहाँ नहीं पिऊँगा। वहाँ, जमनिया में, मठ के अन्दर और बाहर भी कोई कमी नहीं रहती थी। दूध-दही, मेवा-मिष्ठान, फल-फूल ढेरों मिलते थे। सूती और ऊनी कपड़े एक से एक सुलभ थे, लेकिन मस्तराम हमेशा संयम से काम करने का आदी रहा है।

एक बार झरिया का एक गुजराती सेठ आया। उसने बाबा को पाँच सौ रुपये की सफेद ऊनी चादर ओढ़ा दी। अगले ही दिन इमरितिया

पशमीने की वह चादर मेरे सामने ले आई। बोली—"बाबा का हुकुम है, मस्तराम, यह चादर तुम्हें ओढनी ही पडेगी !" मैंने उसे वापस भेज दिया। बाबा नाराज हुए तो आठ-दस रोज मुझसे बोले नही। लेकिन, मैं भी डटा रहा। मेरी दलील ऐसी लचर नही थी कि उसे कोई हँसकर उडा देता ।

सेवक और शिष्य की भी एक मर्यादा होती है, छोटे भाई और बेटे, भतीजे की भी एक मर्यादा होती है। आप अपने इस्तेमाल की चीजें तरग मे आकर सेवक, शिष्य, पुत्र, अनुज को दे डालते है और वह बे-झिझक अपने लिए उसका उपयोग शुरू कर देता है। लोगो मे कानाफूसी होने लगती है—इन लोगो का धन्धा ही यही है। मस्तराम जैसे फक्कड साधू पर कोई महन्थ खुश हो और खुशी की झोक मे आकर हजार रुपये वाली अपनी कलाई घडी उतारकर मस्तराम की कलाई मे बांध दे तो मस्तराम क्या करेगा ?

मस्तराम यही करेगा कि वह कलाई-घडी खोलकर महन्थ जी के सामने रख देगा, हाथ जोडकर कहेगा—"महाराज, सौ-पचास की होती तो अपने काम की होती। यह तो अपने काम की नही है ! महन्थ अगर समझदार होगा तो दुबारा जिद नही करेगा। वह चुपचाप अपनी कलाई घडी वापस ले लेगा।"

बाबा कल से समाधि लगाएँगे। बडे जमादार बाबा की सेवा-टहल के लिए दो-तीन पुराने कैदियो को बाबा की सेवा मे बहाल कर चुके है। जिलाधीश से बाबा को इस प्रकार शाही कैदी की तरह रहने की विशेष अनुमति मिली है। बाबा चाहे तो अब रोज भण्डारा दे सकते हैं, पूजा-पाठ, भजन, आरती सब कुछ मठ की तरह चल सकता है।

चल तो सकता है सब कुछ, मगर जमनिया मे लाकर आखिर कितनी रकम खर्च की जा सकती है यहाँ पर ? हाँ, यह हो सकता है कि यहाँ टाउन के अन्दर बाबा के नाम पर दस-बीस सेठ तैयार हो जाएँ ! और, लगता है, यही होगा। भगौती ने समझ-बूझकर ही तो मकान लिया है भाडे पर। मुकुल बता रहे थे कि शेर छाप गेरुआ झण्डा उस मकान की मुडेर पर फहरा रहा है। यह शेर छाप गेरुआ झण्डा जमनिया के महन्थो

दरबार का काम अपना धन्धा है। मैं अपना काम कर रहा हूँगा। बाबा ने भी अपनी साधना शुरू कर दी है।

भगौती गुरु को मन की समझता है। समझता है, इस मस्तराम को क्या चाहिए ? चरस, गाँजा, मस्ती के लिए और दो-एक सामान'''खाने के लिए तर माल ''और क्या चाहिए मस्तराम को ? भगौती मुझसे बहुत सारी बातें छिपाए रहता है, लेकिन काम की बातें मेरे कानों तक आ ही जाती हैं।

कहते हैं, मुकदमा चार महीने तक चलेगा। ज्यादा भी जा सकता है। कितना भी जोर लगावें भगौती और लालता, छुटकारा तो नही ही मिलेगा। साल-छ महीने की सजा हो के रहेगी। अभी तो खैर केस ही नही खुला है। दस-पन्द्रह दिनो के अन्दर पहली पेशी होने वाली है। उस साधू की तरफ से काफी जोर लगाया जा रहा है। गवाह खोजे जा रहे हैं। चन्दा उगाहा जा रहा है। वकील कागज-पत्तर ठीक कर रहे है। तो हमारा भगौती भी बैठा नही है। वह काफी दौड़-धूप कर रहा है। भगौती और लालता के रिश्तेदार लखनऊ और दिल्ली तक सरकारी दफ्तरो मे अड्डा जमाए हुए हैं। सिफारिश और पैरवी मे कमी नही होगी।

उस साधू की पीठ का फोटो लखनऊ मे छपा है। डाक्टर ने दवा लगाकर ड्रेसिंग कर दी थी और समूची पीठ का फोटो ले लिया गया था। वही अखबार मे छपा है। हमे जेल के छोटे बाबू ने बताया है। कह रहे थे—"चेहरे की तरफ से फोटो छपा होता तो हम आपके लिए वह अखबार लाइब्रेरी से मंगवा लेते। पीठ देखकर क्या कीजिएगा ?"

हाँ पीठ देखकर कोई क्या करेगा ! लेकिन यह तो है ही कि वह कोई मामूली साधू नही है। उसकी भी पहुँच लखनऊ तक है, वर्ना कौन किसकी पीठ का फोटो छापता है। पिटाई खाने के बाद सीधे जिला कचहरी हाकिम के सामने खडा हो गया ! जाहिल-जपाट होता तो इतनी कहाँ से आती।" जरूर वह पढा-लिखा साधू होगा। बी० ए०, एम० ए० पास, दुनिया-जहान घूमा हुआ। पडोस के जिले मे गरीबो और खेत-मजदूरो के लिए उसने जमीदारो से लोहा लिया था।

ंगा सुना है। इसका मतलब तो यही हुआ कि वह साधु भले हो, लेकिन होगा लीडर टाइप का वहियल इन्सान। जरूर ही जान-बूझकर हमारे हाथो वह इतनी पिटाई खा गया, हमे अपनी मस्ती का सबक सीखने का मौका दे गया।

सब पढ़-लिख जाएँगे और आराम का जीवन बिताने लगेंगे और गाँव-गाँव के अन्दर सुख और सम्पदा के सामान सुलभ होंगे और अपनी-अपनी मेहनत का कई गुना फल लोगो को हासिल होने लगेगा, फिर बाबा के दरबार मे आशीर्वादी बेंत की फटकार खाने के लिए क्यो कोई आएगा ?

"आइए सुकुल जी ! आपको देर हो रही थी, मैने छान ली है। आपके लिए रख छोडी है। काली मिर्च खतम हो गई थी। कल आ जाएगी। लीजिए आज फीकी ही छानिए !" मेरी यह बात सुनकर सिपाही रामसुभग सुकुल दाँत निपोडकर मुस्कराने लगता है। कहता है—"सवेरे ही बतला दिया होता तो आ गई होती ! नही आई होती ?"

"अरे सुकुल जी, मै भारी भुलक्कड आदमी हूँ। लेकिन बिना काली मिर्च के भी भग बुरी नही लगती है। लगती है बुरी ?"

"बुरी तो नही लगती है, फीकी जरूर लगती है।"

"तो, फीकापन अपने आप बुरा नही हुआ ?"

सिपाही रामसुभग सुकुल भभाकर हँसता है। सेल के अन्दर एक ईंट पर कोने मे साखू के पत्ते का दोना दिखाई दे रहा है। दोने मे भग की गोली है।

सुकुल को मालूम है। वह चार कदम सेल के अन्दर जाकर दोना उठा लाता।

अब वह कुएँ का ताजा पानी लाएगा। आधा लोटा पानी गटक जाएगा भग की गोली के साथ। दो मिनट बाद सुकुल को हल्की डकार आएगी। अब वह पाकिट से तम्बाकू-चूना निकालकर हथेली पर उसे आधा घटा तक मसलता रहेगा और हमारी बातचीत चलती रहेगी।

सुकुल की यह अदा मुझे अच्छी लगती है।

पिछली शाम को बहुत जोरो से नारे लगते रहे। थोडी देर बाद

लाठियाँ चलीं। चीनी मिल के हड़ताली मजदूर हवालात में हैं। जब से आए हैं, हल्ला-गुल्ला मचाए रहते हैं। परसों उन्होंने रसोइये के चेहरे पर दाल का कटोरा उछाल दिया था। पुराना कैदी सेवा के लिए दिन-रात उनके बाड़े में तैनात रहता है। बेचारे पर चप्पलों की मार पड़ी। चेहरा सूज गया है। जेल के अस्पताल में पड़ा है।

कल शाम को हड़ताली कैदियों ने जेलर को गालियाँ दीं। बड़े जमादार से कहा—"अपने साहबों को कह दो, हमारे लिए दो रोज के अन्दर ही ऊनी कपड़ों का इन्तजाम करें।"

कई दिनों से सिपाहियों और जेल-अधिकारियों के अन्दर इनके खिलाफ गुस्सा उमड़ रहा था। कल आखिर लाठियाँ चल ही गईं। दो मजदूर कैदियों को रात ही जेल के अस्पताल में पहुँचा दिया गया। चोट, एक के, तो कम लगी है, लेकिन दूसरे का कपार फट गया है। जाने कहाँ से पत्थर मँगवा लिये थे! कहते हैं, दो सिपाहियों को पत्थरों की चोट लगी। एक के कन्धे पर जख्म हो गया है। अब चार-छै-दस रोज तक इनकी भूख-हड़ताल चलेगी। नाक में नली डालकर दूध और अण्डों का घोल अन्दर पहुँचाने की नौबत आ भी सकती है और नहीं भी आ सकती है। मजदूरों के नेता लोग राजनीति के मँजे हुए खिलाड़ी हुआ करते हैं। वे अपनी पार्टी के इन कैदी साथियों की रक्षा के लिए कोई न कोई तरकीब जरूर भिड़ाएँगे। अव्वल, इन्हें जेल में रहने ही नहीं देंगे। नहीं, जेल में रहना ही पड़ा तो जेल वालों से काफी ज्यादा रियायतें हासिल करके रहेंगे।

लेकिन हमारी तो जेल वालों से कभी अनबन नहीं हुई। एक बार भी नहीं। कहने को भी नहीं···हाँ, जिस रोज हम हवालात के अन्दर आए, उसके अगले दिन सवेरे जब बाबा की जटाएँ उतरने लगीं तो बड़े जमादार को मन-ही-मन अन्देशा हो रहा था कि मैं कहीं चार तमाचे लगाकर हजाम को खदेड़ न दूँ!

पारसी हाकिम का हुकुम था और बाबा ने इस पर शान्ति धारण कर ली थी। फिर मस्तराम नाहक क्यों खुराफात खड़ी करता? मस्तराम गधा नहीं है। मस्तराम आदमी है।

तो, बेटा, तुमने उस साधू को उतनी बेरहमी से क्यों पीटा ? जानवर ही जानवर पर उस तरह हमला करता है। तुम उस रोज हैवान बन गए थे न ?

अपने जिस जटाधारी बाबा की इज्जत और प्रतिष्ठा के आडम्बर की रक्षा के नाम पर तुमने बेत फटकारने की वह तत्परता दिखलाई थी, बाबा की जटाएँ उतरते वक्त वह कहाँ थी ?

यानी, कभी-कभी तुम इन्सान नहीं रह जाते हो मस्तराम ! तुम्हारी हैवानियत कभी-कभी जोर मारती है। अपने पर तुम्हारा कोई काबू नहीं रह जाता है और अपनी इस कमजोरी को तुम धरम, गाँजा और भंग के नशे मे गर्क किए रहते हो !

यानी तुम्हारा मस्तराम नाम ठीक नहीं है। तुम नकली मस्तराम हो। सच्चे मस्तराम होते तो बाबा की जटाओ को कोई उतार नहीं सकता था !

हाय, उन जटाओ की कैसी हिफाजत तुमने की थी ! नारियल का कै टीन तेल उन जटाओ को तुमने पिलाया होगा ! उतना प्यार, उतना जतन, उतनी ममता ! दिलदार माली जिस तरह गुलाब की झाड़ियों पर अपनी जान निछावर किए रहता है, उसी तरह तुमने बाबा के सिर पर सलोनी जटाओ की वह प्यारी-प्यारी लच्छियाँ नहीं उगाई थी ?

मस्तराम, उन जटाओ पर हजाम की कैंचियों का वह हमला आखिर कैसे तुमसे देखा गया ?

मस्तराम, या तो वे जटाएँ झूठी थी, या तुम झूठे हो ! या तो वे जटाएँ नकली थीं या फिर तुम नकली हो !

आज पहली बार जेल के अन्दर मेरे माथे मे दर्द उठा है। रात का खाना नही खाऊँगा। आज भंग भी नही छनेगी — विनम्र की सदस्यता लो चाहिए आज तो। सजीवन यहाँ से वहाँ पहुँच जाता तो विनम्र साथ होती। रात को वह अपने साथियों के साथ पुराने वार्ड मे रहता है। सबेरे उसे खबर मिल जाती तो अब तक आ गया होता। और आज शायद गुहुम भी न आएँ सबेरे हमला हुए थे। बिरादरी के बोझ से कहीं भागा था रहे।

इधर पाँच-सात दिनों से मन ही मन चलती है, सिवा मन के और कुछ है नहीं यहाँ! न रहे साथी, मन तो नहीं जाएँगे। मनराम क्या बगैर पास-साथी के नहीं रह सकता? इतनी हेरा-फेरी! हमेशा के लिए यह इन्हें छोड़ दे सकता है। मनराम का कुछ नहीं बिगड़ेगा, कुछ नहीं।

"क्या बात है?" मैं मन्नी से पूछता हूँ। वह मुस्कुराकर रह जाता है। सांवली सूरत वाले इस मेहतर की आँखें बड़ी सुन्दर हैं। नाक-नक्श भी अच्छे हैं। बोलता कम है। 'हाँ-ना' की मुद्रा में माथा हिला-हिलाकर बातों का जवाब देता है, या फिर भौंहे या उँगलियों के इशारे उसके मतलब जाहिर करते हैं। सुबह भी आता है, शाम को भी आता है। कुछ पूछता हूँ तो थोड़े में जवाब देता है।

अभी शाम को, और दिनों के कुछ पहले ही आया है। मैं पूछता हूँ—क्या बात है?

"सरकार, आज रात को बिरहा सुनने का प्रोग्राम है। शाम को क्वार्टर की रखवाली करनी पड़ेगी। छोटी बच्ची को सर्दी-जुकाम हो गया है। उसकी माँ हकीम से दवा लेने जाएगी। आएगी तब खाना पकेगा और तब खा-पीकर बिरहा सुनने के लिए मैं पुलिस लाइन के दूसरे छोर पर जा सकूँगा।"

"सारी रात सुनेगा?"

"सारी रात चलेगा तो सारी रात सुनूँगा महाराज।" सेल से बाहर निकल कर यों कहता है—"सुना है, तीन रात तक चलेगा…एक बार मैंने दस रातों तक लोरिकायन सुनी थी।"

"लोरिकायन न हुई, रामायण हो गई साली! दस रात चली थी?" मुझे भारी अचरज होता है। पूरब का रहने वाला होता तो नहीं होता अचरज! लेकिन मैं तो पंजाब में पैदा हुआ था। उधर बिरहा और लोरिकायन नहीं चलते हैं, चलता है—हीर-राँझा। मैंने बचपन में सारी-ारी रात हीर-राँझा के गीत सुने हैं। अब इधर मुझे भी एकाध बार

न सुनना चाहिए। जेल के बाहर निकलूँगा तो सुनूँगा।

…ो बीवी क्यों नहीं आएगी लोरिकायन सुनने? उसे क्यों नहीं

… साथ? छोटी बच्ची बीमार न होती तो मिलकर तीनों

लोरिकायन सुनने जाते । नही भी जाते, क्या पता ! इधर पूरब के जिलो मे मर्द और औरत एक साथ गाना-वाना सुनने नही जाते हैं । मेले-ठेले मे, नहान मे, हाट-बाजार मे स्त्री-पुरुप अलग-अलग दिखाई पडते हैं इधर। छोटी जाति की औरते खेत-खलिहान मे काम कर लेती है, यही क्या कम है ?

इसकी तो बीबी भी यहाँ जेल मे ड्यूटी करती है। उसी की मेहरबानी से हमे इमरितिया का हाल-समाचार मालूम होता था'''।

सेल के अन्दर पाखाना वाला मिट्टी का यह गमलानुमा बर्तन बदल चुका है। इस बर्तन को सुबह और शाम आकर वह बदल जाता है । धो-पोंछकर और फिर से फिनायल का जरा-सा घोल इस बर्तन मे डाला जाता है । अब, इतने दिनो बाद फिनायल की गन्ध मुझे अच्छी लगने लगी है। पहले दो-चार दिनो तक लगता था, सवेरा होने से पहले ही यह माथा कई टुकडो मे फट चुका रहेगा । धीरे-धीरे फिनायल हमे सहज होती गई। अब तो बिल्कुल नही अखरती। इसी तरह पहले-पहल पेट्रोल की गन्ध से भी भडकता था। वह तो और भी तेज होती है। मैं कुम्भ के मेले मे कई बार प्रयाग जाकर दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह दिन रहा हूँ । पेट्रोल की तेज तीखी दुर्गन्ध के कारण वहाँ सगम के पास, किले के नजदीक दौडने वाले मिलिट्री ट्रकों को हमेशा मैं कच्ची गालियाँ सुनाया करता था। लेकिन, जिन्हे रात-दिन कारो, बसो, ट्रको, स्कूटरो या कारखाने के अन्दर इजनो के साथ रहना पडेगा, उनके लिए पेट्रोल की गध दुर्गन्ध नही, सहज सुगन्ध हो जाती होगी। उनकी साँसो को पेट्रोल की भाप या धुआँ बडा ही अच्छा लगता होगा। हमे भी फिनायल अब अच्छी लगती है।

जी मे आता है कि इससे पूछूँ'''तुझे तो पाखाने की बदबू बुरी नही लगती होगी ? अच्छी तरह जानता हूँ, इस सवाल के जवाब मे यह आदमी कुछ कहेगा नही, दाँत निपोड कर हँसता रहेगा ।

भला हो अग्रेज बहादुरो का, जिनकी अमलदारी मे फिनायल का चलन हुआ। हिन्दुस्तान के लाखोलाख भगी और मेहतर फिनायल का इस्तेमाल करके निहाल हो उठे। अग्रेजो की अमलदारी मे उन्हे पहली बार अपने

देश के बड़ी जाति वालों की अन्दरूनी दुर्गन्ध का पता चला होगा। फिनायल जैसी दुर्गन्ध-नाशक दवा से भंगियों-मेहतरों को जितना अधिक लाभ पहुँचा, उतना कबीर और रैदास की ठंडी-मीठी वाणी से भी यदि पहुँचा होता !

सिपाही रामसुभग सुकुल कभी-कभी बासी अखबार ले आते हैं और यहाँ बैठकर प्रेम से पढ़ते रहते हैं। मेरा मूड देखकर बीच-बीच में दो-एक खबर मुझे भी सुनाते हैं। परसों एक समाचार था—बिहार के अन्दर मुंगेर जिले में हजारों हरिजन इस वर्ष ईसाई हो गए। सूखा-संकट के चलते, उनकी हालत बदतर हो गई थी। ईसाइयों ने इतनी अच्छी तरह उनकी सहायता की कि उन्होंने ईसामसीह के चरणों में अपना-अपना जीवन अर्पित कर दिया है···

यह समाचार सुनकर मेरे अन्दर एक अजीब-सी खलबली मची। मैंने बार-बार अपने को समझाना चाहा, लेकिन बेचैनी खत्म नहीं हुई। परसों और कल और आज जितनी बार यह भंगी मेरे सामने आया है, यह बेचैनी उबाल खाने लगी है। तबियत में आयी है कि पाखाना साफ करने वाले इस आदमी को मैं भटका दूँ, कह दूँ—जा, तू भी ईसाई बन जा! अगर ऊँची जात वालों की विष्ठा से छुटकारा चाहता है तो महाप्रभु ईसामसीह की छत्रछाया में चला जा! मेरे कहे मुताबिक अगर तू ईसाई हो जायेगा तो फौरन तेरी तकदीर ऊँची उठ जायेगी, तेरा गोत्र ऊपर उठ जायेगा, तेरे बाल-बच्चे कान्वेंट में मुफ्त शिक्षा पाने लगेंगे। डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, लीडर, क्रिकेट और फुटबाल के चैम्पियन और जाने क्या-क्या बनेंगे तेरे बाल-बच्चे ! फिर किसी की हिम्मत नहीं होगी जो तुमसे भंगी-मेहतर का काम ले। रैदास जैसे सन्तों की अमृतवाणी सदियों से तू पीता आया है, अब गोता लगाना बनो तब ईसाइयों की भी अमृतवाणी का आनन्द में !

बार-बार मेरा जी करता है, मैं इसे भटका दूँ। मैं ऊँची जात वालों के खिलाफ इतना जहर भर दूँ इसके अन्दर कि—

"क्या नाम है तेरा ?"

"अमरती !"

पूछता हूँ, फौरन मालूम हो जाता है नाम और कितना अच्छा नाम है असरफी ! असरफी यानी सोने की मोहर। असरफी यानी वह कीमती सिक्का जिसको जमनिया के बाबा गिन्नी कहते हैं। बाबा कभी-कभी वह अँगूठी पहनते हैं, यानी लालता प्रसाद परब-त्योहार के दिनों में बाबा को कीमती लिबास पहना कर तैयार करता है। उन दिनों बाबा के दाएँ हाथ की मँझली उँगली को लालता प्रसाद खास तौर पर गिन्नी वाली अँगूठी पहनाता है। बाबा की अंगूठी में लगी हुई उस असरफी को इस असरफी ने नहीं देखा है। कभी नहीं देखेगा···

'तेरे बाप का नाम क्या था ?'

"हीरा।"

जरूर ही यह अपने बेटे का नाम मोती या पन्ना रखेगा। गरीब से गरीब आदमी अपने लड़कों के नाम लक्ष्मी दास, सोने लाल या मूँगा-मल और चाँदीराम रखता है। मन का दरिद्र कोई नहीं होता। लेकिन नामों में क्या रखा है। असरफी और इसका बाप हीरा मरी की कुट्टी से कभी छुटकारा नहीं पा सका।

कहते हैं, इस देश में मुसलमान आये तो छोटी हैसियत के हजारों हिन्दुओं ने इस्लाम कबूल कर लिया। इस तरह उन्हें बड़ी जाति वाले हिन्दुओं की घरेलू गुलामी से छुटकारा मिला। हमने यह कभी नहीं सुना कि मुसलमान या ईसाई कहीं हिन्दू बने हों।

मुसलमान और ईसाई क्यों हिन्दू बनने लगे ? इन्हें क्या मिलेगा हिन्दू बनने से ? क्या है हिन्दुओं के पास जो वे इनको देंगे ?

है तो बहुत कुछ। काफी कुछ है हिन्दुओं के पास। करोड़ों, अरबों की सम्पदा एक-एक सेठ के पास है, लेकिन गरीब और पिछड़े हुए हिन्दू, जंगलों और पहाड़ी इलाकों में मुट्ठी-भर अनाज के लिए तड़प-तड़प कर मर जाएँगे, महासेठ का दिल नहीं पिघलेगा।

मैं भड़का दूँ तो असरफी ईसाई बन जाएगा ? बाप का धर्म छोड़ देगा ? नहीं, नहीं छोड़ेगा। हाँ ? इसकी अपनी बिरादरी का कोई ईसाई बन जाए और वह आकर इसको बार-बार समझाए, तब शायद असरफी कुछ सोच सकेगा। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है !

कहता है, अब भी इमरतिया मठ वालो को नफरत की निगाहो से देखती है। मेरा जी कहता है, इमरतिया आजीवन कैदी की सजा नही भुगतेगी। काश, कोई माई का लाल इमरतिया को जमनिया से भगा ले जाता और हमेशा के लिए बेचारी आजाद हो जाती।

बूटो की आवाज सुनकर मैं उचक कर देखता हूँ।

बडे जमादार सामने मुस्कुरा रहे हैं।

"आज शाम को, सात बजे बाबा ने लोगो को दर्शन दिये। समाधि पूरी हुई। छत्तीस घटे का मौन था। बारह घटे की समाधि थी। दिन-भर लोग दर्शन करने के लिए आते रहे, शहर के तीन-चार सेठ भी थे। जेल का पूरा स्टाफ समाधि मे बाबा को देख गया है। बी-डिवीजन के चारो बाबू-कैदी आए थे। उनमे से दो ने बाबा के चरणो का स्पर्श किया। मस्तराम बाबा, आपको भी बडे बाबा का दर्शन करने जाना था।"

"इतने सारे लोगो ने बाबा के दर्शन किये। मैं यही से बाबा को देख रहा था। हाँ, इसी सेल मे बैठे-बैठे सब कुछ देखता रहा हूँ। बाबा ने नागपुरी रेशम का पीताम्बर-परिधान धारण किया था। ललाट पर चन्दन और भस्म का टीका। गले में खिले हुए गुलाबो की माला। काले कम्बल का आसन रहा होगा। धूपबत्तियाँ जल रही होगी। पास मे पीतल का कमण्डल होगा। पीछे बाबा के खडाऊँ होगे, हाथीदाँत की तराशी हुई खूँटियो वाले। एक ओर जरा हटकर दो चटाइयाँ बिछी होगी। दर्शनार्थियो को प्रसाद मिला होगा। समाधि के बाद बाबा ने खीर ली होगी।"

"आपको तो सब पता है," बडे जमादार ने हँसकर कहा—"आप बाबा का सारा हाल जानते है। जिन्दगी-भर साथ रहे है। आपसे बढ़-कर कौन जानेगा बाबा के बारे मे ?"

मैं बिना कुछ कहे गम्भीर हो उठता हूँ और फिर मुस्कुराने लगता हूँ। मेरे लिए भी कटोरे मे खीर आई थी शाम को। बाबा ने भिजवाई थी। वह खीर मैंने असरफी को दे दी। बेचारा भगी पहले तो सकपका गया। उसे लगा, बाबा मस्तराम यह खीर उसे भग के नशे मे दे रहा है। यो भला भंगी को कौन खीर देता है ! बेचारा नही ले रहा था।

बड़ा जमादार भी खानदानी ब्राह्मण है। जरा-सा छेड़ दो, घंटा भर उपदेश छोड़ जायेगा। लेकिन इस वक्त मैं उपदेश या शिक्षा की बातें इससे नहीं सुनूँगा। अभी तो मैं यह जानना चाहूँगा कि दो वर्ष पहले जो साधु यहाँ जेल में रहे थे, वे किस अपराध में पकड़े गए थे।

बड़ा सिपाही साठ के लगभग का है। पेंशन की उम्र हो चुकी है। पाकिस्तानी आक्रमण के दिनों में पेंशन वाली उम्र की हद में कुछ छूट दी गई थी, एक्सटेंशन मिला था। बड़ा जमादार दस महीने बाद रिटायर होगा। तन्दुरुस्ती के लिहाज से वह कम से कम दस साल और अपनी ड्यूटी जमा सकता है।

वह मेरे मन की बात भाँप गया है। कहता है—"उस बार सभी साधु बेदाग छूट गए थे। एक को भी सजा नहीं हुई। अपराध भी मामूली था। माल गाड़ी के डिब्बों में लदकर सैकड़ों बूढ़े बैल पश्चिम से पूरब जा रहे थे। गोरखपुर स्टेशन के प्लेटफार्म पर उन साधुओं ने गोरक्षा के नारे लगाने शुरू किए। रेलवे पुलिस ने उन्हें वहीं गिरफ्तार कर लिया।"

"बस इतनी-सी बात थी?"

"हाँ, महाराज! यही कसूर था बेचारों का। उन्होंने बूढ़े बैलों की रक्षा के लिए नारे लगाए थे और धरना देने का इरादा था शायद। वे नहीं चाहते थे कि बूढ़े बैलों को लादकर मालगाड़ी आगे बढ़े।"

मुझे हँसी आ जाती है। देर तक मुस्कुराता रहता हूँ और फिर लेट जाता हूँ। आँखें मूँद कर ध्यान में उन सैकड़ों बैलों के बूढ़े ढाँचे देखने लगता हूँ। मालगाड़ी के बीसों डब्बे प्लेटफार्म पर खड़े हैं। एक-एक डब्बा दोनों तरफ से खुला है। ऊपर छत है, बीचोबीच प्लेटफार्म की तरफ आधा-आधा बन्द है और आधा-आधा खुला है। इन खुले दरवाजों से बूढ़े बैलों के कंकाल झाँक रहे हैं। चेहरों पर बड़ी-बड़ी आँखें चिपकी हुई हैं, सूखी और डरावनी आँखें। आदमी दुबला होता है तो उसकी आँखें धँसी होती हैं। गाय-बैल दुबले होते हैं तो उनकी आँखें बाहर निकल आती हैं। वे ढीली खुरदरी पलकों के दोनों छोर आँसू की लकीरों के बदरंग निशान, फूली हुई नसों में उलझकर और भी भद्दे लगते हैं। और भी वीभत्स। मैं अन्दर-ही-अन्दर उन निरीह निगाहों को पढ़ने

की कोशिश कर रहा हूं । लेकिन बाहर मेरी आँखें बन्द हैं।

बड़ा जमादार मान लेता है कि मैं अब सोना चाहता हूं। वह चलने लगता है । कहता जाता है—अच्छा मस्तराम बाबा, रात काफी हो गई है, विश्राम कीजिए ।

बूटों की आवाज कम होती जाती है । हाल ही सेलों वाले वार्डों के इन गलियारों में बजरी बिछाई गई है। बूटों की हल्की-से-हल्की आहट कई गुनी अधिक हो उठती है और जाड़े की रात के सन्नाटे को खरोंचती चली जाती है । उसी मिटती हुई आहट में मेरे कान इस तरह खो गए हैं कि बैलों की डरावनी आँखों का मनहूस चित्र तेजी से मिटने लगा है।

इमरितिया

परसो बाहर आई हूँ हवालात से।

ग्यारह दिन ऊँची दीवारो की उस तग दुनिया मे रहना बदा था।

मुकदमे की सुनवाई खत्म होगी, सब कुछ हो चुकेगा। बाबा और मस्तराम को सजा होगी, यह तो सभी कहते है। मुझे सजा होगी, यह कोई नही कहता!

अच्छा होता, साल-दो साल की कडी मशक्कत वाली सजा मैं भी काटती। कही कोई भारी अपराध करने का मौका हाथ लगता तो मैं बडी खुश होती! सच मैं बेहद खुश होऊँगी। मिलेगा मौका मुझे पाँच वर्ष जेल काटने का?

भगौती भी बतला रहे थे—"तुझे छुटकारा मिल जाएगा। तू दुबारा अब जेल का गेट नही देखेगी।" हुँह्! नहीं देखेगी जेल का गेट। इमरितिया को कौन रोक सकता है जेल का गेट देखने से! मजाल है भगौती का!"

"मा ा ा ा ा ल् कि न्!"

भीख माँगने वाली कैसे समझ गई कि मकान मे रहने के लिए कोई औरत आ गई है? ओ ऽ ऽ ऽ, ऊपरी तल्ले की बाहरी रेलिंग से गेरुआ साडी लटक रही है। सूख चुकी होगी। वही देखकर भिखारिन ने आवाज दी है—"मालकिन!"

यह 'मालकिन' कानो को बुरा नही लगना चाहिए न? लेकिन मुझे बुरा लग रहा है। लगेगा नही बुरा? जरूर लगेगा। सौ बार लगेगा!

बाबाजी, भिखारिन को कुछ दे दो।

उधर से किसी की आहट नही पा रही हूँ। बाबाजी, यानी रसोइया

महाराज इस वक्त कहाँ क्या होगा ?

क्या होगा नरोत्ता के मकान में अपने दोस्तों से मिलने। तीन-चालीस परिवार बंगालियों के हैं। इन परिवारों में खाना पकाने के लिए महाराज बोल रहे हैं। दुपहर में, बारह से लेकर चार बजे तक इन महाराजों की अपनी अलग चौकड़ी जमती है। लेकिन हमारा महाराज बोर हो जाता है। कहीं और क्या होगा।

उठकर भण्डार वाली कोठरी में जाती हूँ। दो मुट्ठी चावल लाकर भिखारिन को देती हूँ। बदले में दुआ मिलती है—"बिटिया, तुम्हारी गोद भरे!"

ओठों में शब्द रुक जाते हैं। मुझे चाहे कैसी लगती है भिखारिन की यह दुआ! तबीयत होती है, चीखकर कहूँ—"नहीं, मुझे नहीं चाहिए तेरी दुआ, अपनी ही याद कर लेना इस दुआ से…"

लेकिन कुछ कह नहीं पाती हूँ। अन्दर वाली कोठरी में आकर बिस्तरे में धँस जाती हूँ, पायताने की तरफ रखी हुई रजाई को अपने बदन पर खींच लेती हूँ। लेटे-लेटे भिखारिन के बारे में सोचती रहती हूँ…उस औरत में और मुझमें क्या फर्क है ? मैं भी दूसरों का दिया हुआ खाती हूँ। वह भी दूसरों का दिया हुआ खाती है। उसकी ही तरह मेरा भी कोई अपना नहीं है। क्या पता, इस औरत का अपना कोई हो और यह भी अलग कहीं भीख माँग रहा हो ! हाँ, एक बात है। इसे रोज-रोज भीख माँगना पड़ता है, लेकिन मैं कहीं किसी के दरवाजे पर मालिक या मालकिन को पुकारने नहीं जाती हूँ। मैं लम्बे अरसे के लिए पालतू बना ली गई हूँ। चाहूँ तो हमेशा के लिए इसी तरह का जीवन गुजार सकती हूँ। फिर भी लगता है, उस भिखारिन में और मुझमें कोई खास अन्तर नहीं है।

उल्टे वह मुझसे कहीं अधिक सुखी है। आजाद होकर जहाँ-तहाँ घूमती है। चाहे जहाँ जिस किसी औरत या मर्द से खुलकर बातचीत करती होगी। जितने आँसू इन गालों से होकर बहे हैं, उतने आँसू उस भिखारिन ने नहीं बहाये होंगे। उसका अपना बच्चा होगा, बच्ची होगी। उन्हें जी भरकर वह प्यार करती होगी। निराशा या उदासी का ज्वार

ही देर रहे थे । यह बाबाजी, लगता है, परसों एक बार भी मेरी तरफ आँख उठाकर देख नहीं सका ।

कल सबेरे हमने पूड़ियाँ तली थीं । आलू और मेथी के साग की सूखी सब्जी में नमक डालना भूल ही गया था । आलू का एक टुकड़ा मैंने मुंह के अन्दर डाला । जोर से हँसी छूटी । महराज की समझ में नहीं आया । मुझे फिर-फिर हँसते देख कर वह मुस्कुराने लगा, पूछा—क्या हुआ माई जी ? काहे तब से हँस रही हैं ?

"आलू मुँह में डालकर देखो, पता चल जाएगा !" फिर मैंने कहा—"सारा नमक इसी में डाल दिया है तुमने !"

रसोईघर के अन्दर जाकर वह आलू का टुकड़ा कड़ाही से उठा लाया । मेरे सामने चखकर देखा और लजीली हँसी से उसके गाल जगमगा उठे । उसे अपनी भूल का पता चला और मुझे यह पता चला कि महराज दाढ़ी रोज बनाता है और अपनी खूबसूरती की तरफ से लापरवाह नहीं है ।

जरा रुककर अपराधी की तरह वह बोला—"माईजी, कई वर्षों के बाद आज इस तरह की गलती मुझसे हुई है ।"

"कोई बात नहीं," मैंने कहा—"गलती किससे नहीं होती ?... अच्छा, देखो मेरे लिए पानी गर्म कर दो । अच्छी तरह नहाना चाहती हूँ ।"

हाँ, बारह-तेरह रोज हो रहे थे मुझे नहाये हुए । जेल के अन्दर जनाना वार्ड में पानी की बेहद किल्लत थी । किसी तरह पीने-भर को पानी मिल जाता था । निबटने और हाथ-मुँह धोने के लिए पुराने कुएँ का खारा पानी मिलता था । खाने के बाद थाली कटोरा धोने के लिए भी वही पानी । इन्हीं दिनों में मुझे मासिक धर्म भी हो गुजरा । सफाई के अभाव में तबीयत दिन-रात भिनकती थी ।

महाराज ने घण्टाभर बाद पानी गर्म कर दिया । और कल मैं देर तक नहाती-धोती रही । पानी का सुख भी क्या सुख होता है !

भगौती ने अच्छा मकान किराये पर लिया है । इसमें हवा, पानी, बिजली, छत, आँगन सब कुछ है । सुभीता-ही-सुभीता है । हर

मौसम मे यह मकान अच्छा रहेगा।

लेकिन हमे क्या करना है ! महीना-दो महीना रह लेंगे, वही काफी होगा। बयान हो चुकने के बाद मेरी जरूरत नही रह जाएगी यहाँ।

जी करता है, मस्तराम को खत लिखती और उस खत मे बहुत कुछ होता या कुछ नही होता। मामूली कागज पर आडी-तिरछी पाँतो में कुछ अक्षर होते, दो-एक बात होती और वही बार-बार घूम-फिर कर सारी चिट्ठी मे भरी रहती।

मस्तराम मेरी चिट्ठी का जवाब शायद ही देता, वह मलग आदमी ठहरा। अपनी मस्ती के आगे सारी दुनिया को घास-फूस समझता है। इमरितिया क्या है ?

इमरितिया क्या है ?

इमरितिया कुछ नही है !

इमरितिया बहुत कुछ है !

इमरितिया इमरितिया है !

नही, इमरितिया इमरितिया नही है !

वह लक्ष्मी है, गौरी है वह !

नही वह आगे है उनमे !

नही, वह सबसे पीछे है। सबसे गई-गुजरी है !

नही, मस्तराम का हाथ अगर इमरितिया की पीठ पर हो तो सारी दुनिया से मुकाबला कर लेगी !

हाय, यही तो नही होगा !

यह होना था तो चार वर्ष यो ही नही गुजर जाते जमनिया मे !

इन चार वर्षों मे कौन-सा उपाय नही किया है इमरितिया ने ! मस्तराम ने रत्तीभर भी परवाह की है ?

बाबा को दो-चार साल की सजा हो जाती और मस्तराम छूट जाता, फिर मैं उसके साथ निकल पडती !

कहाँ जाती ? वापस नही आती जमनिया ?

वापस क्यो आती ? जमनिया क्या कोई जगह है रहने की ! राम राम !!

मस्तराम, तू आदमी नहीं, पत्थर है !

मस्तराम···

चोर साली ! हरामजादी !···

गालियाँ बकता है मस्तराम ?

नहीं, यह मस्तराम नहीं है । उसकी आवाज नहीं है यह ! कोई और मर्द है यह मेरे मन के अन्दर, वह आदमी सामने कभी नहीं आया । बस, मैं कभी-कभी सपने में इसकी आवाज-भर सुनती हूँ ।

क्यों इतना रंज है ? क्यों ऐसी गालियाँ बकता है ? कौन है तू ?

मैं हथेलियों में अपने कान मूँद लेती हूँ···

मुझ पर तमाचे पड़ते हैं । एक, दो, तीन, चार और पाँच···लगाओ, जितने तमाचे लगाने हों ।

और मुझको रुलाई नहीं आती, लेकिन आँसू बहते रहते हैं चुपचाप ! कान सुन्न पड़ गए हैं···मैं सो जाती हूँ सपने में ही. फिर महसूस करती हूँ, किसी मर्द का बदन मेरे बदन को कसकर दबा रहा है···

नींद में कपड़े खराब हो जाते हैं !

लेकिन यह मर्द कौन था ?

मस्तराम तो नहीं था, तो फिर कौन था ?

सपने में आज भी वह मुझसे सटकर सोया था···वह कौन था ?

तू कब तक मेरी तरफ यह लापरवाही बरतेगा मस्तराम ?

जाड़े का दिन।

सूरज छिपने ही वाला है । मैं कब तक यहाँ मनहूस बैठी रहूँगी ? यहाँ रेडियो भी तो नहीं है । वहाँ जमनिया में रेडियो था । कई रेडियो-सेट थे । मेरे लिए अलग था ।

भगौती से कहूँगी, रेडियो मँगवा लें ।

भगौती इधर ही कहीं घूम रहे हैं । आसपास के शहरों में चक्कर लगाना पड़ता है । बतला रहे थे, मुकदमे में बड़ा खर्चा पड़ेगा । बड़े-बड़े भगत लोग ध्यान दें तो आसानी से चार-पाँच हजार रुपये इकट्ठे हो जाएँगे । संयोग की बात कि बाबाजी गिरफ्तार हुए, उन पर मुकदमा चला । मठ की इज्जत पर इस मुकदमे का बुरा प्रभाव पड़ेगा । इलाके

मे पढ़े-लिखे लोग मठ के खिलाफ थे ही। अब आम लोगो मे भी इस मुकदमे को लेकर कई तरह की ऊल-जलूल चर्चाएँ चल पडेंगी। मुकदमा लम्बा खिचा तो और भी बुरा होगा।

भगौती दो-दो, तीन-तीन रोज बाद देकर इधर आते रहेगे। बाबा और मस्तराम की जमानत के लिए भी उन्होने बडी कोशिश की, लेकिन हाकिम टस से मस न हुआ।

बेचारे भगौती !

कितने सूख गए हैं। चेहरा कैसा उदास हो गया है। जमनिया मे कभी मैंने भगौती के चेहरे पर दाढी की खूँटियाँ नही देखी। परसो जेल के गेट से निकलकर बाहर हुई तो सामने रिक्शे के पास भगौती मौजूद थे। मेरी अगवानी मे आए थे, नही, मुझे लेने आए थे। लगा, बालो मे कई दिन से कघी नही पडी है।

मेरी ही तरह भगौती भी सूख गए है। शायद लालता प्रसाद भी सूख गए होंगे। रामजनम भी सूख गया होगा, सुखदेव भी। सारा मठ उदास लगता होगा। लगता है, मठ की किस्मत को गहन लग गया है।

महाराज सामने आकर खडा है।

आज महरी नही आई। बरतन ढेर सारे माँजने को पडे है। चाय और नाश्ते-भर के लिए दो-तीन हल्के बरतनों को महाराज ने धो लिया है। अब पूछने आया है "नाश्ता क्या बनाऊँ माईजी ?"

"रोज जो बनाते हो ! क्या है भण्डार मे ? बेसन है ? चिउडा है ? सूजी है ? क्या-क्या है ?"

"जी, हलुआ हो सकता है।"

"तो वही बना लो !"

महाराज रसोईघर की ओर जाता है। मैं छत पर निकल आती हूँ।

इर्द-गिर्द छोटे-बडे मकानो का जगल है, कोई सिलसिला नही है मकानो का। दूर, काफी दूर पर पानी की टकी नजर आती है। बहुत ऊँचाई पर टँगी है। समूचे शहर मे इतनी ऊँचाई पर और कोई चीज नही है। पतग उडाने का मौसम नही है यह, फिर भी पूरब की तरफ एक छोकरे ने पतग की डोर थाम रखी है। नीले रग का स्वेटर पहने

हुए हैं, ऊपर आसमान में पीले रंग की एक पतंग फहरा रही है। वह बहुत ऊँचाई पर नहीं है।

बचपन में मैंने भी पतंग उड़ाई है। मेरे बड़े भाई को पतंग उड़ाने का बड़ा शौक था…

तीन तरफ से आने वाली रेलवे लाइनों का अड्डा है इस नगर में। यहाँ, छत पर से पश्चिम की ओर देखने पर दो अलग-अलग दिशाओं में जाने वाली रेल की पटरियाँ दिखाई दे रही हैं। उत्तर की ओर से मालगाड़ी आ रही है। बहुत लम्बी है। चाल इतनी धीमी है कि जुड़े हुए डिब्बे अजगर की रफ्तार से आहिस्ते-आहिस्ते सरक रहे हैं। माल के इन डिब्बों में जाने क्या-क्या भरा होगा! चावल, चीनी, गेहूँ, कपड़े, तेल और डालडा…नहाने-धोने के साबुनों का ढेर लगा होगा। बाजार की सारी चीजें माल के इन्हीं डिब्बों में तो लदकर आती हैं।

दक्षिण की ओर सरकारी कालेज के बड़े-बड़े मकान हैं। वह मकानों के आगे फैला है, खेलने का मैदान। लेकिन अभी पूरा का पूरा मैदान खाली पड़ा है। पता नहीं, मेरे यहाँ रहते इस मैदान में कोई मैच होगा या नहीं। मैंने बचपन में अपने गाँव के पास वाले शहर में स्कूली लड़कों का मैच देखा था। फिर कहाँ मौका मिला? अब शायद कालेज के इस मैदान में बड़ी उम्र वाले लड़कों और नौजवानों का फुटबाल उछालते देखूँगी।

गर्म कड़ाही में पानी डालने की आवाज आई…महाराज ने सूजी भूँज ली है, अब चीनी डालने वाला है। लेकिन हलवे के साथ चाय भला ठीक रहेगी? चलो, बाजार से नमकीन मँगवा लूँ। हलवाई की दूकान दूर नहीं है।

लेकिन महरी कहीं दो-चार रोज नहीं आई तो महाराज बेचारा परेशान हो जाएगा। मैं मल देती सारे बरतन। मेरा जी करता है रसोई का ज्यादा-से-ज्यादा काम खुद कर लूँ। मगर ये लोग मुझे एक भी काम करने नहीं देंगे। इनकी निगाहों में मैं एक औरत नहीं, बल्कि साधुआइन हूँ। इमरतीदास महाराज। बाबा इमरतीदास। इस नाम से लोगों को यही लगेगा कि यह माई किसी बड़े अखाड़े की महंथिन होगी या किसी बड़े धर्माचार्य की चेली होगी, या अवधूतिन होगी किसी पंथ की…माई

इमरतीदास। बुरा नाम तो नही है। सुनते ही दिल मे घर कर लेता होगा…

यह रसोइया हमेशा अपने को अदना सेवक समझता है। सारे काम अकेले करेगा। मुझको तिनका भी नही छूने देगा!

साधू हो जाने पर आदमी इन्सान नहीं रह जाता है। लोग उसे अपने से अलग, अपने से ऊँचा मानते है। उससे उपदेश लेंगे, काम नही लेंगे! साधू से काम ले लिया तो माथे पर पाप का बोझा चढेगा, यानी महरी के सारे काम महाराज खुद ही करता जाएगा और मैं निठल्लेपन की सजा काटती रहूँगी।

इस तरह मैं अन्दर-ही-अन्दर घुटती रहूँगी। मैं बीमार हो जाऊँगी। चार महीने यहाँ बैठे-ठाले इसी तरह खाती-पीती रही तो मादा सूअर जैसी लेटी पडी रहूँगी, जिसके लिए साँस लेना भी मुश्किल होता है।

रसोईघर से लगे हुए बरामदे में महाराज ने कई तहो मे लपेटकर काले कम्बल का आसन डाल रखा है, काँसे का लोटा, काँसे का गिलास। दोनो झकाझक चमक रहे हैं। काँसे की थाली मे हलुआ सामने आ गया है। मैं आसन पर बैठती हूँ।

"सुनो, बाजार से समोसे ले आओ, चाय पीछे बना लेना!"

"जी, अभी लाया।"

वह बाहर निकला।

मेरी तबीयत कर रही है, आसन से उठकर जल्दी-जल्दी मे बर्तन धो लूँ। वर्षों बीत गए, मैंने बर्तन नही धोए। जाने क्यो, झाडू पकड़ने का जी करता है।

बर्तन धो ही लिये तो क्या होगा?

महाराज को बुरा लगेगा। लगेगा, मैंने उसको सबक सिखाने के लिए बर्तन धोए हैं। बेचारा डर जाएगा। उसके प्राण साँसत मे पड जाएँगे।

मालूम होने पर भगौनी को भी अच्छा नहीं लगेगा… लेकिन, मैं रोज-रोज थोड़े बर्तन साफ करूँगी? मुझे किसी को चिढाना नही है, न अपनी भलमनसाहत का सबूत ही देना है किसी को! यह काम तो अपनी मर्जी से करूँगी। करने को ढेर सारे काम पड़े हो, फिर कोई किसी का

हाथ क्यों नही बँटाएगा ?

झटपट नाश्ता करके उठती हूँ और फुर्ती से बर्तन धो लेती हूँ ज्यादा नही हैं, कहाँ हैं ज्यादा ! दो भगौना, एक पतीला, तीन कटोरे दो थालियाँ और एक लोटा और दो गिलास। सारे के सारे पीतल और काँसे के बर्तन हैं। बम्बे मे खूब पानी आ रहा है। राख पड़ी है, रगड़ने के लिए सूखी गीली घास की मूँठ एक ओर रक्खी है। दस मिनट के अन्दर मैं बर्तनो को माँज-धोकर चमका देती हूँ, फिर साबुन से अपने दोनों हाथ धो लेती हूँ।

इतने मे समोसे लेकर महाराज आता है। मैं उससे कहती हूँ—"पहले नाश्ता कर लो, फिर चाय तैयार करना।"

वह सीधे रसोई के अन्दर चला गया है।

थोड़ी देर मे चाय और समोसे लाकर सामने रख जाता है। मेरी ओर देखता नही है। शायद, अन्दर-ही-अन्दर बहुत कुछ सोच रहा है। वह मुझको समझ नही पा रहा है शायद। लगता है, डर गया है।

इस वक्त महाराज से कुछ नही कहूँगी। कोई कैफियत नही दूँगी कि मैंने क्यों बर्तन धो लिये। पीछे वह खुद ही समझ लेगा।

पिछले तीन दिनो से जेल के अन्दर यहाँ का खाना नही पहुँचा है। अब इसकी जरूरत नही रह गई। वहाँ बाबा के लिए अलग से क्वार्टर मिल गया है। खाना बनाने के लिए एक ब्राह्मण कैदी जेल वालो की तरफ से बाबा को मिला है। बी-डिवीजन के बाबू कैदी को जितना आराम मिलता है, जितनी छूट मिलती है, वह सब बाबा को मिली है। इस तरह बाबा के लिए जेल अब जेल नही रह गई।

इतना बड़ा मकान भाड़े पर क्यों लिया गया ? भगौती से पूछूँगी। लेकिन, सही-सही बतलाएँगे नही। न बतलाएँ ! मैं बार-बार पूछूँगी भी नही। क्या करूँगी पूछकर ?

चार कमरे नीचे। तीन ऊपर। एक छोटी-सी कोठरी छत पर। आठ कमरे हैं मकान मे। ऊपर का एक कमरा भगौती ने बन्द कर रखा है। दो कमरे भगतों और जजमानो के लिए रखे गए है। नीचे बड़े रूम मे जाने किसका सामान बन्द है। कहते हैं, गोरखपुर का सेठ है जिसका

नेपाल में भी कारोबार है। दो कमरे भगौती ने मुझे दिए हैं। चौथा भण्डारघर के काम आता है। रसोइया बरामदे में चारपाई पर सोता है।

मैंने एक कोठरी में पूजा-पाठ का अपना सामान जमा लिया था। परसों शाम, यही काम तो करती रही।

अपने गुरु महाराज की दी हुई चन्दन की माला है मेरे पास। सात साल से यह माला मेरे पास है। एक सौ आठ मनके हैं। गजब की खुशबू आती है इस माला से। मामूली चन्दन की सुगन्ध नहीं, बहुत आला दर्जे की खुशबू। इसके अलावा पीतल का एक कमण्डल है। रामचरित-मानस और गीता हैं। रेशम के पीले टुकड़े में लिपटा हुआ गुरू महाराज का एक फोटो है, छोटे फ्रेम में मढ़ा हुआ।

पूजा-पाठ का यह सामान मैंने जमनिया से मँगवा लिया है। पहले ही पता चल गया था कि मकान ले लिया गया है और हवालात से छुटकारा पाने पर मुझे अभी कुछ दिनों तक यहीं रहना है। अपने कपड़े भी आ गए हैं। ओढ़ने के लिए एक कम्बल और खरीद लूँगी। सुना है, खादी भण्डार में बहुत अच्छे कम्बल आए हैं। भगौती से कहूँगी, ला देंगे।

"भोजन तैयार है माईजी!"

"कितने बजे होंगे महाराज?"

"जी, आठ से ऊपर होता है।"

"आती हूँ चलो!"

महाराज खाना अच्छा बनाता है। आलू-गोभी, भिण्डी की भुजिया, टमाटर की मीठी चटनी और परांवठे। थाली से अलग तीन कटोरे। एक और कटोरे में मलाई है।

जमनिया का रसोइया भी इसी तरह थाली जमाता था। कम्बल का आसन भी इसी तरह बिछाता था। लोटा-गिलास भी इसी तरह दाहिनी तरफ रखता था।

"जमनिया गये हो महाराज?"

"जी सरकार, दो बार। वहाँ जो बाबाजी प्रसाद तैयार करते हैं, मैं उन्हीं का ममेरा भाई हूँ।"

"यहाँ कैसे पहुँच गए ?"

"भगौती बाबू से जमनिया मे मेरे भाई ने बतला दिया था। मैं यहाँ कई साल से रसोइया का काम कर रहा हूँ। दो-तीन बगाली परिवारो मे काम कर चुका हूँ। आपको भगौती बाबू ने बतलाया ही होगा। बाबा के नाम पर मालिक से दो महीने की छुट्टी मिली है।"

मैं धीरे-धीरे परांवठे तोड रही हूँ।

महाराज गौर से मेरी तरफ देख रहा है।

भूरे रग का, बिना बाँहो वाला स्वेटर और उसके नीचे हाफ कमीज। मैं परसों से इस आदमी के बदन पर यह पहनावा देख रही हूँ ··पुराना स्वेटर और पुरानी कमीज !

महाराज के लिए नया स्वेटर बुन दूँ ?

लेकिन बुनूँगी कैसे ? जानती भी तो नही !

चाहूँ तो सीख ले सकती हूँ। पडोस के मकान मे औरतें दुपहर के बाद ऊन की लच्छियाँ और काँटे लेकर यही धन्धा तो चलाती है···

अनजाने भिण्डी की भुजिया चट कर गई हूँ। महाराज एक गर्म परांवठा डाल गया है और भिण्डी की भुजिया भी। इसे किसने बतला दिया कि मुझे भिण्डी की भुजिया अच्छी लगती है !

लेकिन, खुद बिनाई सीखूँ चाहे न सीखूँ, महाराज के लिए बाजार से ऊन तो मँगवा लूँ ! पडोस मे किसी से बिनवा दूँगी···

देखते-देखते, चार-पाँच परांवठे दबा गई मैं।

सकोच-भरी आवाज मे महाराज बोला—

"माईजी, आपको शायद पूडियाँ पसन्द नही हैं। मुझे जमनिया मे भाई ने बतलाया था : जमनिया मे कुछ ऐसे भी साधू हैं जिन्हे पूडियाँ अच्छी नही लगती हैं। हुकुम हो तो कल बथुआ की कचौडियाँ तलूँ···"

मैं हुलसकर बोल उठती हूँ—"बथुए की कचौडियाँ ! जरूर बनाओ भाई !"

वह खुश हो गया।

मैंने देखा, छोटी-छोटी मूँछो मे वह अपनी खुशी को उलझाए हुए। मुस्कान को फडकते होठो मे दबा रखा है। लेकिन आँखें पूरी तौर

पर फैल गई है।

उसका खिला हुआ चेहरा मेरी निगाहों को बेहद भाया। इच्छा हुई, देर तक देखती रहूँ उसका मुखड़ा—अपलक, एकटक निहारती रहूँ!

जाने, कितने वर्षों बाद मैं किसी पुरुष का प्रसन्न मुख देख रही हूँ!

"हाँ, मुख-कमल भला और क्या होता है!"

"माईजी, आपने मलाई क्यों छोड़ दी?"

"तुम्हें नहीं अच्छी लगती?"

वह शर्मिन्दा हो गया। सामने से हटकर दूसरी तरफ चला गया। बरामदे के उस छोर पर बाहरी कमरे का दरवाजा था। बन्द था। वह लौटकर रसोई वाली कोठरी के अन्दर चला गया।

मन-ही-मन कहती हूँ: अजीब आदमी है! इतना शर्माने की क्या जरूरत है? रात-दिन यहीं साथ ही तो रहना है।

यह क्यों साथ ही रहेगा, फिर भी शर्मीला रहेगा। इसका संकोच नहीं टूटेगा। लाज-संकोच का दायरा तभी मिटता जबकि मेरे प्रति इसके मन में गाढ़ा अपनापन पैदा होता। मैं इसकी बहन भाभी [illegible] चाची नहीं हो सकती। फिर यह भी तो नहीं है कि मैं कोई [illegible] औरत हूँ। मैं तो जमनिया मठ की [illegible] हूँ—बाबा [illegible] महाराज। कितना भी घुलना-मिलना चाहूँगी, एक हद तक [illegible] का पालन करना ही पड़ेगा। मेरी तरफ से मर्यादा में कमी [illegible] बाबाजी सेवक की अपनी मर्यादा नहीं छोड़ेगा। ठीक है मैं [illegible] नहीं छेड़ूँगी। शर्मीला है, शर्मीला रहे। शिष्ट और डर इस आदमी का [illegible] नहीं छोड़ते हैं, न छोड़ें।

कल से आरती उतारूँगी। बरसों से गुरु महाराज के फोटो की आरती उतारने का नियम निभाती आई हूँ। इधर [illegible] के [illegible] के [illegible] आरती [illegible] [illegible] लेकिन आरती [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] आरती [illegible]

की चोटों के बीच, अपने इष्ट की आरती उतारना मुझे कभी नही आया। वह तो अच्छा-खासा तमाशा हो जाता है। खैर, मठों मे, मन्दिरों में इन तमाशो का रंग और रौब जरूरी होता होगा। बिना इनके आम लोगो की भीड कैसे खिंचेगी, श्रद्धा मे उफान कैसे आएगा!

कल डंडे नही थे, आज आए है, मसहरी लगा दी गई। मच्छर ज्यादा नही हैं। दस-पाँच जरूर है और वे पहले तो मीठा संगीत सुनाते हैं और बाद मे इन्जेक्शन देना शुरू करते है। परसों और कल बिना मसहरी के ही सोयी। चेहरे पर चार-छः निशान उभर आए हैं। मच्छरो के काटने पर उभडने वाले निशान मेरी निगाहो को अच्छे लगते हैं। चेहरे के अलावा बदन के दूसरे हिस्सो पर भी इस तरह के दो-चार निशान उभरे होंगे, मगर उनका पता बेचारा छोटा आईना कैसे देगा!

रात के दस बजने वाले है। पड़ोस के मकान से दीवाल-घडी की आवाज अभी-अभी आई। मैं थोडी देर मे सो जाना चाहूँगी।

दुपहरिया की नीद गर्मी के मौसम मे जमती है। लेकिन मै तो आधी बीमारी की हालत मे हवालात से बाहर आई हूँ। दिन में भी सो लिया था। जाडे का दिन कितना छोटा होता है! रात सारी की सारी नीद मे तो नही कटेगी। लेटे-लेटे कम्बल के अन्दर मन जाने कहाँ-कहाँ का चक्कर लगाता रहेगा! इन्सान थकान से चूर-चूर होकर बिस्तरे पर लेटता है तो एक ही करवट में रात बीत जाती है। मेरे भाग्य मे उस तरह की थकान नही बदी है।

लेट जाऊँ?

महाराज आकर मसहरी ठीक कर जाएगा, स्विच आफ कर देगा।

पानी तो रख गया है न? जरूर रख गया होगा!

कपडे तो बदल लूँ! नही बदलूँ?

नही, बदलूँगी कि! गेरुआ रग के हैं तो क्या हुआ, हैं तो सिलकन।

रयो की रेशमी धोतियाँ, गाढे गेरुआ रंग में रँगी चार हैं। चादरें भी चार है। ठीक है, रोज-रोज इन्हें धोया नहीं कन रात को बदल तो लेती ही हूँ।

!कोई होती इस वक्त। बसमतिया, शिवकली, रमिया…कोई

होती। औरत नौकर होती। महाराज से अपने सारे काम तो मैं ले नही सकती !

पीठ वाली चुटपुटिया बटन किस तरह कडी पड गई है ! लगता है, तोडना ही पडेगा !

दीवारो मे दोनो तरफ बडे आईने होते तो खुद भी छुडा लेती।

वहाँ जमनिया मे, अपनी दूसरी कोठरी के अन्दर दो बडे आईने टँगवा रखे है। फिर, यह भी तो था कि वहाँ दो-चार औरतें हमारी सेवा में लगी ही रहती थी। कुछ भगतिनो का भी आना-जाना लगा रहता था···यहाँ तो बस अकेला रसोइया है, उससे क्या-क्या सेवा मैं लूँगी ? और हर बात के लिए उससे कहा भी नही जा सकता।

गेरुआ वाली सूती धोती का अद्धा कमर से लपेटती हूँ ··मै अब दस-पाँच वर्षों के अन्दर ही बूढी हो जाऊँगी। बूढी नही होऊँगी ? उम्र बीतने पर सभी औरतें बूढी होती है। बुढापा क्या मुझको ही छोड देगा ?

इमरतिया, तू बडी बेवकूफ है ! तुझसे बढ़कर गधी इस दुनिया मे और कोई नही होगी···

नही, तू गधी भी नही है। काठ है, पत्थर है, कूडे का ढेर है तू ! तू भला गधी कैसी होगी ? वह तो एक अच्छी भली जीव होती है, चार पैरो वाली मादा। सही-सलामत कपडो के गट्ठर ढोकर घाट तक पहुँचाती है, फिर उन्हे वापस लाद लाती है ! तू कौन-सा काम करती है ? किसका बोझा ढोती है ?

मैं ? मैं भी बोझा ढोती हूँ। भारी-भारी गट्ठर अपनी पीठ पर लादकर दूर-दूर का फासला तय करती हूँ। मैं बहुत भारी पहाड लादे घूम रही हूँ, जाने कितनी चट्टानो को मैंने कहाँ से वहाँ पहुँचा दिया है ! मामूली गधी भला मेरा क्या मुकाबला करेगी ?

शुरू कर दिया फिर भग पीना ?

अभी तो नही, चार-छै दिन बाद शुरू करूँगी। बिना भग के माथा नही फट जाएगा ?

चरस ने क्या कसूर किया है ? उसे क्यो छोड देगी। गाँजे की लपट जितनी ऊँची उठेगी, ज्ञान का इस्पाती लोहा उतना ही लाल होगा ··

किसी ने कोई कसूर नही किया है। यहाँ सबका स्वागत है।

अफीम और मफिया का भी ?

मै थोडी देर तक मुस्कुराती रह जाती हूँ। मुझे अब पूजा वाले कमरे के अन्दर जाना पडेगा। इसी वक्त। वहाँ छोटा आईना आले पर रखा है। मैं उसमे अपनी आँखो से आँखें मिलाऊँगी। बहुत दिनो से मैंने अपने होठो का खिलना नही देखा है।

जगले तो बन्द हैं न ! अच्छी तरह बन्द है ?

हाँ, अच्छी तरह बन्द हैं। बाबाजी रोज शाम को ही इन जगलो-रोशनदानो को भली-भाँति बन्द कर देता है। महाराज अपने कामो मे बडा चौकस रहता है।

वह गाफिल नही है। बाहर से जैसा सीधा-सादा, गावदू दिखाई देता है, अन्दर से वैसा नही है। काफी चतुर है।

लेकिन उस कोठरी मे पचीस यूनिट वाला बल्ब लगा है, तू आईने मे खुलासा नही देख पाएगी अपने को। देख पाएगी ?

जूडा अभी-अभी खोला है। मूँज की पतली डोरी से इन फीके बालो को बाँध लेती हूँ·· सधुआइन रेशम की काली डोरी से भला अपना जूडा बाँधेगी ? सारे बालो को समेटकर माथे के ऊपर उठा देती हूँ। बँध जाने पर वे कैसे लगते है ?

बच्ची घोडी की पूँछ की तरह !

गले मे रुद्राक्ष के छोटे दानो की माला बुरी नही लगती है। सोने के तारो मे गुथी है·· इस तरह की और भी कई मालाएँ अपने पास हैं। कानो से छोटे रुद्राक्षो के झुमके लटका करते हैं। शाम की पूजा के बाद ही उन्हे उतार डालती हूँ। दिन मे अक्सर अँगूठियाँ भी डाल लेती हूँ।

मस्तराम मुझे अँगूठियो मे देखना पसन्द नही करता। मैं अँगूठियाँ पहनकर दिख जाऊँ तो मुँह बनाता है मस्तराम। कहता है : कपूरथला की रानी !

मस्तराम उजड्ड है।

जगली है मस्तराम।

मेरा बस चलता तो मस्तराम को निकाल बाहर करती। जानवरो

को बाबा क्यों पालते हैं ? इस मोह की क्या दरकार यों मठ को ?

बेचारा आईना !

अभागा शीशा !

तू कितना छोटा है ! कितना तंग ! कितना साफ ! कितना सच्चा ! कितना सीधा ! कितना हमदर्द !

आ, पहले तुझे सीने से लगा लूँ !

आ, चूम लूँ तुझे !

हाय, तेरे सीने पर इन होंठों के निशान उभर आए ··· मुँह के भाप की छाप पड़ी है, होंठ निखर पड़े हैं साफ-साफ !

कितना साफ है तेरा अन्दर-बाहर !

मस्तराम का भी अन्दर-बाहर साफ है। लेकिन कण्डे की आँच भी है उसमे। उससे घमण्ड का धुआँ निकलता रहता है। उस आग मे लोहा गलाकर बाबा 'लौहभस्म' तैयार करते हैं। भगौती और लालता स्वर्ण-भस्म···

मेरे किस काम आएगी यह आँच ?

कण्डे के इस धुएँ से मेरा क्या बनेगा ?

इस भट्टी मे डाल दूँ तो गलकर अर्क नही बन जाऊँगी ?

अब कौन-सा अर्क बनेगा इस तन-मन को गलाकर ! सीठी से कौन क्या निकाल लेगा ?

आईने मे नजरो के पार कितने चेहरे झाँक रहे हैं ! गिन लो इमरती-दास, गिनो···

एक। दो। तीन। चार। पाँच। छै। सात···

अरे, और गिनो भाई !

सूअर। गैंडा। बाघ। हाथी। ऊँट। गीदड़। साँड···

आदमी के चेहरे नही हैं।

जानवरो के है ?

हाँ भाई, जानवरो के चेहरे है···

तुम इन्हे पहचानती हो भाई इमरतीदास ?

अच्छी तरह पहचानती हूँ भाई !

धोखा तो नही खा रही हो ?

नही, अब क्या खाऊँगी धोखा ! इन सभी से निपटना पड़ा है मुझे तो···

बताती क्यो नही खुलकर ?

साधुओ के लिए बकबक करना मना है न !

फिर आईने मे क्या झाँक रही हो ?

झाँकूँगी क्या, मन बहला रही हूँ । मेरी माँ कहा करती थी : सोचते-सोचते माथा फटने लगे तो शीशा देख लिया कर···

शीशा देखते-देखते मेरा जी कभी भरता नहीं । न भरा, न भरेगा । हाँ अन्धी हो जाऊँ तब छूटे शीशा तो छूट भी जाय !

जमनिया वाले दोनो बड़े आईने मुझे दिन-रात याद आते हैं ।

रानी साहब ने भिजवाए थे ।

दो-ढाई महीने भगौती की कृपा से स्टोर मे पड़े रहे ।

भगौती इन्हे अपनी लड़की के लिए रख लेना चाहते थे, दामाद को भेजना चाहते थे । ऐन मौके पर मस्तराम को पता चल गया ।

उस रोज मस्तराम कितने जोरों से चिल्लाया !

चिल्लाकर मस्तराम ने कहा था : आईने भगौती के बाप ने नही दिए हैं ! शिवनगर की रानी ने मठ के लिए भिजवाया है । हाते से बाहर नही जाएँगे ये···

अब बोलो माई इमरतीदास, क्या पड़ा था मस्तराम को ! वह आखिर *क्यों इस तरह उन आईनो के लिए चीखा था ?*

उन बड़े आईनो की छाया मे मस्तराम कौन-सी छवि देख रहा था मन-ही-मन ?

बोलो इमरतीदास, बोलो ! चुप क्यो हो गई ?

दँ क्यो हो गई चुप ?

. बतलाओ ··

की कल्पना मे वह छवि मेरी थी जो उन बड़े आईनों के

.र झाँक रही थी···

, लाख जंगली हो, लाख उजड्ड हो मस्तराम, उसके दिल की सौ

तहों के नीचे कहीं-न-कहीं एक इन्सान छिपा बैठा है !

अरे ! यह क्या हुआ ?

एकाएक बिजली क्यों आफ हो गई !

महाराज, क्या किया तुमने ? मेन स्विच क्यों ऑफ कर दी ?

बाबाजी···

अरे माई जी, जग रही हैं आप ? मैंने तो समझा आप सो गई हैं।

अरे, जाग रही हूँ मैं तो !

दो मिनट रहने दो अभी···ऑन करो मेन लाइन बाबा।

अच्छा महाराज !···यह लीजिए !

देखो तो, इस बुद्धू ने क्या कर दिया !

नींद नहीं आ रही है।

महाराज सो गया होगा।

बाहर बरामदे में कैसे सोता है ?

जाड़ा लगता होगा।

नहीं लगता होगा।

ऊँह ! लगता होगा कि···

अन्दर कमरे में क्यों नहीं सोता है ?

पूजा वाला कमरा तो था, उसी में क्यों नहीं सोएगा ?

कल उससे कहूँगी, उसी में सोएगा।

आहिस्ते से निकलकर बाँथरूम में जाती हूँ।

बरामदे से होकर आँगन में उतरने के लिए तीन सीढ़ियाँ पड़ती हैं।

महाराज चारपाई पर चित लेटा है।

चादर बदन पर नहीं है, हट गई है।

दाहिनी जाँघ खुली है···

कैसा सुभावनी है !

बाँथरूम से वापस आती हूँ।

बिस्तरे पर चुपचाप लेट जाती हूँ···

अभी देर तक नींद नहीं आएगी। महाराज की जाँघ दिमाग के चकले पर बेसन की तरह फिर रही है। महाराज का चौड़ा सीना, और

धोखा तो नही खा रही हो ?

नही, अब क्या खाऊँगी धोखा ! इन सभी से निवटना पडा है मुझे तो···

बताती क्यों नही खुलकर ?

साधुओ के लिए बकबक करना मना है न !

फिर आईने मे क्या झाँक रही हो ?

झाँकूँगी क्या, मन बहला रही हूँ। मेरी माँ कहा करती थी : सोचते-सोचते माथा फटने लगे तो शीशा देख लिया कर···

शीशा देखते-देखते मेरा जी कभी भरता नहीं। न भरा, न भरेगा। हाँ अन्धी हो जाऊँ तब छूटे शीशा तो छूट भी जाय !

जमनिया वाले दोनो बड़े आईने मुझे दिन-रात याद आते हैं।

रानी साहब ने भिजवाए थे।

दो-ढाई महीने भगौती की कृपा से स्टोर मे पडे रहे।

भगौती इन्हे अपनी लडकी के लिए रख लेना चाहते थे, दामाद को भेजना चाहते थे। ऐन मौके पर मस्तराम को पता चल गया।

उस रोज मस्तराम कितने जोरो से चिल्लाया !

चिल्लाकर मस्तराम ने कहा था : आईने भगौती के बाप ने नही दिए हैं ! शिवनगर की रानी ने मठ के लिए भिजवाया है। हाते से बाहर नही जाएँगे ये···

अब बोलो माई इमरतीदास, क्या पड़ा था मस्तराम को ! वह आखिर क्यों इस तरह उन आईनो के लिए चीखा था ?

उन बड़े आईनो की छाया में मस्तराम कौन-सी छवि देख रहा था मन-ही-मन ?

बोलो इमरतीदास, बोलो ! चुप क्यों हो गई ?

बतला दूँ क्यो हो गई चुप ?

न सही, न बतलाओ ··

मस्तराम की कल्पना में वह छवि मेरी थी जो उन बड़े आईनों के अन्दर बार-बार झाँक रही थी···

मस्त साधु जंगली हो, साधु उजड्ड हो मस्तराम, उसके दिल की सौ

गद्दों के नीचे कहीं-न-कहीं एक इन्सान छिपा बैठा है !

अरे ! यह क्या हुआ ?

एकाएक बिजली क्यों आफ हो गई !

महाराज, क्या किया तुमने ? मेन स्विच क्यों ऑफ कर दी ?

बाबाजी··

अरे माई जी, जग रही हैं आप ? मैंने तो समझा आप सो गई हैं।

अरे, जाग रही हूँ मैं तो !

दो मिनट रहने दो अभी·· ऑन करो मेन लाइन बाबा।

अच्छा महाराज !···यह लीजिए !

देखो तो, इस बुड्ढ ने क्या कर दिया !

नींद नहीं आ रही है।

महाराज सो गया होगा।

बाहर बरामदे में कैसे सोता है ?

जाड़ा लगता होगा।

नहीं लगता होगा।

ऊँह ! लगता होगा कि···

अन्दर कमरे में क्यों नहीं सोता है ?

पूजा वाला कमरा तो था, उसी में क्यों नहीं सोएगा ?

कल उससे कहूँगी, उसी में सोएगा।

आहिस्ते से निकलकर बॉथरूम में जाती हूँ।

बरामदे से होकर आँगन में उतरने के लिए तीन सीढ़ियाँ पड़ती हैं।

महाराज चारपाई पर चित लेटा है।

चादर बदन पर नहीं है, हट गई है।

दाहिनी जाँघ खुली है···

कैसी लुभावनी है !

बॉथरूम से वापस आती हूँ।

बिस्तरे पर चुपचाप लेट जाती हूँ···

अभी देर तक नींद नहीं आएगी। महाराज की जाँघ दिमाग के चकले पर बेलन की तरह फिर रही है। महाराज का चौड़ा सीना, और

चौड़ा होकर मेरी छाती से सट जाएगा···जाग रही हूँ कि सपना देखने लगी हूँ ?

क/ख/ग/घ/च/छ/ज/झ/ट/ठ/ड/ढ/त/थ/द/ध/प/फ···

गुरू महाराज ने कहा था : बुरे ख्यालों का हमला हो और नींद न आ रही हो तो वर्णमाला को दुहराओ, पहाड़े की गिनती दुहराओ : सीधे दुहराओ, उल्टे दुहराओ : जरूर नींद आ जाएगी···

फ/प/ध/द/थ/त/ढ/ड···ड/ढ/त/थ/द/ध···ध/च/फ/ग···ग/ग/द/द/द/द/द/द/द/···

आ गई नींद। आ गई।

खूब गाढ़ी नींद नहीं आई।

सपने तो आने ही थे। इन रातों में सपने बहुत ही आते थे। उट-पटांग सपने।

थोड़ी देर में पौ फटनेवाली है।

एक-आध झपकी अभी और ले सकती हूँ···पलकों को मूँदे ही करवट बदल लेती हूँ···शाम को आज चाय के साथ सहजन के फूलों के पकौड़े रहें तो अच्छा···बाबाजी की जनेऊ कितनी गन्दी है !

भोर की झपकियों में सपने मस्तराम को ले आए ! मस्तराम ने बेचारे रसोइये को दो झापड़ लगा दिये···भाई, यह क्या कर रहे हो ? क्यों पीटते हो गरीब ब्राह्मण को ? क्या कसूर है इसका ?

"महाराज, पानी गर्म करो। सवेरे-सवेरे नहाना चाहती हूँ। चाय का पानी फिर चढ़ाना !"

"जी हजूर !"

"तुम नहा चुके ?"

"जी, माईजी !"

"महरी नहीं आई ?"

"आएगी आज। अभी उसका लड़का कहने आया था।"

"चलो अच्छा हुआ !"

आज महरी आएगी। महाराज को आराम रहेगा।

आराम ही आराम है। कौन-सा पहाड़ तोड़ना है ! तुम जमा दो

पेटो के लिए पाव-आधा सेर आटा गूँधना होता है [illegible] अब सो जाते हैं, बस ! लेकिन, बेचारे को मस्तराम ने [illegible] ही पीट [illegible] ?

खैर, यह तो सपने की बात थी !

मस्तराम झगड़ जरूर लेगा, हाथ नही उठाएगा किसी पर।

हाथ नही उठाया तो जेल मे क्या करने गया है ?

भगौती की बेवकूफी से !

भगौती ने कहाँ कहा था कि किसी को पीटते-पीटते अधमरा ही कर दो !

बेंत लगाकर दुआ देने का रिवाज भगौती ने ही तो चालू किया था। दूसरे के दिमाग मे कहाँ आई थी यह बात ?

अब की फंसे है बच्चू ! बड़े समझदार बने फिरते थे। घमंड के मारे पैर नही पड़ता था जमीन पर। जमनिया मठ का सारा कारोबार एक ही आदमी के इशारे पर चलता रहा है। लाला भगौती प्रसाद अपने को मठ का सर्वेसर्वा मानते हैं। बाबा को उन्होंने दस-बारह वर्षों से पाल रखा है।

अभागे मस्तराम ? तुम क्यो इनके फन्दे मे फँसे आकर ? कौन-सा सुख दिखाई पड़ा जमनिया के बाबा की छाँह मे ? दुनिया मे कोई और जगह नही थी क्या ?

लेकिन नही, मस्तराम ही भगौती के घमंड को चूर-चूर करेगा। साल-दो साल जेल रहेगा, फिर मस्तराम छूट जाएगा। उसको अब की जमनिया वाले अपने फन्दे मे नही रख सकेंगे। किसी और जगह को मस्तराम अपना अड्डा बनाएगा।

मैं मस्तराम के साथ निकलूँगी। मुझे छोड़कर वह अकेले नही जा सकता।

मैं उसकी राह देखूँगी। उसको मैं जमनिया के मठ मे नहीं रहने दूँगी। हम दोनो इस नरक से साथ-साथ छुटकारा पाएँगे।

बेचारी लक्ष्मी ! तूने जहर खाकर इस नरक से छुटकारा पाया था न ? तेरा छै महीने का बच्चा टुकड़े-टुकड़े करके अग्निकुण्ड के हवाले कर दिया गया। अपने लाड़ले को तू बचा न सकी। बाबा की कालिमा

देती-देती पागल हो गई। फिर तुझे बुखार चढ़ा। उसके बाद तेरा क्या हुआ, किसी को पता नही चला। लोगो को इतना-भर मालूम है कि जमनिया मठ की एक सधुआइन, लक्ष्मी अवधूतिन, जहर खाकर मर गई।

क्वार के महीने मे उस वर्ष मठ के अन्दर धूमधाम से दुर्गापूजा हुई थी। चण्डी मइया को मनुष्य की बलि दी गई थी। महीनो पहले से इस नरबलि का प्रचार किया गया था।

महाअष्टमी की रात मे, देवी की प्रतिमा के सामने छै. महीने का एक शिशु खडा किया गया। उसकी कमर मे रेशमी वस्त्र का लाल. टुकडा लपेटा हुआ था। गले मे लाल फूलो की माला थी। माथे पर सिन्दूर का टीका था।

पूजा के मण्डप से बाहर जोरो से बाजे बज रहे थे। नगाडे, घड़ियाल, सिंगा, मांदर, झाल, करताल, शख···हजारो की भीड थी। अलग मैदान मे चारो तरफ मेला और बाजार।

बकरी के बच्चे की तरह, आदमी के उस बच्चे का सिर धड़ से अलग कर दिया गया। खून के फव्वारे देवी की तरफ छोड़े गए। शिशु-मुंड को देवी के चरणो मे, महिषासुर के पास डाल दिया गया।

पीले वस्त्रो में, पुजारी-जैसा दिखने वाला वह आदमी तलवार लिये खडा था। खून से सनी हुई तलवार पैट्रोमेक्स की रोशनी मे चमक रही थी। वही पास मे मुंडहीन शिशु-शरीर लहू मे लथपथ पडा था। भिचे हुए प्राणों का स्पन्दन पैरो और हाथो को बीच-बीच मे हिलाए दे रहा था।

तलवार मे उँगली छुआकर उस हत्यारे ने बाबा के ललाट मे रक्त की टीका लगाया। भगौती, लालता, ठाकुर, सुखदेव सब थे। सबके माथों पर लहू के गीले टीके लगाए गए।

फिर बच्चे की देह को उस निठुर आदमी ने कई टुकड़ों मे काटा। फिर वे टुकडे एक-एक करके हवन-कुण्ड मे डाल दिए गए। जलते हुए मास की दुर्गन्ध को दबाने के लिए सेरो गुग्गल, कपूर, जौ, तिल, सुपारी आदि तो आग में डाले ही गए, ऊपर से आधा टीन शुद्ध घी भी डाल दया गया!

इस तरह उस वर्ष महाअष्टमी की महारात्रि में जमनिया वालों ने अपनी जिन्दगी में पहली बार नरबलि का नजारा देखा !

बाबा की सिद्धई इस तरह सारे ससार में मशहूर हो गई। लाखों दिलों पर उनका चमत्कार असर डाल गया। लेकिन अभागी लक्ष्मी का कलेजे का टुकड़ा कहाँ गया ? वह खुद क्या हुई ?

यह बाबा भारी राक्षस है !

इसी की देख-रेख में, इसी की सलाह से लक्ष्मी के शिशु का वध हुआ···चण्डी माता क्या सचमुच एक बच्चे के रक्त की प्यासी थी ?

नहीं, चण्डी माता भला क्यों प्यासी रहेंगी ? यह सब इस बाबा के दिमाग की खामखयाली थी। भोले-भाले लोगों पर अपना आतंक जमाने के लिए एक आदमी क्या इतना घिनौना काम करेगा ?

थू: !

"माई जी, अभी आप कमजोर हैं। इसी से इतनी अधिक नींद आती है···मैं दो बार आवाज दे चुका और अब देखने आया हूँ।

"पानी एक बार गर्म किया। अब दूसरी बार गर्म कर दूँ ? चढ़ा दूँ फिर से ?

"सबेरे-सबेरे क्यों नहाइएगा माईजी ? सर्दी लग जाएगी। मालिक आएँगे, आपको खाँसते देखेंगे तो बिगड़ेंगे मुझ पर। नहीं बिगड़ेंगे ?

"माईजी, चाय ले आऊँ ?

"मुँह धोने के लिए गरम पानी चाहिए ?

"पहले यहाँ एक बर्तन तो डाल दूँ ! कुल्ला-आचमन के लायक बर्तन नहीं है यहाँ···मालिक आते हैं, बाजार से ले आऊँगा ···उगालदान नहीं, अच्छी-सी चिलमची। अलमुनियम की। पीतल की भी आ सकती है।

"माईजी, कुछ कसूर हुआ है हमसे ?

"माईजी ···"

"देखो, महाराज ! ···"

"जी माईजी !"

"मेरी तबियत ठीक नही है। तुम जाओ चाय पी लो! मेरा इन्तजार मत करो ..."

रसोइया अपराधी की तरह खड़ा है। उसे विश्वास नही हो रहा है कि सचमुच मेरी तबियत खराब है।

जी करता है, सारा दिन आज बस इसी तरह पड़ी रहूँ। रात मे नीद नही आई। आई, अच्छी तरह नही आई।

अच्छी तरह नीद मुझे क्यो आएगी ?

"आओ महराज, चाय पी लो!"

"आप नही लेंगी तो हम कैसे लेंगे ?"

भारी बुद्धू है!

चाय नही लेती हूँ तो गधा अड़ा ही रहेगा! किस मूर्ख से पाला पड़ा है...शंकर! बभोलेनाथ...अच्छा, उठती हूँ...

बाथरूम हो आती हूँ।

दाँत-मुँह धो लिये है।

अब चाय पी रही हूँ।

"महराज, अभी चीनी ठीक है।"

"सच माईजी!"

"बिलकुल!"

उधर वह भी चाय सुड़क रहा है।

"महरी नही आई ?"

"आ के चली गई!"

"दुपहर के बाद आएगी ?"

"बोल के तो गई है। अब चढा दूँ पानी माईजी ?"

"अभी ठहर जाओ।"

आज कई रोज बाद मुझे लक्ष्मी की याद आई है। उसका छमाही बच्चा कैसा रहा होगा! खूबसूरत ही रहा होगा। बच्चे आमतौर पर ...रत ही होते हैं।

मगर लक्ष्मी को तो देखा भी नही मैंने। सुना-भर है उसके बारे। शिवकलिया बडी तारीफ करती है लक्ष्मी की। उसी ने मुझसे यह

सब बतलाया था। नरबलि का नजारा शिवकली के बड़े भाई ने अपनी आँखों से देखा था।

बाद को गौरी ने भी बतलाया। गौरी···

छिनाल अपने को नवाब की नातिन समझती थी।

तभी तो बाबा रांड को कुम्भ में छोड़ आए ··

प्रयाग से वह कहाँ गई ?

ऋषिकेश रहती है, एकनाथजी के साथ। कहते हैं, कनफटा बाबा काफी मालदार है। जड़ी-बूटियाँ कूट-छानकर दवाइयाँ तैयार करता था। हिकमत थी ही, धन्धा चल निकला। कहते हैं, देहरादून और हरद्वार में नाथजी की दो दूकानें हैं···

जड़ी-बूटियों की तरह कनफटा बाबा औरतों को भी कूटता-छानता होगा। उन्हें भी गलाता-सिझाता होगा, उनका अर्क निकालता होगा।

गौरी तो थी ही छिनाल। वह साल-साल में दो-तीन मर्द बदलती थी। वह उन मर्दों का बुरी तरह पीछा करती थी जो डील-डौल के तगड़े होते थे···

एक बार मठ का बड़ा घोड़ा गर्माया। वह बेचैनी से हिनहिना रहा था। नथुने फैला-फैलाकर हवा में से जाने कौन-सी गन्ध खींचता था बार-बार ! घोड़े को उस बेताबी में देखा तो गौरी मुझसे बोली—"मैं इसको ठंडा कर सकती हूँ···"

मैंने आँखें तरेरकर गौरी को घूरा था।

इस पर उसने मुझे भद्दी गाली दी थी और हँसकर कहा था—"बचपन में बाप के साथ तू कभी न सोई ? खा तो मेरी कसम !"

"कुतिया कहीं की," ऐसे मौकों पर मैं उसे डाँट देती थी, "अपने तजुर्बे औरों पर टोकती है नानी !"

एक रात वह मस्तराम से सटने गई···

मस्तराम ने उसे दो तमाचे लगाए थे।

हमसे गौरी खुलेआम कहा करती—"मैं डायन हूँ, बच्चा चबाने के लिए मुझे आदमी ही चाहिए और हमेशा चाहिए···दस वर्ष का लड़का हो तो भी चलेगा, सत्तर साल का बुड्ढा हो तो भी चलेगा···"

बाबा गौरी को बहुत चाहते थे।

बाबा ने उसे पूरी छूट दे रखी थी। काशी, प्रयाग, मथुरा, वृन्दावन, हरद्वार, घूमती रहती थी। बाबा के साथ तराई के इलाकों मे भी वही जाती थी।

लौटने पर अक्सर गौरी अपने साथ किसी-न-किसी मालदार असामी को बाबा तक ले आती।

शिवनगर इस्टेट के मैनेजर के दामाद को इसी तरह वह एक बार उडा लाई। भगौती ने लखनौली के दारोगा की तरफ से भेजा हुआ बतलाकर नकली खत मैनेजर के दामाद को दिखलाया। खत के अनुसार यह नौजवान भले खानदान की एक लड़की को भगा ले गया था और नदी के पार उत्तरप्रदेश के सीमान्तवर्ती किसी गाँव मे छिपकर रह रहा था; भगौती ने बतलाया कि अब उसके लिए वारण्ट निकलेगा और उसके साथ गौरी भी गिरफ्तार होगी। बयान मे गौरी कुछ भी कह सकती है, क्योंकि छोकरी का माथा क्रैक है···शिवनगर इस्टेट की भारी बदनामी होगी, लडके को साल-छ. महीने जेल के अन्दर भी रहना पड़ सकता है।"

मैनेजर का दामाद ढाई-तीन हजार रुपये साथ लाया था। भगौती और लालता ने उसकी गिरफ्तारी की गर्म अफवाहो के बारे मे नमक-मिर्च मिलाकर मठ के अन्दर ऐसी कानाफूसी फैलाई कि बेचारा 5-7 रोज बाद ही भाग गया। सारी रकम भगौती ने रख ली कि इससे कम पर मामला रफा-दफा नही होगा।

लक्ष्मी के बच्चे की बलि पडी तो बाद मे लोग डर गए। अफवाह उडी कि भरतपुरा का थानेदार तहकीकात के लिए जमनिया पहुँचने वाला है···

अन्त में हुआ यह कि भगौती खुद ही गौरी को साथ लेकर थानेदार की सेवा मे पहुँच गए। दोनो चार दिन भरतपुरा रहे। पाँचवें दिन खुशी-खुशी लौट आए।

बड़ी-बड़ी खिजाबी मूँछो वाला थानेदार सादुल्ला खाँ गौरी को खूब पसन्द आया होगा···

गौरी भी मुसल्ले को जमी होगी! चेहरा तो गौरी का मरते दम

तक छोकरी का ही रहेगा। बूढ़ी भी होगी तो चौदह-पन्द्रह की दिखेगी ··

भरतपुरा की पुलिस के रेकार्ड मे दर्ज हुआ होगा—"पूजा की आठवी रात मे जाने किधर से एक पगली आई। उसकी गोद मे छै महीने का बच्चा था। पुजारी की नजर बचाकर उसने बच्चे को हवन-कुण्ड मे डाल दिया। कोशिशें तो काफी की गई, लेकिन बच्चे को बचाया नही जा सका। बाबा की बडी ख्वाहिश थी कि पगली को थाने तक पहुँचा दिया जाय, लेकिन अगले दिन ही वह गायब हो गई। अब कुछ गुण्डो ने उल्टी बातें फैला दी है। सरकार बहादुर से अर्ज है कि वह जमनिया मठ के सन्त-शिरोमणि बाबाजी महाराज की प्रतिष्ठा और इज्जत को ध्यान मे रखे, साथ ही थानेदार साहब उन गुण्डो पर कडी निगरानी रखे, जिनकी नीयत साफ नही और जमनिया मठ की जायदाद को नुकसान पहुँचाना चाहते हैं···"

तीन वर्ष गुजर गए हैं 'तो क्या हुआ ! गौरी आज भी ऋषिकेश से वापस आ सकती है 'नही आ सकती है ? कनपटे बाबा को दस-बीस हजार की चपत लगाकर निकल आए तो ?

लगता है, बाबा को आज भी गौरी से कुछ उम्मीदें हैं···

तू गधी न होती तो तुझसे भी बाबा की उम्मीदें रहती।

बाबा तुझे कितना चाहते थे।

उस बार लगातार एक महीने तक तू बेचैन रही···अग-अग मे फोड़े निकल आए थे न ?

हाँ ! मेरे जिस्म का हिस्सा-हिस्सा बाबा खुद अपने हाथो से छूने-सहलाने-टटोलने का अच्छा बहाना पा गए थे उस बार !

मैं सिहर-सिहर उठती थी···बसमतिया और शिवकली को भी अखरता था वे अन्दर-अन्दर कुढती थी।

लालता की बहन ने फुसफुसाकर बतलाया था—"बाबा नर्स की तरह हर बीमारी मे रोगी की सेवा कर सकते है।" फिर इधर-उधर देखकर उसने आँखें नचाईं और कहा—"तुम तो औरत ठहरी, तुम्हारी तीमारदारी तो बाबा खुद ही करेंगे !"

लम्बी जटाओ वाले अपने इस बाबा की सेवा-सुश्रूषा से मैं ऊब गई।

मस्तराम की सलाह से मिल वाला डाक्टर मुझे देखने आया। उस कहा—"एक सप्ताह आप हमारे अस्पताल में चलकर रहिए। वहाँ दोनों नर्से आपको कुछ ही दिनों मे ठीक कर देंगी…"

बाबा को यह सब अच्छा नही लगा "लेकिन अस्पताल से ही मे घाव अच्छे हुए थे।

क्या यह जरूरी है कि बाबा को सब कुछ अच्छा लगे ?

मेरी जगह गौरी होती, तो ?

बाबा की जगह मस्तराम होता, तो ?

मस्तराम बदतमीज नही है…

मस्तराम की नीयत गन्दी नही है…

माईजी, दस बज गए !

"माईजी, आपकी तबियत ठीक नही है, आज रहने दीजिए ! कपड़े बदलकर वही स्नान-ध्यान कर लीजिए !"

"माईजी, बादल भी आ गए हैं !"

"हवा भी चल रही है माईजी !"

"आलू-गोभी की सब्जी बनाऊँ माईजी ?"

"माईजी…"

"सो गई हैं माईजी ?"

"अच्छा, माईजी ! आराम ही कीजिए !"

"शाम तक मालिक भी आ जाएँगे…"

"अरे, हाँ ! सचमुच !"

"हाँ, माईजी सोई हुई हैं…"

"खाना नही बनाऊँ अभी ?"

"चलो, फुल्के बाद मे सेंक लूँगा।"

"तब तक नहा-धो लूँ न !"

"एक-आध कपड़े भी साफ कर लूँ !"

"माईजी मेरे बदन पर गन्दे कपड़े देखना पसन्द नहीं करेंगी…"

"बगाली घरों मे तो बावाजों को और भी टिप-टाप रहना पड़ता है।"

"बंगाली घरो मे दीदी मणि लोग महाराज को भी फैशन मे देखना चाहती है···"

"बंगाली घरो मे माईजी-मासीजी हमारे जैसे जवान बाभन-रसोइया को खूब भालो-वासा करती हैं, खूब खिलाती-पिलाती है।"

"माईजी, आप भी मेरा बहुत ख्याल रखती हैं··कल शाम महरी नहीं आई तो आपने खुद ही बर्तन साफ कर लिये।"

"ऐसा न कीजिए माईजी! इस गरीब ब्राह्मण के माथे पर पाप का बोझा चढ़ेगा माईजी।"

"अच्छा माईजी, अभी आप सोइए।"
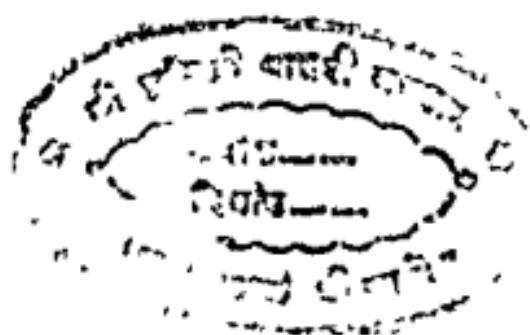
भगौती

सारा मुहल्ला सो गया था।

गलियारों मे जहाँ-तहाँ बिजली के खम्भे जाग रहे थे।

दिन में हल्की बारिस हुई थी। अभी भी आसमान भारी था। बादल लदे थे। तारों का कहीं पता नहीं था।

सर्दी बढ़ गई थी। हवा मे ठण्डक महसूस हो रही थी। लगता था, शीत-लहरी का प्रकोप बस आ ही चला। कुत्ते तक जाने कहाँ दुबके पड़े थे।

भीगी सड़कें निर्जनता मे ऊँघ रही थीं। इक्के-दुक्के रिक्शे भी नजर नहीं आ रहे थे।

बिजली के बल्वों के इर्द-गिर्द परवानों का काफ़ला नहीं था। दस-पाँच कीड़े चक्कर लगा रहे थे।

धरती का सूनापन और भी अखर रहा था, क्योंकि बरसाती बादलों के सहज साथी मेंढक गायब थे। बूंदाबांदी का माहौल हो और टर्र-टर्र न सुनाई दे, तो कैसा फीका-फीका लगेगा मौसम ?

झींगुर तक चुप्पी साधे हुए थे!

ऐसे में दो ताँगे आ पहुँचे···

चमड़े के चार भारी-भारी सूटकेस। तीन वजनी होल्ड-आल, तीन हैण्ड बैग। प्लास्टिक की दो खुली डोलचियाँ···

नेपाली टोपी वाले दो युवक।

एक नौजवान, हॉफ पैण्ट और बुशर्ट मे।

और एक बाबू-टाइप चेहरा यानी बाबू भगौती प्रसाद।

साँकल की खनखनाहट सुनकर महाराज दरवाजा खोलकर बाहर

निकला।

ताँगे वालों की मदद से सामान अन्दर रखा गया। आगन्तुक भीतर आए। ताँगे वाले अपनी मजदूरी लेकर वापस लौटे।

ऊपर दो कमरे नये आगन्तुकों के लिए खुल गए। भगौती ने खुद ही अपना रूम खोला।

सामान एक-एक करके महाराज ऊपर पहुँचा आया।

"बाथरूम में दो बाल्टी पानी रख देना।"—भगौती ने कहा—"अभी और कुछ नहीं करना है बाबा जी! कल मेहमानों वाली कोठरियों में बल्ब बदल देना। मेरी आलमारी के अन्दर साठ-साठ यूनिट वाले बल्ब रखे हैं।"

फिर पूछ लिया—"और तो सब ठीक-ठाक है न?"

"जी मालिक। सब ठीक है। बस, माईजी की तबीयत सुस्त रहती है।"

दाहिने हाथ की अँगूठियों पर नजर टिकाकर भगौती बोला—"ठीक हो जाएगी। खूब खिलाओ-पिलाओ!"

"जी मालिक!"

थोड़ा रुककर महाराज अपनी कनपटी खुजलाते-खुजलाते बोला, "आपके लिए शाम को खाना बनाकर रखा था। थोड़ा दूध नहीं पीजिएगा?"

"नहीं, अभी कुछ नहीं। हाँ, सवेरे-सवेरे चाय तैयार करना। मीठा कम डालना…"

"जी!"

"और देखो, नहाने के लिए पानी गर्म कर देना सवेरे। सर्दी बढ़ गई है न?"

"जी!"

"जाओ, आराम करो!"

"जी!"

रसोइया नीचे चला गया।

भगौती ने अपना हैण्ड बैग खोला। [illegible]

निकाल ली। असमिया अंडी चादर दुहरी बदन पर ही थी। सर्दी से बचाव के लिए यही काफी होती है। शाल से तो यो ही कभी-कभार काम लेते है।

शेविंग-सेट बाहर निकालेंगे।

मुकदमे के जरूरी कागजात, नोटबुक, डायरी और दो-एक मामूली किताबें···

जासूसी उपन्यास चाटने का चस्का है।

हत्या, बलात्कार, लूटपाट, गबन, अपहरण आदि की षड्यन्त्रो वाली कहानियाँ स्कूली जीवन से पढ़ते आए है।

15-16 की उम्र मे ही भूतनाथ और चन्द्रकान्ता संतति का पारायण कर लिया था।

इस तरह की बाहरी किताबो के अनुवाद खोज-खोजकर देखते हैं। मूल अंग्रेजी मे आनन्द नही आता है।

हाँ, क्राइम-फिल्म मूल रूप मे ही देखना पसन्द करते है···

नोटबुक की जिल्द मे कुछ और भी तो रखा है। क्या है?

हिन्दी अखबारो की कतरनें···

हाँ, कटिंग्स ही है।

भगौती उस नोटबुक को सिरहाने रख लेते है, तकिये के नीचे।

चारपाई पर गद्दा पहले से था। डबल चाबी रहने से रसोइया हर रोज कमरा साफ करवा लेता है। दोनो आलमारियाँ हमेशा बन्द रहती है। भगौती आते हैं, आप ही खोलते है और आप ही बन्द करते है। सामने दीवार पर एक तरफ शंकर-पार्वती वाला कैलेन्डर अगले वर्ष का है, लेकिन पहले से ही टँग गया है। दूसरा कैलेन्डर चालू महीने का होगा, दिसम्बर के आरम्भ का। उसमे किसी छोकरी का रंगीन चित्र है। सायरा बानो, साधना, शर्मिला टैगोर या फिर आशा पारीख, वैजयन्ती-माला, वहीदा रहमान?

महाराज झाड़-झूड़कर चादर बिछा गया है। हवा फूँककर रबड़-वाली तकिया ठीक कर गया है।

तिपाई पर स्टेनलेस वाला लोटा है। गिलास है। भगौती को अक्सर

प्यास लगती है, ठीक दुपहर रात मे। एक बजे, दो बजे। सोते वक्त, नजदीक मे पीने का पानी जरूर रखवा लेंगे। कहीं भी हो।

अभी वह दूध ले सकते थे ?

हाँ, ले सकते थे।

ले लेते मगर यों ही नहीं लिया। आगन्तुकों से भगौती ने चाय और दूध के लिए कहा था, उन्होंने अनिच्छा जाहिर की थी। अब अकेले भगौती दूध कैसे लेते ?

कितना भी फर्राट आदमी हो, सहज सकोच उसके अन्दर शेष रह ही जाता है। तकल्लुफ आसानी से कहाँ जाती है !

बस, अब अन्दर मे अपना कमरा बन्द करेंगे ··

एक सिगरेट जलाएँगे ··

आधा लेटने की मुद्रा मे होठो से धुमछल्ला छोडते रहेंगे···

सोचते रहेंगे, सोचते रहेंगे, सोचते रहेंगे··

दूसरी सिगरेट राख हो सकती है ·

लाइट आफ कर देंगे, लेकिन सिगरेट का सिरा सुलगता रहेगा···

पहली सिगरेट खत्म करके भगौती ने स्विच आफ कर दिया।

बारह बज चुके हैं।

लेटने पर आधे घंटे मे नींद आ ही जाएगी ?

कुछ सोचने लगे थे।

लेकिन थकान पलकों पर हावी हो गई !

अंडी-चादर का जोडा पैरों से लेकर कमर तक थी, उसे कन्धों तक खींचकर दाहिनी करवट हो गए। बदन को सीधा तान लिया।

बहुत-सारी चिन्ताएँ गड्मड्ड होकर दिमाग को हल्के-हल्के खरोंच रही थी, लेकिन मन को समझा-बुझाकर सो जाने की कोशिश करने लगे।

और, निद्रा देवी ने सचमुच कृपा की।

जंक्शन के 'सामिष उपाहार-गृह' मे डटकर खाया था। पेट के अन्दर हाजमा की मशीनरी बार-बार गर्म हो उठती थी।

दो दफे पानी के लिए उठना पड़ा है।

पहली बार डेढ गिलास।

दूसरी बार पौन गिलास।
अब क्या तीसरी बार भी उठना पड़ेगा ?
क्या करेंगे ? उठेंगे !
पहली नींद दो घण्टे की, दूसरी नींद चालीस मिनट की।
अब उठकर घड़ी देखेंगे तो लगभग साढ़े तीन का वक्त होगा···
इसके बाद भगौती को नींद कहाँ आएगी !
नहीं आएगी नींद ?

अँधेरे मे पड़े रहेंगे, खयालो का हमला होता रहेगा। आपबीतियो की पर्त-दर-पर्त खुलती-सिमटती चली जाएगी। दुनियादारी के चक्कर स्मृति के पर्दे पर छाया के तौर पर गुजरेंगे, कई रंगो मे और कई पहलुओं में !

इस तरह खयालो के हमले हर रात होते रहे तो इंसान नही रह जायगा, पागल हो जाएगा !

जी हाँ, जरूर पागल हो जाएगा।
लेकिन, मैं पागल नही हुआ !
मैं पागल नही होऊँगा !
मैं अदना आदमी नही हूँ···

मैं भगौती प्रसाद हूं। बाबू भगौती प्रसाद। लाला सूरज नन्दनप्रसाद का सुपुत्र जमनिया का जमींदार।

कलकत्ते से अफीम की गोलियाँ मँगवाता हूँ। सिंगापुर के चीनी सौदागर इन गोलियो का तस्कर-व्यापार करते हैं। हांगकांग के तजर्बेकार रसायनाचार्यों की खास हिदायतो के मुताबिक ही यह माल तैयार होता है। रूस को छोड़कर बाकी सारी दुनिया मे इन गोलियो की खपत है।

पिताजी इन गोलियो के नियमित ग्राहक थे। चाचा को भी शौक था इनका।

मैं तो बस, महीने मे एक-आध बार हा लेता हूँ। आधी गोली ले ली और आठ-दस घण्टे पीनक मे डूब गए !

अभी तो खैर आधी खुराक भी नहीं है। डिब्बी खाली पड़ी है··· चाँदी की डिब्बी सूंघ-भर सकता हूँ फिलहाल !

माजूम भी अच्छा मजा देता है···

मगर नींद के लिए बेकार है माजूम।

हाँ, सब ठीक है। सवाल है कि इस समय बाबू भगौती प्रस
क्या करेंगे?

करेंगे क्या! झख मारेंगे···

वाह साहब, झख क्यों मारेंगे? काम करेंगे। अपने कागजात
अखबारों की कतरनें काफी इकट्ठी हो गई हैं···

बहुत सारी हैं! इतना कौन पढ़ेगा?

खामखाह इतनी कतरनें भेजी उसने!

भेजेगा नहीं? तुमने बार-बार क्यों कहलवा भेजा?

आजाद वाचनालय, सिमरा बाजार! अवैतनिक लाइब्रे
कामों का कितना ध्यान रहा उसे! कई अखबारों से तराश-
तुम्हारे लिए कतरनें जुटाई होंगी। अब इन्हें देखते क्यों नहीं?

डर लगता है भगौती!

अपने कारनामों का भण्डाफोड़ अपनी नजरों से कौन देखना

लेकिन यह तो महज कतरनें हैं!

तुम्हारे दुश्मनों ने अखबारों में जाने कैसी-कैसी बातें छपव

अच्छा लो, पहले एक सिगरेट धरा लो!

माचिस? तकियों के नीचे होगी··· मिली?

हाँ! मिल गई! जलाओ···मैं जला दूँ?

सुलग तो गई···

लो, लो! अब कटिंग देखो!

पहली कतरन—

"जलनिधा। 25 नवम्बर (बुधवार)" संयुक्त समाजवादी
सिमरा बाजार अंचल-शाखा की तरफ से स्थानीय चीनी मिल के
मजदूरों की माँगों के समर्थन में विशाल जनसभा का आयो
रहा।"

"कल का दिन (मंगलवार) हाट-बाजार का दिन होने से
की उपस्थिति के लिए बड़ा ही अनुकूल था। अन्य दस

की उपस्थिति बनी रही।"

"जिला-जेल के अन्दर, हवालात मे मजदूर कैदियो पर अधिकारियो की तरफ से अन्धाधुन्ध लाठी चार्ज करवाया गया और जेलवालो की इस बर्बरता को जमनिया मठ के इस बदनाम बाबा का भी समर्थन हासिल था। एक वक्ता ने जब यह बतलाया तो लोगों ने नारे लगाए: "जमनिया का बाबा—मुर्दाबाद · जमनिया का बाबा—कातिल है . हत्यारे को—फाँसी दो . मठ की जमीन—दखल करो। जमनिया का मठ क्या है?—बदमाशो का अड्डा है···"

"पाठको याद होगा कि मठ के अन्दर एक आगंतुक साधू पर हाल ही इतनी अधिक पिटाई पडी कि वह बेहोश हो गया।"

इस पिछडे हुए अचल की पिछड़ी हुई जनता को गुमराह करने मे जमनिया के बाबा को पर्याप्त ख्याति मिली है। यहाँ के जमीदारो, सेठो, पुलिस वालो, डाकुओ, बदमाशो ने बाबा को छुटकारा दिलाने के लिए बडी दौड़धूप मचा रखी है। वे लखनऊ-दिल्ली तक भागते फिर रहे हैं!

"चीनी के कारखानेदार दिन-प्रति-दिन सरकार से अधिकाधिक सुविधाएँ हासिल करते जा रहे हैं और गन्ना उपजाने वाले किसानो की परेशानियाँ बढती जाएँगी, इस पर अधिकांश वक्ताओ ने केन्द्र और राज्य सरकार की जन-विरोधी नीतियो पर आक्रोश जाहिर किया। चीनी-मिल-मजदूर-सघ के मन्त्री श्री नवीन चन्द्र 'तूफान' ने मिल-मालिको की तरफदारी के लिए लेबर कमिश्नर के खिलाफ एक प्रस्ताव पेश किया, वह सर्वसम्मति से पास हुआ।"

"इष्टकवालों ने बीच मे टाँग न अडाई होती तो अब तक मजदूरो का संघर्ष कामयाब हो चुका होता।"

"मजदूर-नेताओं की आपसी बातचीत सुनने पर ऐसा लगा कि हड-तालियो की 50 प्रतिशत माँगें मिल वालो को माननी ही पड़ेंगी···राज्य के श्रममन्त्री का इतना दवाव तो इन पर डलवाया ही जाएगा।"

लगे। इनकिलाव-जिन्दाबाद : किसान मजदूर सोशलिस्ट पार्टी : जिन्दाबाद : डॉ० लोहिया : भारत माता की : जय!"

इसमें उन पंक्तियों को पेन्सिल के सुर्ख निशान से दुहरे-तिहरे रेखांकित कर दिया गया है, जिनका सम्बन्ध जमनिया के बाबा से है।

भगौती के माथे पर बल पड़ गए हैं।

सिगरेट बिना फूंके ही लगभग राख हो चुकी है, आग उँगलियों के पोर को झुलसा देगी क्या ?

भगौती जल्दी-जल्दी दो कश खींचकर आधी इंच का सुलगता टुकड़ा झटके में दूर फेंकता है, उस तरफ जिधर फिल्मी छोकरी वाला कैलेण्डर टँगा है।

उँगलियों में उँगलियाँ उलझाकर यह बदन को सीधा करता है, हथेलियों को चेहरे पर घुमाता-फिराता है।

कलाई पर निगाह अटकती है ··4—15···

सवा चार बज गए !

अभी बहुत-सारी कतरनें देखनी हैं।

इन्हें देख तो लेना ही चाहिए···

लेकिन तबीयत बिदकती है ··

ऐसी भी क्या बात है भाई ?

बात क्या होगी ? कुछ नहीं !

हाँ, अनाप-शनाप छापते हैं साले···

अखबार वालों का तो धन्धा ही यही है···

भगौती, इनके पीछे अपना दिमाग क्यों खराब करते हो ?

क्या होगा यह सब देखकर भगौती ?

प्यास नहीं लगी है भगौती ?

लगी है कि···

'हाँ, हाँ ! आधा गिलास पानी जल्दी पी लो !"

पेट तना हुआ है ?

अच्छा, सवेरे का नाश्ता न करना ! चाय-भर ले लेना···नीबू-पानी ?

हाँ, हाँ, नीबू-पानी ठीक रहेगा !

सिगरेट सुलगाओगे ?

नहीं ! गला जल रहा है ?

नहीं, नहीं, तबीयत डूब रही है !

तबीयत क्या डूबेगी साली, शनीचर जोर मार रहा है…

पन्ना खो गया है जब से वह अँगूठी गायब हुई, तभी से संकट उमड़ पड़े हैं !

रानी साहब का बनारस वाला जौहरी ऐन मौके पर चुप लगा गया। तीन बार खत डाल चुका हूँ !

ठीक है, पन्ना मिले या न मिले ! परिस्थितियों का सामना तो करना ही है…

उतना कमजोर दिल कहाँ है भगौती का !

भगौती एक-एक करके इन कतरनों को देख जाएगा।

क्या कर लेंगे अखबार वाले ?

एक-आध बार इन संवाददाताओं में से किसी एक की मरम्मत करवा दूँ ? कुटम्मस !

सारी बदमाशी घुसड़ जाएगी…

इन्हें पढ़ तो जाओ मियाँ !

हाँ, देख जाओ सरसरी तौर पर…!

दूसरी कतरन—

"सिसवा बाजार। 27 नवम्बर (शुक्रवार) जमनिया का बाबा दो सप्ताह से जिला-जेल की हवालात में बन्द है। उसके साथ मुस्तंडा-किस्म का एक साधु और एक सुन्दरी अवधूतिन भी है। तीनों की गिरफ्तारी से इलाके-भर में सनसनी फैल गई है। बाबा पर आधे दर्जन अभियोग लगाए गए हैं।"

"स्वामी अभयानन्द जैसे सुशिक्षित और लोक-सेवक साधु पर जमनिया मठ के अन्दर न इस प्रकार के अमानुषिक प्रहार होते, न बाबा की गिरफ्तारी होती।"

"जमनिया का मठ कोई परम्परागत प्रामाणिक मठ नहीं है। आज से दस-बारह वर्ष पहले वहाँ कुछ नहीं था, वीरान था। जमींदारी-तालुकदारी प्रथा के उन्मूलन का कानून पास हुआ तो जमनिया और लखनौती के दो-तीन भू-स्वामियों ने ज्यादा-से-ज्यादा जमीन हड़पने के

लिए रातोरात 'जमनिया मठ' की स्थापना कर डाली। नारायणी नदी जहाँ नेपाल की तराई से नीचे उतरती है, वही उत्तर प्रदेश और बिहार प्रान्त भी आपस में मिलते हैं, उस कछार-भूमि से वे एक जटाधारी औघड़ बाबा को लिवा ले आए। जमींदारों ने उसी विचित्र व्यक्ति को अपने मठ का महन्त घोषित किया।"

"हम बाबा की गिरफ्तारी के बाद एक डेढ़ सप्ताह जमनिया के अंचल में घूमे हैं। विशिष्ट और साधारण व्यक्तियों से मिले हैं। ढेर सारी परस्पर-विरोधी सूचनाएँ हासिल हुई हैं। इन सूचनाओं की छान-बीन करने से कई प्रश्न उभरते हैं।"

"क—जमनिया का बाबा अपने पूर्व-जीवन में (गृह-त्याग से पहले) मुसलमान था। इसका असल नाम करीमबक्श था। बाप का नाम खुदा-बक्श। पेशा जुलाहे का। जवानी के दिनों में कई प्रकार के गम्भीर अपराध करने के बाद, पुलिस की निगाहों से बचने के लिए यह नेपाल भाग गया। तहसील पडरौना के अन्दर, मौजा डिग्री एक छोटी-सी बस्ती है। वहाँ आज भी इसकी बुढ़िया माँ जिन्दा है। नेपाल में यह सदमद बीस वर्ष रहा। अपने दुष्कर्मों के चलते बार-बार इस पर वहाँ पिटाई पड़ी है। जमनिया मठ का प्रबन्ध जिनके हाथों में है, स्वार्थ-साधन की अपनी सनक में भोली-भाली हिन्दू जनता को वे आखिर कब तक धोखा देते रहेंगे?"

"ख—जमनिया का मठ तस्कर-व्यापार का छोटा-मोटा अड्डा नहीं है क्या? घड़ियाँ, फाउण्टेनपेन, ट्रांजिस्टर, टेपरिकार्डर, रेशमी-ऊनी माल, शुद्ध सोने की अँगूठियाँ, टार्च, लाइटर, कैमरे, और अन्य बहुत-सारी वस्तुएँ मठ की [illegible] के लिए सुलभ नहीं है क्या?"

"ग—असम्भव चमत्कारों का जाल बिछाकर दूर-दूर तक के लोगों को फाँसा जाता है—[illegible] [illegible] की बहुएँ और [illegible] [illegible] की [illegible] का शिकार बनाकर छोड़ दी जाती हैं...जमनिया का यह [illegible] की [illegible] नहीं नहीं है या क्या है?"

"घ—चार-पाँच वर्ष पहले मठ के अन्दर, दुर्ग की [illegible] में एक अबोध शिशु की बलि नहीं चढ़ाई गई?"

"ङ—जमनिया का [illegible] [illegible] का

सूअर

बेचारे बाबा को तो नाहक गालियाँ देता है तू !

भगौती, क्या हो गया है तुझे ? तेरे लिए बाबा अपनी जान भी दे सकता है।

जी, दे ली जान बाबा ने !

सभी अपने-अपने मतलब के बन्दे होते हैं…कोई किसी की खातिर जान नहीं देता है यहाँ !

तू अब किसी के लिए अपनी जान नहीं देगा ?

इमरितिया अगर तेरी तरफ अपना हाथ बढ़ाए ? उस पर तू अप[illegible] जान निछावर नहीं करेगा ?

क्या कहा ! इमरितिया ?

मेरी ओर हाथ बढ़ाएगी ? इमरितिया ?

मस्तराम हरामजादे को फाड़कर खा नहीं जाएगा ? खा जाएग[illegible] फाड़ कर ! सच ?

सच ! इमरितिया तेरी तरफ खिंचेगी तो पहले मस्तराम तुझे फाड़ डालेगा, हाँ !

मस्तराम, तू मुझे फाड़ डालेगा ?

मैं इमरितिया का गला घोंट दूँगा…

तू मेरा क्या करेगा ?

बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा ! लेकिन मैं तेरी मिट्टी पली[illegible] दूँ…मुझे समझ क्या रक्खा है तूने ? कमीना…

इमरितिया इस वक्त मेरी हिरासत में है…फिलहाल इस पर मेरा काबू है !

इमरितिया ! तेरी जान !…

मैं इमरितिया की बोटी-बोटी नोच लूँगा, तू क्या कर लेगा [illegible]

तू हवालात के अन्दर बन्द है !

तू अभी कहाँ जेल की ऊँची मोटी चहारदीवारियों [illegible] [illegible]…

मैं चाहूँ तो तू यहीं का यहीं ठंडा हो जाए ! और पता [illegible]

जहरीला फोड़ा है। इसे हम कब तक बर्दाश्त करेंगे ?"

भगौती का माथा फट जाएगा अब तो !

आगे और बतरनें उससे नहीं पढ़ी जाएँगी।

होश जवाब दे रहा है···

यह फिर बिस्तरे पर ढेर हो जाएगा !

उसने आँखें मूँद ली हैं···

मैं पहले से जानता था !

मुझे पता था, एक-न-एक दिन इस गुब्बारे में पिन चुभो दी जाएगी··· सो रंगीन गुब्बारा पिचक गया ! रबड़ का भद्दा छिछड़ा गुब्बारा धूल में पड़ा है···अब इसमें कौन हवा भरेगा ?

मुझे मालूम था, यही होना है।

साला मस्तराम !

तुझसे किसने कहा था कि उस साधू को धुनक के रख दे !

देखना है कहाँ मिलता है अब तुझे ठौर !

साले दिन-रात मालपुए चबाते थे···जब देखो खीर सुडक रहे हैं··· बादाम की ठंडाई छन रही है, केवड़ा और गुलाबजल छिडका जा रहा है, पिस्ते छीले जा रहे हैं ! जाने कहाँ-कहाँ के मँगते जुते थे। शऊर और सलीके से इनका क्या वास्ता ?

हम सौ दफे बनारस में भैरो जी के दरबार में गए होंगे···वहाँ का पंडा आहिस्ते-से डंडा उठाएगा और धीमे से तुम्हारी पीठ छू देगा उस डंडे से ! वह अपना जोर नहीं आजमाएगा, भगत की पीठ को धुनक कर नहीं रख देगा ?

तू ससुर किसी की पीठ पर बेंत फटकारने वाला होता कौन है ? मस्तराम साला···

और, तेरी अक्ल क्या घास चरने गई थी बाबा ? तुझसे तो इस बेवकूफी की उम्मीद नहीं थी हमें !

तुझे तो निहायत समझदार इन्सान समझता था बाबा !

ले, अब, भुगत अपनी करनी का फल ! काट, कितनी सजा काटेगा ! ओघड नहीं ओघड़ की गाँड ! साले ! हरामी ! उल्लू के पट्ठे !···

सूअर

बेचारे बाबा को तो नाहक गालियाँ देता है तू !

भगौती, क्या हो गया है तुझे ? तेरे लिए बाबा अपनी जान भी दे सकता है।

जी, दे ली जान बाबा ने !

सभी अपने-अपने मतलब के बन्दे होते हैं···कोई किसी की खातिर जान नहीं देता है यहाँ !

तू अब किसी के लिए अपनी जान नहीं देगा ?

इमरितिया अगर तेरी तरफ अपना हाथ बढ़ाए ? उस पर तू अपनी जान निवछावर नहीं करेगा ?

क्या कहा ! इमरितिया ?

मेरी ओर हाथ बढ़ाएगी ? इमरितिया ?

मस्तराम हरामजादी को फाड़कर खा नहीं जाएगा ? खा जाएगा ? फाड़ कर ! सच ?

सच ! इमरितिया तेरी तरफ खिंचेगी तो पहले मस्तराम तुझे ही फाड़ डालेगा, हाँ !

मस्तराम, तू मुझे फाड़ डालेगा ?

मैं इमरितिया का गला घोंट दूँगा···

तू मेरा क्या करेगा ?

बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा ! लेकिन मैं तेरी मिट्टी पलीद कर दूँ···मुझे समझ क्या रखा है तूने ? कमीना···

इमरितिया इस वक्त मेरी हिरासत में है···फिलहाल इस औरत पर मेरा काबू है !

इमरितिया ! तेरी जान !···

मैं इमरितिया की बोटी-बोटी नोच लूँगा, तू क्या कर लेगा मेरा ?

तू हवालात के अन्दर बन्द है !

तू अभी अर्से तक जेल की ऊँची मोटी चहारदीवारियों के अन्दर घुटता रहेगा···

मैं चाहूँ तो तू यहीं का यहीं ठंडा हो जाए ! और पता तक न चले

किसी को···

भगौती को फँसाना चाहता था तू ? तू जान-बूझकर उस साधू की पीठ पर बेंत नहीं बरसा रहा था ?

देख लिया किस्मत का खेल ! बाबू भगौती प्रसाद बेदाग निकल आए और तू साला हवालात के अन्दर बन्द है···खाँचे का मुर्गा !···

"मालिक, नाश्ता क्या बनेगा ?"

"जग गए महाराज ? हो गया सबेरा ?"

"जी, मालिक ! सुरुज नहीं उगे हैं अभी !"

"अच्छा ! ठहरो, खोलता हूँ किवाड़···"

"नहीं मालिक, अभी बहुत सवेरा है। आप आराम कीजिए अभी ! मैं सिरिफ नाश्ता के लिए मालूम करने आया !"

"माई जी से नहीं पूछ लिया ?"

"आप नहीं बतलाइएगा ?"

"पूड़ियाँ निकाल लेना। मैं नहीं करूँगा नाश्ता···पहले चाय तो तैयार कर लेना !"

"जी, मालिक !"

"दूध मिलेगा सबेरे-सबेर ?"

"मिलेगा मालिक !"

थोड़ा रुककर महाराज ने पूछा—"अँगीठी ले आऊँ, आग सेंकेंगे मालिक ?"

कमरे के अन्दर से जवाब नहीं पाकर उसने आँखें फैला लीं और जीभ को दाँतों-तले दबाकर मन-ही-मन अपने आप से कहा : कपड़े सँभाल रहे हैं मालिक, रात को धारीदार पाजामा पहन कर लेटते-सोते हैं···बंगाली तो हैं नहीं कि लुंगी पहनकर आधा नंगा रह लेंगे !

लुंगी से महाराज को सख्त नफरत है। वह लुंगी को कभी पसन्द नहीं कर सका। बंगाली परिवार में अभी-अभी दुर्गापूजा के मौके पर उसे धोती-कमीज के साथ-साथ एक फर्द लुंगी का चदरा भी मिला था। महाराज उससे बिछावन की चादर का काम लेता है !

किवाड़ की फाँक से कान लगाकर वह कमरे के अन्दर की ओर

अपना ध्यान जमाता है कागज की सरसराहट सुनाई देती है। लगता है, मालिक देर से जग रहे हैं। कुछ पढ़-लिख रहे होंगे।

किवाड़ का एक पट्टा खुलता है।

"अँगीठी ले आऊँ मालिक ?"

"नहीं, अँगीठी क्यों लाओगे ?"

महाराज सीढ़ियों से उतरते-उतरते भगौती को हिदायत सुनता है—"पानी गर्म करो, अभी बाबू लोगों को जरूरत पड़ेगी।"

"जी मालिक।"

"और सुनो, नीम की दतुअन नहीं मिल सकती है ?"

"मिल जाएगी। देखता हूँ..."

"न मिले तो रहने दो। ब्रश से दाँत साफ कर लूँगा। उनके पास भी मुँह धोने का अपना सामान है ही। तुम पानी भर गर्म कर दो।"

"जी !"

"माई जी क्या करती हैं ?"

"पूजा पर बैठी हैं मालिक !"

भगौती ने देखा, गेरुआ धोती की निचली छोर से बूँद-बूँद पानी टपक रहा है। छत की बाहरी रेलिंग से अवधूतिन की गेरुआ धोती लटक रही है। उसमें कहीं भी किसी तरह का दाग नहीं है। [illegible] रंग में रँगी हुई, बिना किनारियों की सूती धोती सूखने-सूखने सूखने के लिए फैला दी गई है ...[illegible] हो गई होगी।

इतना सवेरे नहा लिया है !

स्नानादि है तो महाराजी नहीं सवेरे ?

नहा-धोकर पूजा पर बैठ गई हैं... [illegible] होगी ?

[illegible]

[illegible]

दस बजे नहीं, दस बजे तो वकील साहब निकल जाएँगे। भगौती को आठ-साढ़े आठ तक वकील के यहाँ पहुँचना है।

भगौती सात बजे नहा लेंगे।

नाश्ता तो नहीं करेंगे। आधा गिलास दूध पीकर निकलेंगे भगौती।

खाना खाने के लिए डेढ़-दो बजे तक वापस आ जाएँगे।

"राम राम, बाबूजी !"

"राम राम सेठ जी। अच्छी तरह सोये आप लोग ?"

"हाँ, बाबूजी !"

दूसरा नेपाली बोला : "पता ही नई चला कि रात कइसे गुजर गया सा'ब ! भोत अच्छी नींद आया सा'ब !···ही-ही-ही ही···आप सोया साब, अच्छी तरै ?"

"जी, हाँ !" भगौती ने कहा, "लैट्रिन जाएँगे ?"

"नहीं सा'ब," पहला सेठ बोला, "अभी नहीं !"

उसके दाहिने हाथ में जगमगाता हुआ सिगरेट-केस था, बायाँ हाथ पैंट की पाकेट के अन्दर।

लाइटर निकल आया तो एक सिगरेट आगे बढ़ाकर उसने भगौती की तरफ दिखलाई : "लीजिए सा'ब, ठहरिए, नीचे आकर धरा दूँ !"

"नहीं" भगौती ने नीचे बरामदे से कहा, "अभी नहीं, चाय के बाद चलेगी···आप जला लीजिए।"

भगौती ब्रश से दाँत साफ कर रहे थे। सफेद झाग मुँह के अन्दर भरा था, अच्छी तरह बोल पाना असंभव हो रहा था, फिर भी अस्फुट उच्चारण में पूछा : "वो विराट-नगर वाला भाई अब तक सो रहा है ?"

"जी, सा'ब !"

"सोने दीजिए, कई दिनों का थका होगा बेचारा !"

अब दूसरा सेठ भी सिगरेट फूँक रहा था।

महाराज ने एक बाल्टी गर्म पानी चौके से बाहर निकालकर बरामदे पर वहाँ रख दिया जहाँ से पाखाना और नहानघर करीब थे।

एक-एक सिगरेट फूँककर दोनों नेपाली सेठों ने

चाय ऊपर ही पहुँच गई, भगौती वाले

"महाराज, बिस्कुट ले आते।"

भगौती के इस आदेश का आगंतुकों ने अनुमोदन नहीं किया तो रसोइया बोला—"नाश्ता ले आऊँ?"

"अभी नहीं," मेहमानों ने कहा, "लेकिन चाय एक-एक कप और लेंगे।"

अब तक तीसरा आगंतुक भी बिस्तरा छोड़ चुका था। चाय-चक्र में साथ देने के लिए वह भी जल्दी-जल्दी आँख-मुँह पोंछता हुआ आ गया।

भगौती ने उससे पूछा, "तुम्हारे मोरंग (पूर्वी नेपाल) के इलाके में इस बार धान की फसल कैसी है?"

"बहुत अच्छी।" वह बोला।

चौथी प्याली की नाक टूटी थी। वह मानो विराटनगर वाले उसी मेहमान के लिए अब तक खाली थी। और किसी ने मानो उस विकलांग लघु पात्र की ओर इससे पहले ध्यान ही नहीं दिया था। बेचारी के होंठ भी कटे-फटे थे। चमक उड़ गई थी। एक अजीब फीकापन उसे दयनीय बना रहा था।

तीसरा आगंतुक बार-बार बेचारी की तरफ देखने लगा और सामूहिक बातचीत की कड़ी में उसकी गर्दन पहले तो हिली, फिर तन गई।

भगौती ने इस चौथी प्याली में उसके लिए चाय भर दी।

उसने आखिर डिश-सहित कप को बाएँ हाथ की हथेली पर उठा लिया।

इस पर दोनों नेपाली सेठ ठठाकर हँस पड़े। ठेठ नेवारी भाषा में उन्होंने एक-दूसरे से कुछ कहा और रह-रहकर मुसकुराने लगे।

भगौती नेपाल वाली गोर्खाली भाषा तो अच्छी तरह समझ लेता था, ऊपरी नेपाली की यह नेवारी उसकी समझ में कभी नहीं आई। विराट-नगर वाला भाई नेपाली ही जानता था। सेठों का हँसना इन दोनों के लिए पहेली था।

"क्या बात हुई?" भगौती बोले, "कुछ हमें भी बतलाइए न!"

"चाय में मीठा बहुत ज्यादा है—" एक सेठ ने यह कहा और दूसरा फिर हँसने लगा।

भगौती समझ रहे थे कि उन्होंने असल कारण नही बतलाया है। विराटनगर वाला भाई नेपाल का मूल-निवासी नही था, मारवाड़ी था। उसे शक हुआ कि, हो न हो, उसी के बारे में नेपालियो का आपसी परिहास चल रहा है।

उधर से रसोइया एक बढ़िया कप ले आया, बोला—"मालिक, बड़ी गलती हो गई।" और उसने विराटनगर वाले भाई की हथेली पर से टूटी नाक वाला कप उठा लिया•••

अब भगौती को भी हँसी आ गई।

मारवाड़ी भाई भी मुस्कुराने लगा।

फिर चारो जने मिलकर खूब हँसे!

"आपने बतलाया क्यों नही?" भगौती ने तीसरे मेहमान से कहा, *"इस तरह की तकल्लुफ ठीक नही।"*

"घर में सब चलता है!" वह बोला और चाय सुड़कने लगा।

भगौती कहने लगे—"महाराज ने खुद ही अपनी भूल दुरुस्त कर ली। वर्ना, मैं आज उसकी बड़ी फजीहत करता। इस किस्म का कप किचन के अन्दर रखना भारी फूहड़पन है साहब!"

थोड़ा रुककर उन्होने नेपाली बन्धुओ से कहा—"और, माफ कीजिए, आपको इस गलती का पता चल गया था, फिर भी हमें बतलाया नहीं!"

इस पर बेहद चमकती हुई घड़ी वाले पहले नेपाली सेठ ने माफी माँगी और सिगरेट-केस खोलकर भगौती के सामने कर दिया। अनुरोध की मुद्रा मे उसकी ठुड्डी हिल रही थी।

सिगरेट सुलगाकर भगौती नीचे उतर आए।

उन्हे बाहर जाने के लिए तैयार होना है।

वह अकेले निकलेंगे।

अभी वह भाई इमरतीदास से नहीं मिलेंगे।

हाँ, राम-राम बोलेगी तो भगौती भी राम-राम बोल देंगे। बस, अभी इतने-भर का वक्त मिलेगा।

लेकिन बाबाजी नहीं मानेगा।

आधा गिलास दूध या नीबू-पानी या खाने-पीने की कोई भी चीज,

ज़रा-सी कुछ भी अगर महाराज के हाथों से लेकर भगौती अपने हलक से नीचे नहीं उतार सँगे और यों ही बाहर निकल जाएँगे तो सारा दिन उस गरीब ब्राह्मण का जी कचोटता ही रहेगा।

दुपहर-बाद, ढाई बजे भगौती लौटे हैं। सुभाष नगर, बाजार, कचहरी, चौक···जाने कहाँ-कहाँ भटकना पड़ा है।

इमरितिया ने अपने हाथों से खीर तैयार की है, चिरौंजी और किस-मिस डालकर। बहुत दिनों बाद वह आज रसोई के अन्दर बैठकर ढंग की कोई चीज़ बना सकी है।

लेकिन भगौती की भूख मर गई है

मुश्किल से एक परावँठा खत्म कर पाए हैं। बार-बार कहने पर भी चार चम्मच से ज्यादा खीर कहाँ ले सके भगौती ?

इमरितिया की समझ में नहीं आ रहा है कि भगौती को आखिर हुआ क्या ? वह इन्हीं हाथों से उन्हें कई-कई कटोरे खीर खिला चुकी है। वहाँ, जमनिया में भगौती से ज्यादा खीर का शौकीन और कौन था ?

बोले—"शाम को यह खीर काम आएगी। तीन तो मेहमान ही हैं। दो-तीन जने और भी रहेंगे। शायद लालता भी आ जाएँ शाम तक !"

"बस" इमरितिया सोचती है, "इनका जी तो आज खीर देखकर ही अघा गया ! वाह रे, खीर के शौकीन ?"

अब आराम करेंगे शायद !

नहीं, आराम कहाँ करेंगे ! आराम करने से काम चलेगा ?

बाहर निकलेंगे भगौती ··

तीनों आगन्तुक साथ ही निकले हैं।

खाना खाकर डेढ़ बजे निकल गए थे। सात बजे लौटेंगे। एक ने कहा था, देर भी हो सकती है ?

कितनी देर हो सकती है ?

नौ तक तो लौट ही आएँगे।

लेकिन भगौती खुद सात से पहले ही लौटेंगे। दो-तीन जने मिलने आएँगे सात बजे।

"महाराज, सुनते हो ?"

"जी, मालिक !"

"शाम को सात बजे नाश्ता और चाय का इन्तजाम करके रखना, दो-तीन के लिए। चौक से मलाई के लड्डू ले आना…"

भगौती पाँच का नोट बढ़ाते हैं, आगे आकर बाबा जी उसे थाम लेता है।

माई इमरतीदास चुपचाप अपने कमरे के बाहर, दीवार से पीठ टिकाए खड़ी है। सूनी-सूनी निगाहों से जमनिया मठ के अधिष्ठाता की तरफ देख रही हैं…उस रोज उदासी अधिक थी। आज फिर भी थोड़ा हरापन है। लगता है, कल किसी अच्छे सैलून मे इत्मीनान से आधा घण्टा बैठे थे।

आज भगौती माई इमरतीदास की नजरों को खूब जँच रहा है… बड़ी-बड़ी आँखों वाला यह खूबसूरत चेहरा इतने गौर से उसने पहले शायद ही कभी देखा हो।

भगौती की पलकें माई की तरफ क्यों नहीं उठ रही हैं ?

महाराज को यह सब जाने कैसा-कैसा मालूम देता है!

वह रसोईघर के अन्दर चला गया है।

वह पीढ़े पर बैठकर बाहर की ओर कान लगाए हुए है।

भगौती एक बार फिर सीढ़ियों से ऊपर गए हैं। कोई कागज रह गया होगा। ले आए हैं और आहिस्ते से बाहर निकले हैं।

महाराज रसोईघर से बाहर आया है। दरवाजे की सॉकल चढ़ाने के लिए बरामदे से गुजरकर बाहरी कमरे की ओर बढ़ेगा।

इमरतिया ने उसकी तरफ नजर नहीं उठाई है। अपने रूम के अन्दर आ गई है…

मुहल्ले की श्रद्धालु महिलाएँ अभी थोड़ी देर मे माई से मिलने आएँगी।

उन्होंने समय ले रखा है।

घण्टे-भर का सत्संग रहेगा।

महाराज को इस प्रोग्राम का पता है, लेकिन उसका भी अपना प्रोग्राम

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

"अच्छा !"

"अब तक तो [illegible] ..."

"जरूर !"

ग्यारह बज ही गए आखिर।

आगन्तुकों का दल उठे बिना [illegible]।

[illegible] आए थे, एक-दो घंटे तक उनसे बातें होती रहीं।

सामना का इन्तजार कर रहा हूँ। बस दस बजे तक उसे आ ही जाना चाहिए। न आ सका तो तार आएगा।

अपने वकील को साथ लेकर मुद्दई पक्ष के वकील से मिला था। सुलह-समझौते की बात चली। हमारी तरफ से ही उठाई गई…

मुद्दई-पक्ष का वकील हमारे वकील से कहीं सीनियर है। पी० के० दास। जिले-भर में दास बाबू का नाम है। बंगाली दिमाग का लोहा सभी मानते हैं। हमारा वकील नौजवान है, काफी तेज-तर्रार है।

अखबारों में इधर जमनिया-मठ के बारे में इतना ज्यादा छपा है कि हवा का रुख मुकदमा खुलने से पहले ही बाबा के खिलाफ हो गया है।

सुलह का जिक्र छिड़ते ही दास बाबू बोल उठा—"मर्डर, रेप, स्मगलिंग, जासूसी, जोर-जुल्म, कौन-सा चार्ज नहीं लगाया गया है इस बाबा पर? स्वामी अभयानंद ने कैम्प-मजिस्ट्रेट के सामने अपना जो बयान दिया था, उसकी नकल आपने देखी होगी। स्वामी घायल हालत में ही कैम्प-मजिस्ट्रेट मिस्टर जे० पी० बाटलीवाला से मिला था। स्वामी के साथ एक पोलिटिकल पार्टी के दो-तीन लीडर भी थे। यह मामूली पुलिस-केस या फौजदारी का अदना मामला नहीं है…"

दास बाबू सिगार सुलगाए हुए था।

दो क्षण सोचकर फिर उनने मेरी तरफ मुखातिब होकर कहा—"अच्छा होता कि आप ढोंगी बाबा को अपनी किस्मत पर छोड़ कर अलग हट जाएँ उसे अपनी करनी का नतीजा भुगतने दें !"

इसके बाद, मुझसे हटकर, दोनों वकील अन्दर वाले कमरे में चले गए। काफी देर उनकी गुफ्तगू चली और वे बाहर निकल आए।

अपने वकील अस्थाना साहब ने पीछे मुझे सब कुछ खुलासा बतला दिया।

क्या कहा आपसे अस्थाना साहब ने ?

कहा—"मिस्टर मनोली प्रसाद, सुन ली आपने दास बाबू की बात? अगर यही राय मैं देता आपको तो आप रंज हो उठते !"

"नहीं साहब, मैं जरा भी रंज नहीं होता" मुवक्किल भला वकील पर रंज होगा ? कहाँ जाएगा रंज होकर ! वकील से रूठ कर मुवक्किल को दुनिया में किस कोने में ठौर मिलेगा ?"

अस्थाना जी बोले—"बात यह है कि हमारी बिरादरी यानी वकीलों की जमात यों ही बदनाम है। आपको अन्दर-अन्दर बुरा लग रहा होगा... मगर हम इतना तो आपको बतला ही दें कि बाबा की लम्बी जटाओं का मोह छोड़िए ! भगवान ने आपको खाने-खरचने के लिए बहुत बड़ी जायदाद दी है, बढ़िया परिवार दिया है, बाल-बच्चे दिए हैं। अपने सीने पर साहब इतने अर्से तक आपने एक बदमिजाज औघड़ को बैठा रखा था ! जाने दीजिए, वह मलंग अपनी करतूतों के लिए जेल के अन्दर डाल दिया गया है, अब उसे वहीं पड़ा रहने दीजिए !"

अन्त में, वकील साहब ने मुझे आगाह कर दिया—"कहीं आप भी सरकार की निगाहों में आ गए तो वह और भी बुरा होगा। फिर आप भी कानून की गिरफ्त में आएँगे और आपके दोस्तों की परेशानियाँ कई गुनी अधिक हो जाएँगी। आप पैरवी करना छोड़ देंगे तो स्वामी अभयानन्द को इकतरफा डिग्री मिलेगी, बाबा को दो ही साल जेल के अन्दर रहना पड़ेगा..." फिर हँसकर अस्थाना जी ने मेरा हाथ दबाया और कहा—"मुकदमा उलझ जाता तो हम फायदे में रहते। हमारी राय के मुताबिक आप वहीं सचमुच बैठ गए तो वकीलों का भारी नुकसान

होगा!"

जवाब में मुझको मुस्कराना पड़ा मैंने हँसने की भी कोशिश की।

वकील साहब को मोड़ पर उनकी कोठी तक छोड़ आया। अशोक-मेकिन के अन्दर पहुँचकर कॉफी का आर्डर दिया, कुर्सी से पीठ और सिर टिकाकर पन्द्रह मिनट पलकें मूँदे रहा निश्चेष्ट!

रमशिरिया ने बड़े जतन से खीर तैयार की थी। मुझसे दो चम्मच भी खाया नहीं गया फौरन भागना पड़ा, सेठ बिर्धीचन्द के दामाद से मिलना जरूरी था न?

ओफ़! सबका माथा उलट गया है कोई सीधे मुँह बात नहीं करता! बाबा के प्रति लोगों में कैसी नफरत उमड़ आई है। यहाँ तक तो मैंने कभी सोचा नहीं था, सपने में भी नहीं!

चौक में 'रस्तोगी ब्रदर्स' से मुलाकात हुई। दोनों भाई मिल गए। छै-सात रोज हुए, खुद ही बड़े सेठ ने सौ-दो सौ देने की इच्छा प्रकट की थी। आज छोटा सेठ कहने लगा—"मुंशी जी, लगता है, आप अखबार नहीं देख रहे हैं आजकल! बाबा से क्या बयान दिलवाएगा कोर्ट में?"

मैं झेंप गया!

दस का नोट मेरी तरफ बढ़ा तो मैंने अपने को अपमानित महसूस किया।

मैंने नहीं लिया।

छोटे सेठ ने बड़े सेठ की तरफ देखा।

वह हँसकर बोला—"क्या दरकार है इसकी! अब मुंशी जी को मुकदमा लड़ने के लिए रकम का टोटा नहीं पड़ेगा। जो भी खर्च पड़ेगा, पाकिस्तान से आएगा। एक औलिया को बचाने के लिए कराँची-लाहौर वाले इतना भी नहीं करेंगे?"

मैं ऐंठकर रह गया!

अच्छा तो यही होता कि वह मुझे दो तमाचे ही लगा देता···

आज सारा दिन तमाचे खाता रहा हूँ! फिर और क्या खाता?

दूध पी लूँ थोड़ा···

जाड़े की रात है, कैसे कटेगी?

अब इसका क्या होगा ?

बाहर छत पर ले आकर लाइटर सुलगाकर छुआ दूँ इसमे ?

यह जमनिया वापस जाएगा ?

हाथ अपने आप लाइटर पर चला जाता है…

सिगरेट सुलगा लूँ ?

सुलगा ही लूँ।

फूँक मारकर लाइटर बुझा देता हूँ…

कमरे से निकलकर छत पर चहलकदमी करने लगा हूँ…

अगहन शुक्ल पक्ष की दसवी चाँदनी है।

सर्दी है तो क्या हुआ, आसमान साफ है।

आसमान साफ है, लेकिन उम्मीद धुंधली है।

धुंधली नही चौपट !

महादेव 'व्याकुल' मिलने आया था न ?

क्या कह रहा था ? लीडर आदमी ठहरा, सभी जगह आना-जाना है; पक्की बात का पता रहता है उसे। तुमसे कुछ नही छिपाएगा, सही-सही बतला देगा सब कुछ।

हाँ, महादेव और तुम दसवी मे साथ-साथ थे न ?

हाँ, साथ थे। महादेव ने उसी वर्ष अपना उपनाम 'व्याकुल' रखा था। वह पास हो गया था, मैं फेल…

महादेव बतला रहा था—"भगौती, क्या समझते हो ? सेठ बिर्दीचन्द, ठाकुर शिवपूजन सिंह और रानी साहिबा तुम्हारा साथ देंगे ? सारे के सारे हाथ झाड़कर अलग हो जाएँगे ! तुम्हारी अरथी कहाँ नही उठ रही है न ? यह तो उस औघड़ बाबा की अर्थी उठ रही है, जनता ने जिसे अपने दिल से उतार दिया है। इसकी अर्थी अकेले ही ढो-ढोकर तुम्हें मसान तक पहुँचाना है। कोई और आदमी इस अर्थी मे अपना कंधा नही लगाएगा…!"

हाँ, वह ठीक ही कह रहा था तुम्हें !

सेठ बिर्दीचन्द का [illegible] के [illegible] के [illegible] में [illegible]-[illegible] है। दो-तीन [illegible] से मजदूरों की [illegible] चल रही

है। बड़ी मुश्किलों से अब आकर समझौते का रास्ता खुला है। स्वामी अभयानन्द का जिस पार्टी से ताल्लुक बतलाते हैं, उसी पार्टी के असर में इधरवाली धोती मिलों के मजदूर मुद्दत से रहे हैं। सेठ जी ने अपना आदमी भेजकर प्रदेश की राजधानी में बैठे हुए श्रम मन्त्री तक यह बात पहुँचा दी है कि जमनिया के बाबा से उनका कभी कोई वास्ता नहीं रहा। सेठ बिर्धीचन्द कितनी दूर की सोचता है भगौती ? जिस मरे हुए साँप को तुम अब भी गले में लपेटे हुए हो, सेठ उस साँप की पहचान तक से इन्कार कर गया !

भई भगौती, यह तो मानना ही पड़ेगा कि बनिया जमींदार से कई गुना अधिक चतुर होता है ! नहीं ? मैं गलत कहता हूँ भगौती ?

तुम भला गलत कहोगे ब्रह्मदेव ? मैं तो स्कूल में भी तुम्हें अगुवा मानता था···

साल में चार-चार बार मेला लगता था जमनिया में। ठीक है कि मठ को जमाने के लिए ये मेले-ठेले हमीं ने शुरू करवाए थे। ठीक है कि कुल मिलाकर पचीस-तीस हजार की आमदनी मेला कमेटी को हो जाती थी, पन्द्रह हजार से कम तो कभी नहीं हुई !

शुरू से लेकर अब तक कौन इस मेला-कमेटी का अध्यक्ष होता आया है ?

सच-सच बोलो सेठ, मैं कि तुम ? वाह, अपनी गर्दन तुमने दूसरी तरफ फेर ली ! मुझसे नजरें भी नहीं मिलाओगे ?

पिछले कई वर्षों क्या ऐसा नहीं होता रहा कि खर्चा-वर्चा काटकर, ी की आधी रकम तुमने अपने अलग-अलग धन्धों में लगा ली

तुमने कभी खाता नहीं खुलने दिया ! हमेशा इन्कम टैक्स-की धाँधली का बखान करके हमें तुम डराते रहे···मेरा छोटा ० काम० पास है। एक बड़े बैंक की कानपुर शाखा में अच्छे तीन-चार वर्षों से जमा है। मेला-कमेटी के हिसाब को अस-बारे में उसने कई बार अपना शक जाहिर किया था। वह इस भी कहाँ कभी सहमत हुआ कि कमेटी की बचत वाली धनराशि

मठ के मैनेजर हर बार सेठ जी की ही रोकड़ में जमा करते जाएँ।

बस, यह सब सालता और ठाकुर की जिद पर होता रहा· ·पता नहीं सेठ विर्धीचन्द का मुनीम कौन-सी जड़ी इन दोनों को सुघाता रहा।

पिछले चुनाव में जोरों से अफवाह उड़ी कि जमनिया मठ की ढेर सारी रकम सेठ विर्धीचन्द ने अपने खानदानी गुरु महाराज के बड़े लड़के को अर्पित कर दी ··राजस्थान का वह जवान एडवोकेट लोकसभा की उम्मीदवारी के लिए स्वतन्त्र पार्टी का टिकट पा गया था। हार गया बेचारा। पीछे अखबार में किसी ने लिखा था "ढोंग और अन्धविश्वास के सहारे उपार्जित की हुई मठवालों की यह धनराशि श्मशान के भस्म की भाँति व्यर्थ साबित हुई।"

आज तुम्हारे लिए भी जमनिया मठ की वह धनराशि मसानी राख की तरह फिजूल साबित हो गई भगौती।

अच्छा हुआ, तुम्हारा मोह टूट रहा है! नहीं टूटेगा?

टूटेगा कैसे नहीं? टूटना होगा उसे, बिना टूटे रह कैसे जाएगा?

यह मोह नहीं टूटा तो तुम्ही टूट जाओगे भगौती।

न, न, न ··मैं भला क्यों टूटूँगा? कौन कहता है, भगौती टूटेगा?

भगौती लचक जाएगा, भगौती सात जगहों पर टेढ़ा-मेढ़ा हो जाएगा, झुक जाएगा भगौती। टूट तो वह कभी सकता ही नहीं।

शाबाश, बेटे।

शाबाश, भगौती के बच्चे!

शाबाश, भगौती के नाना!

शाब्बाश राजा ··

यह कौन था भाई?

किसके बारे में पूछ रहे हो?

अभी-अभी जो शाबाशियाँ दे रहा था? उसी के बारे में पूछ रहे हो?

ठहरो, सिगरेट जला लूँ!

बस, एक सेकेण्ड···

भगौती छत की रेलिंग से सटकर खड़ा होता है।

लाइटर साथ है, निचली पाकिट में। ऊनी कुर्ते में नीचे दोनों तरफ पाकिटें हैं। लेकिन सिगरेट की पैकेट साथ नहीं है···रूम के अन्दर लौटना पड़ेगा ?

जी हाँ, घड़ी देख लीजिए !

साढ़े बारह ! जी !

नीचे चलिए बाबू भगौती प्रसाद ! सिगरेट ही फूँकनी है ? पानी-वानी पीजिएगा ?

रसोइया सोया नहीं है।

उसके कान छत की तरफ लगे हैं ! माई जी ने दो बार उसे सावधान कर दिया है, "मालिक की तबीयत ठीक नहीं है, महाराज, तुम उनका *खयाल रखना !"*

मालिक सोएँगे नहीं ?

सारी रात छत पर फेरा लगाते रहेंगे ?

क्या हुआ है ?

माथा गरम हो गया है।

पूछूँ चलकर ?

नहीं, अब आहट कहाँ आ रही है !

सिगरेट पी रहे हैं खड़े होकर ? या, रुककर किसी तरफ कुछ देख रहे हैं ?

पूरब से गाड़ी आ रही है···

मालिक गाड़ी देख रहे हैं ?

यह लो, छत से नीचे आ रहे हैं।

अब मैं चलकर पूछ लूँ न ?

"मालिक कैसी तबीयत है ?"

"क्यों, क्या हो गया है मुझे ?"

"आपको नींद क्यों नहीं आती है ?"

"तुम क्यों जाग रहे हो ?"

"जी मालिक, आप सो जाएँगे तब मैं सोऊँगा। आपको नींद नहीं आएगी तो मैं भी जागता रहूँगा···"

गरीब ब्राह्मण की इस सिधाई पर बाबू भगोती प्रसाद को हँसी आ रही है।

अपने कमरे के अन्दर जाकर वह बिस्तरे पर पहले सिगरेट की पैकेट टटोलते हैं।

पैकेट हाथ आ गई।

अब उन्होंने स्विच ऑन किया।

फिर हँसकर महाराज से कहने लगे—"देखो, मैं जलती बिजली छोड़ गया था न? तुम आकर ऑफ कर गए थे। अब तो खैर, मैं भी सो ही जाऊँगा। बस, एक सिगरेट और जला लूँ..."

महाराज संजीदा मुद्रा में खड़ा है।

वह अन्दर-ही-अन्दर खुश है कि मालिक की तबीयत ठीक है, अच्छी तरह बोल-बतिया तो रहे हैं...माथा-वाथा कुछ गरम नहीं है! नाहक माईजी फिकर कर रही थी न?

महाराज को सचमुच ही मालिक की चिन्ता व्याप गई थी ...माईजी ने आँखें फैलाकर और आवाज को भारी बनाकर किस तरह कहा था कि अपने मालिक का खयाल रखना! और, यहाँ तो उल्टे मालिक ही को चाकर का खयाल है! लेकिन चाकर पहले किस तरह सो जाएगा? एक बजे रात तक मालिक जागता रहे और नौकर को चिन्ता नहीं होगी?

"महाराज, जाओ! अब मैं भी सो ही जाऊँगा..."

वह सीढ़ियाँ उतरने लगा तो भगोती ने कमरे को अन्दर से बन्द कर लिया।

एक बात याद आई ...कमरा खोलकर महाराज से कहा है—'मुझे सवेरे आठ-नौ बजे से पहले जगाना नहीं। बस दिन-भर मैं आराम ही करूँगा, बाहर नहीं निकलूँगा...समझा?"

"जी मालिक?" नीचे से आवाज आई।

अब अन्दर बन्द होकर भगोती कपड़े बदलेंगे। धारीदार कुर्ता-पजामा कहाँ है? वो रहा, खूँटी से टँगा है...

और फिर, लेटे-ही-लेटे हाथ बढ़ाकर अन्दाजों से कमरे का बैग खोज रहे हैं...

अब चांदी की दो डिबिया खाली नही है। अफीम की दस गोलियाँ नेपाली सेठ ने जाते वक्त दी थी।

भगोती ने आधी गोली मुँह के अन्दर डाल ली है···अभी उसे यह पानी के सहारे ही निगलेंगे। दो-तीन बार चबलाकर निगलना हो तो दूध चाहिए, मलाई चाहिए।

खिडकियाँ बन्द है न ?

ऊपर वाले दोनो गोल छेद हवा के लिए काफी हैं···

स्विच आफ करके लेट गए है।

अडी चादर बदन पर जम गई, लो, पलकें भी मूँद ही लेंगे भगोती···

दो रात की नींद बाकी है, फिर भी इतनी जल्दी वह नहीं आएगी! गोली का असर भी थोडी देर बाद ही शुरु होगा।

मुँदी हुई पलकों के अन्दर लगता है, खयालों के हुजूम थिरकने लगे हैं···

भगोती की आँखें बन्द हैं, लेकिन वह सो नहीं रहे हैं!

सो नहीं रहे हैं तो जाग भी नहीं रहे हैं···

लो, पुलिस वाले आ धमके।

भगोती को उन्होंने गिरफ्तार कर लिया है···हाथों में हथकडियाँ डालकर पुलिस वाले उसे हवालात की तरफ ले जा रहे हैं!

चौक होकर क्यो ले जा रहे हैं ?

चौक में 'रस्तोगी ब्रदर्स' वाली दुकान के सामने पुलिस वालों की रफ्तार धीमी हो गई है· 'दोनो सेठ भगोती पर थूकते हैं! छोटा फबती कसता है, "साला हरामी पाकिस्तानी एजेन्ट का दलाल! सुअर का बच्चा, वतन-फरोश कहीं का!"

हवालात के अन्दर मग्गनराम पहले तो मुसकराता है, फिर दाँत पीसकर कहता है, "आ गए बच्चू ?"

बाबा ठहाके लगाता है ··फिर अँगूठा दिखलाता है। बोलता कुछ नहीं है।

इमरितिया मर गई है···गेरुआ कपड़ों में लाश ढकी है···मग्गनराम अकेले ही अवधूतिन की लाश को अपने कन्धों पर लादे मसान की तरफ

जा रहा है !

मठ के खेतो मे तैयार फसल की लूट मची है ··भगौती के बैलो को खोलकर लोगो ने भगा दिया है ·मठ के दोनो घोड़े गायब हो गए हैं· · बिजली का इजन ठप है, पानी नही निकल रहा है कुएँ से, समूचा बाग सूख रहा है।

जमनिया मठ के प्रवेश-द्वारा पर दूर से ही चमक रहा है "चन्द्रशेखर आजाद सैनिक शिक्षण शिविर।" नजदीक से देखने पर छोटे अक्षरो मे दीख रहा है—"*मुख्य अधिष्ठाता, स्वामी श्री अभयानन्द।*"

दोनो कलाइयो मे दस-दस घड़ियाँ है···गले मे घड़ियो की लम्बी माला लटक रही है इर्द-गिर्द ट्राजिस्टरो का अबार लगा है···सामने छोटी-छोटी क्यारियो मे खूँटियो की तरह फाउण्टेन पेनें जगमगा रही है।

चरस और गाँजे से भरे हुए बड़े-बड़े लेदर सूटकेसो से नशीला धुआँ उठ रहा है · दोनो नेपाली सेठ बुक्का फाड़कर रो रहे हैं। जक्शन की समूची पुलिस-फोर्स उन्हे घेरकर खड़ी है। विराटनगर वाला वह भाई रेलवे-मजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान दे रहा है, मुखबिर के तौर पर।

अरे ! यह सन्यासी कहाँ से आ गया इस मकान मे ? पहचानते हो, कौन है ?

भई, चेहरा तो तुम्ही से मिलता है !

नही ! मैं भला सन्यास धारण करूँगा !

मुझे कुछ बनना होगा तो मैं तात्रिक बनूँगा औघड़ ! कापालिक ! मसान मे ही डेरा डालूँगा !

बस, गौरी मेरा साथ देगी ! उसके हाथो मे लम्बा त्रिशूल होगा। सुर्ख कपड़ो मे जब वह किसी को लाल आँखो से घूरेगी तो उस आदमी के होश उड़ जाएँगे···

मैं गौरी को मस्तराम के पीछे लगा दूँगा।

गौरी उसे चबाकर कच्चे ही खा जाएगी···

बाबा···बाबा बा···बा रे बा !

घण्टा-भर बाद अफीम ने असर किया। गर्म चादर परे हटाकर पीनक मे ही खखारकर भगौती ने करवट बदली।

खुले मुँह से जरा-जरा-सी लार निकल रही है।

अब चाँदी की दो डिबिया बाकी नहीं है। अफीम की दस गोलियाँ भेजवानी थीं न जाने कब ही थी।

भगोती ने आधी गोली मुँह के अन्दर डाल ली है···अभी उसे वह चाटे के सहारे ही निगलेंगे। दो-तीन बार चबाकर निगलना हो तो दूध चाहिए, मलाई चाहिए।

खिड़कियाँ बन्द हैं न?

ऊपर वाले दोनों पाट ही हवा के लिए खाली हैं···

किवाड़ आज सबके भिड़ गए हैं।

मोटी चादर बदन पर जम गई, सो, पलकें भी मूँद ही लेंगे भगोती···

दो रात की नींद बाकी है, फिर भी इतनी जल्दी वह नहीं आएगी! गोली का असर भी थोड़ी देर बाद ही शुरू होगा।

मुँदी हुई पलकों के अन्दर लगता है, ख्वाबों के कुसुम खिलने लगे हैं···

भगोती की आँखें बन्द हैं, लेकिन वह सो नहीं रहे हैं!

सो नहीं रहे हैं तो जाग भी नहीं रहे हैं···

सो, पुलिस वाले आ धमके।

भगोती को उन्होंने गिरफ्तार कर लिया है···हाथों में हथकड़ियाँ डालकर पुलिस वाले उसे हवालात की तरफ ले जा रहे हैं!

चौक होकर क्यों ले जा रहे हैं?

चौक में 'रस्तोगी ब्रदर्स' वाली दुकान के सामने पुलिस वालों की रफ्तार धीमी हो गई है···दोनों सेठ भगोती पर थूकते हैं! छोटा फब्ती कसता है, "साला हरामी पाकिस्तानी एजेण्ट का दलाल! मुंशी का बच्चा, वतन-फरोश कहीं का!"

हवालात के अन्दर मस्तराम पहले तो मुस्कराता है, फिर दाँत पीसकर कहता है, "आ गए बच्चू?"

बाबा ठहाके लगाता है···फिर अँगूठा दिखलाता है। बोलता कुछ नहीं है!

इमरितिया मर गई है···गेरुआ कपड़ों से लाश ढकी है···मस्तराम अकेले ही अवधूतिन की लाश को अपने कन्धों पर लादे मसान की तरफ

जा रहा है ।

मठ के खेतों में तैयार फसल की लूट मची है ''भगौनी के बैलों को खोलकर लोगों ने भगा दिया है' 'मठ के दोनों घोड़े गायब हो गए हैं ' बिजली का इंजन ठप है, पानी नहीं निकल रहा है कुएँ से, समूचा बाग सूख रहा है ।

जमनिया मठ के प्रवेश-द्वारा पर दूर से ही चमक रहा है ''चन्द्रशेखर आजाद सैनिक शिक्षण शिविर ।'' नजदीक से देखने पर छोटे अक्षरों में दीख रहा है—''मुख्य अधिष्ठाता, स्वामी श्री अभयानन्द ।''

दोनों कलाइयों में दस-दस घड़ियाँ हैं'''गले में घड़ियों की लम्बी माला लटक रही है इर्द-गिर्द ट्रांजिस्टरों का अम्बार लगा है सामने छोटी-छोटी क्यारियों में खूँटियों की तरह फाउण्टेन पनें जगमगा रही हैं ।

चरस और गाँजे से भरे हुए बड़े-बड़े लेदर सूटकेसों से नशीला धुआँ उठ रहा है दोनों नेपाली सेठ सुबक-सुबक कर रो रहे हैं । जवानों की समूची पुलिस-फोर्स उन्हें घेरकर खड़ी है । विराटनगर वाला वह भाई रेलवे-मजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान दे रहा है, मुखबिर के तौर पर ।

अरे ! यह सन्यासी कहाँ से आ गया इस मकान में ? पहचानते हो, कौन है ?

भई, चेहरा तो तुम्हीं से मिलता है !

नहीं ! मैं भला सन्यास धारण करूँगा !

मुझे कुछ बनना होगा तो मैं तांत्रिक बनूँगा औघड़ ! कापालिक ! मसान में ही डेरा डालूँगा !

बस, गौरी मेरा साथ देगी ! उसके हाथों में लम्बा त्रिशूल होगा । सुर्ख कपड़ों में जब वह किसी को लाल आँखों से घूरेगी तो उस आदमी के होश उड़ जाएँगे'''

मैं गौरी को [illegible] के पीछे लगा दूँगा !

गौरी उसे चबाकर कच्चे ही खा जाएगी'''

हाहा''हाहा हा'''हा रे हा !

[illegible] अर्गैस ने [illegible] । [illegible] दीवान में ही [illegible] ।

मुँह से [illegible] स्वर निकल रहे हैं ।

इमरतीदास

परसों अगहन की पूर्णिमा थी।

आज मस्तराम से मिल आई हूँ। अब कौन जाने, कब हमारा मिलना होगा!

दास बाबू की कृपा न होती तो कैसे मैं मस्तराम से मिल पाती? अस्थाना साहब ने अर्जीनामा तैयार किया। छुटकारे के लिए प्रार्थना-पत्र, कचहरी के हाकिम के नाम। दास बाबू ने सिफारिश कर दी। अर्जीनामा कल ही पेश हुआ, कल ही मंजूर हो गया।

दास बाबू की विधवा बहन कई बार मेरे यहाँ सत्संग में आई है। मुझ पर दया आई और तब उसने अपने भाई से मेरे छुटकारे के लिए बार-बार कहा। अस्थाना साहब ने बड़ी हमदर्दी दिखलाई।

किस तरह हवा का रुख पलट गया है।

बाबा की सारी सुविधाएँ छीन ली गई हैं, वह जेल के अन्दर मामूली कैदी की तरह रह रहे है···जिस छोटी सेल मे पहले कुछ दिनो तक उन्हे रखा गया था, फिर उसी के अन्दर बन्द कर दिए गए।

लेकिन मस्तराम उसी तरह मस्त है···

मुझसे मिलने के लिए जेल-गेट के करीब लाया गया। हमारी आँखें चार हुईं, लेकिन हम दोनो गम्भीर बने रहे।

मेरी आँखे छलछला आईं।

उसकी निगाहो मे सूनापन तैर रहा था।

थोडी देर मेरी तरफ देखता रहा। फिर वह अपने गले से लटकती

 माल के मनको को सहलाने लगा था। रुद्राक्ष की यह माला मै ही तो

काशी से लाई थी पिछले वर्ष। तब से लगातार इसे मस्तराम ने पहन रखा है ...वह गेट की मोटी सलाखों को देख रहा था।

बड़ा जमादार करीब ही खड़ा था। दो कैदी वार्डर भी खड़े थे।

बाहर मैं खड़ी थी तो अन्दर वह भी खड़ा था।

आज उसके हाथों में हथकड़ियाँ थीं।

सोच नहीं पा रही थी, क्या बात करूँ।

फिर मस्तराम ने ही पूछा—"कहाँ रहोगी ?"

"हरद्वार," मैंने आहिस्ते से कहा।

"अपनी तन्दुरुस्ती का खयाल रखना ..."

"रखूँगी..."

"यहाँ कब तक हो ?"

"यहीं, दस-पन्द्रह रोज, और क्या !"

"हरद्वार में जी न लगे तो नर्मदा किनारे चली जाना, वहाँ अपने गुरुभाई रहते हैं...पता चाहो तो लिख लो।"

"नहीं, अभी नहीं चाहिए पता। जरूरत होगी तो पीछे मँगवा लूँगी...।"

"हाँ, खत डाल देना !"

अब हम फिर चुप हो गए।

करने को भला कौन-सी बात रह गई थी !...हमने एक-दूसरे की तरफ देखा।

मस्तराम के पतले होंठ मुस्कराने-मुस्कराने को हुए। दाढ़ी-मूँछ की खूँटियाँ थिरकती-सी लगीं। गदुमी सूरत वाला वह चेहरा सादगी में भी दमकता-सा मालूम पड़ा।

दस मिनट पूरे हो रहे थे, हमें अलग होना था।

"चिट्ठी लिखूँगी, जवाब देना। इन्तजार रहेगा..."

"बेशक !...मुकदमे के बाद, पता नहीं, किस जेल में रखा जाऊँगा। मगर तुम्हें वक्त पर पता चल जाएगा।"

"अच्छा ! जय शंकर..."

"जय शंकर !"

—

हमारी नजरें, आखिर में, एक बार फिर मिलीं।
बड़े जमादार ने मस्तराम से कहा—"चलो, बाबा!"

अन्दर जेल के वार्डों की ओर से वे उसे ले जाने लगे। मैं उसकी पीठ ही देख रही थी तब।

अपने उसी रिक्शे से मैं वापस आ गई थी। दास बाबू की बहन मेरी राह देख रही थी।

उनकी उम्र पचास से अधिक नहीं होगी। बड़ा लड़का डिग्बोई (असम) में पेट्रोल कम्पनी का इंजीनियर है। छोटा लड़का अभी-अभी अमेरिका से लौटा है, साइंस का प्रोफेसर है, बिहार के किसी विश्व-विद्यालय में। अकेली रहती हैं। अपने लिए अलग यह कुटिया बनवा ली थी। बाप अपनी जायदाद में से एक अच्छा हिस्सा इस लाड़ली बेटी के लिए दे गए थे।

वह सधुआइन की तरह है।

सत्संग में तीसरे दिन आई तो बाकी सबके चली जाने पर मैंने उनसे कहा—"जी करता है, आपको दीदी कह के बुलाऊँ!"

वह खिलखिलाकर हँसी और मुझे अपने सीने से लगा लिया। बोली—"यहाँ क्या करती हो? चलो, मेरे समीप रहो कुछ दिन!"

चौथे नहीं पाँचवें दिन, महाराज ने मुझसे बतलाया—"अब दो-एक रोज में आपको मैं जमनिया पहुँचा आऊँगा माई जी! मकान-मालिक को अपना मकान वापस चाहिए। लालता बाबू का महरा आया था, उसी ने मुझसे कहा है…"

मुझे भनक मिल गई थी। जेलर की बीवी दो-तीन बार सत्संग में शामिल हुई थी, उसी ने बतला दिया था।

मैं महाराज से क्यों यह सब बतलाती!

उससे कह दिया—"तुम्हें अपने काम से जमनिया जाना हो तो हो आना, मुझे तो अभी काफी अर्से तक यहीं रहना है…"

बस पूर्णिमा से एक दिन पहले मैं दीदी की कुटिया में आ गई।

महाराज दो बार यहाँ भी मुझसे मिल गया है। मैंने उसे ठीक तरह

अपनी तरफ से दे दिए तो बडा खुश हुआ।

शिवनगर की रानी साहिबा का खत एक आदमी लाया था। उसे हिदायत थी, खत या तो भगौती को देना या माई इमरतीदास को।

महाराज उस आदमी को मेरे पास पहुँचा गया। मैंने चिट्ठी पढी, रानी साहिबा ने लिखा था—"लालता को सौ रुपये भिजवा दिए हैं, लेकिन मुकदमे की पैरवी के लिए मैं किसी के नाम सिफारिशी पत्र नही दे सकूँगी, किसी से इस सिलसिले मे मिलना भी नही चाहूँगी..."

वाह रे रानी जी।

तुम तो साफ निकल गई...

भगौती भी निकल गए।

मुझे तो शंकर जी की कृपा ने ही उबार लिया है। हाय रे मस्तराम। देखें तुम्हारी किस्मत मे क्या बदा है।

कै साल की सजा होगी ?

दो वर्ष की।

नही, एक साल की। अस्थाना साहब ने बतलाया था परसो... मस्तराम की तरफ से कोई पैरवी करता तो ज्यादा-से-ज्यादा चार महीने की सजा होती।

अच्छा मस्तराम, सजा की मियाद जेल के अन्दर पूरी करके लौटोगे तो मुझसे मिलोगे आकर ?

जरूर मिलोगे।

मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगी...

मैं पिछले कई वर्षों से तुम्हारी राह देखती रही हूँ...

हम एक-दूसरे की पिछली जिन्दगी के बारे मे बहुत थोड़ा जानते हैं। हमे जरूरत ही नही कि कुरेद-कुरेदकर पुरानी बातें मालूम करते। आसमान मे अलग-अलग उडते हुए दो पंछी कुछ देर के लिए पेड की एक डाल पर आ बैठे। दोनो ने एक-दूसरे को देखा, परखा, महसूस किया। उन्होंने अपनी-अपनी रुचियाँ एक-दूसरे पर लादने की कोशिश कभी नहीं की। अन्दर और बाहर का सुथरापन दोनो को पसन्द था। दोनो ने अपने-

अपने गुरु से अलग-अलग दीक्षा ली थी। दोनों साधु-जीवन बिता रहे थे। फिर भी प्रकृति के तौर पर उनमें एक पुरुष था और दूसरी नारी थी···

मस्तराम, तुम हरद्वार आकर मुझसे मिलोगे ?

मैं अधिक से अधिक एक महीना दीदी के साथ रहूँगी। पन्द्रह दिन यहाँ पन्द्रह दिन प्रयाग। अगले महीने हरद्वार पहुँच जाऊँगी।

हरद्वार में मर्यादामयी साधुआइन रहती है एक। उसका अपना मकान है। भक्तों ने बनवा दिया था। कभी हम दोनों छः महीने साथ रहे थे! अक्सर वह मुझे बुलाती रही है। मैं उसके साथ वर्षों गुजार सकती हूँ। सारा जीवन वह मुझे साथ रख सकती है···लेकिन ·

लेकिन मस्तराम मुझे तुम्हारी प्रतीक्षा रहेगी। तुम हरद्वार जाओगे···

"चलो इमरती"—दीदी पास आ गई है, कहती हैं, "बाहर चलो! यह भी भला लेटने-पढ़ने का वक्त है!"

ओह, शाम हो गई!

चलो, 'आज तुम्हें तमाशा न दिखा लाती हूँ। मीटिंग-सीटिंग है, थोड़ी देर बाद बाँग्ला-नाटक होगा। वापस आएँगे और खाना-पीना करके सो जाएँगे। चलो।"

"चलिए।"

"बाँग्ला समझोगी तो ?"

"समझ लूँगी।"

"आँख-मुँह धो लो।" दीदी मेरे कन्धे पर हाथ रखकर खिलखिलाती हैं।

दीदी की यह खिलखिलाहट मेरे कानों को बहुत भाती है। इनका इस तरह खुलकर हँसना मैं क्या कभी भूल पाऊँगी?

मैं दीदी के साथ बँगला-नाटक देखने जा रही हूँ। उनकी नौकरानी को अचरज लग रहा है।

छुटकारा दरअसल मुझे भी मिला है। जेल के अन्दर वर्ष-दो वर्ष गुजार लेना मुश्किल नही होगा। इसमे भला मेरे जैसे मलंग को कौन-सी मुश्किल होगी ! मुश्किल तो वहाँ होती, भगौती की रियासत मे !

किस तरह हमें उसने फाँस रखा था ? हम उसके हाथ के खिलौने ही तो थे, और क्या थे। भगौती साधुओ को इसान थोडे ही समझता रहा होगा ? माटी की मूरतें समझता रहा होगा···रबड और प्लास्टिक के बाबा···

वाह रे बाबा ! तू भी लगे हाथ छुट्टी पा गया···

बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा ! तेरे हक मे इससे अच्छा और क्या होता ?

खैर मना अपनी ! बच गया है तू···

क्या कहा ? जेल ?

यह जेल तो फिर भी बेहतर रहेगी, बीस गुनी बेहतर ! जमनिया मठ की भूलभुलैया तेरी खातिर कब्र से भी बदतर साबित होती ! उसके अन्दर जमींदार का यह शैतान बच्चा तुझे जिन्दा ही दफन किए हुए था ! निस्तार नही था तेरा। था निस्तार ?

अपने सेल के अन्दर तू रो तो नही रहा है ?

तकलीफ तो बेहद पहुँची होगी।

नही पहुँची होगी तकलीफ ?

जरूर पहुँची होगी···

कितने मजे लूटे हैं तूने !

इन दस-बारह वर्षों मे सुख-ही-सुख तो भोगता रहा है।

तूने खुद कोई सुख नही भोगा मस्तराम ?

अपना क्या ! अपन तो ऐसे बैल हैं कि सानी-भूसे मे मस्त रहते हैं। है कोई माई का लाल जो कहे कि जमनिया मे मलाई-मालपुआ के लिए मस्तराम लार टपकाता था ? कि मस्तराम औरतों का भूत उतारता था ? कि मस्तराम शाल-दुशाला डाले घूमता था ? कि मस्तराम सात सौ रुपये की घड़ी बाँधकर सेठ विर्धीचन्द के दामाद के साथ कार में [illegible] के लिए निकलता था ?

लेकिन, अवधूतिन के लिए तो तू अपनी जान निछावर किए था !

और खामखा लोगो की पीठ पर बेंत फटकारता था !

बाप रे, कितनी जोर से पीटता था लोगो को !

इसमे मेरा क्या कसूर ? वे ही अड जाते थे। खानदानी औरत मिन्नत-निहोरा करती थी, "मस्तराम बाबा आपकी बेंत लगेगी त की कोख से भी हरा-हरा पौधा निकल आएगा, पत्थर पर दूब जनमेग

बेंत की पिटाई के बाद मेरी ड्यूटी खत्म हो जाती थी। मोर्चा दूसरे-दूसरे फतह-बहादुर सँभालते थे। भगौती-लालता-राम सुखदेव का अपना-अपना गिरोह था। यही लोग ठूँठ की कोख से पैदा करने की विद्या जानते थे। पत्थर पर दूब जनमाने की हि इन्ही लोगो को मालूम थी।

और इमरितिया ? जी हाँ, मैं उसे पसन्द करता था। मैं उसे प था। लेकिन, ओछी नजरो से मैंने उसे कभी नही देखा। शील संयम की उसकी संजीदगी मुझे शायद ही कभी खली हो। अज्ञा के दिनो मे भीम ने जिस तरह दुष्ट कीचक से द्रौपदी की रक्षा की उसी तरह भगौती से मैंने इमरितिया को बचाया। वह मुझ पर देती थी। बहन भाई पर जान नही देगी ?

"मस्तराम बाबा, राम-राम !"

"कहो मुकुल ! के बजा ?"

"साढ़े-चार से ऊपर होगा।" मुकुल ने जेल का ताला खोल कहा—"कुछ पता चलता है ! इन ऊँची-ऊँची दीवारो के उस पार भगवान कितने नीचे लटक गए हैं ! कैसे कनमाडें महाराज ? उ मौसम मे तीन ही बजे जेल के अन्दर शाम उतरने लगती है, क बाबा !"

जेल का मजबूत खासा लोहे का छोटा गेट खोलकर सिपाहि कुमार मुकुल उसी से अपनी पीठ टेककर खड़ा हो गया है। मानो जेल की दीवार से टिका दी है उसने। भारी-भरकम ओवरकोट में।

जाकिट की जेब टटोल रहा है…

सुकुल अब सुर्ती तैयार करेगा।

"अशर्फिया नही आया अब तक !"

"आ जाएगा !"

"इसका बाप भी पुलिस लाइन मे आखिर तक रहा। सत्तर साल की उमिर मे मरा था…"

सुकुल ने चूने की डिब्बी खोलकर जरा-सा चूना निकालकर बाईं हथेली पर रखा और इधर-उधर देखकर आहिस्ते से कहा—"यह बाबा सचमुच मुसलमान रहा होगा। जिस तीली से दाँत खोदता है, उसी तीली से कानो का मैल भी निकालता है। झूठ-सूठ का विचार रखता है ! कैसे आप लोगो ने इसको इतने अर्से तक अपने माथे पर बैठाकर रक्खा ?"

मैं सुकुल की बात सुन लेता हूँ। कुछ नही कहता हूँ। उसकी ओर देखता हूँ।

सोचता हूँ, सीधा-सादा किसान पुलिस की लिबास मे सामने है। इसका माथा गिजबिज कर रहा है, नफरत के कीड़े रेंग रहे है दिमाग के अन्दर ! अभी कल तक सुकुल बाबा के पैर छूकर अपने को धन्य-धन्य मानता था, और आज घिन के मारे उसके नाम पर थूकता है ! नजर उठाकर देखना तक नही चाहता बाबा की तरफ…आज वह आदमी ब्राह्मण सिपाही की नजरो मे और कुछ नही है, एक मुसलमान है सिर्फ ! खालिस मलेच्छ…कोरा विधर्मी ! जाने कब से वह भोली-भाली हिन्दू जनता को ठगता आ रहा था। उसे कडी-से-कडी सजा मिलनी चाहिए !" मैं सुकुल की ओर एकटक देख रहा हूँ और उसके अन्दर उठते उफान को अपने खयालो के मुताबिक नापने की कोशिश कर रहा हूँ…सोच रहा हूँ और सोच रहा हूँ !

वह सुर्ती मसल रहा है।

दुहरे करके दो कम्बल बिछे हैं। मैं इत्मीनान से पालथी मारकर [illegible] हुआ हूँ।

[illegible] हिन्दू समाज पर बार-बार मेरा ध्यान आ रहा है। हजारों

वर्ष गुजर चुके हैं और बाहर से आ-आकर पचासों जातियाँ इस समाज के अन्दर घुल-मिल गई हैं। आर्य-अनार्य, शक-हूण, मंगोल-किरात ·· सबका लहू हमारी रगों में हरकत कर रहा है। अरब, यहूदी, मुगल, पठान, ईरानी जाने किस-किसकी धड़कन हिन्दुओं की इस जादुई काया को जानदार बनाए हुए है ! हमारी बिरादरी क्या कोई छुईमुई का पौधा है जो छू देने से सिकुड़ जाएगा ?

एक साधू के नाते, मुझे यह सवाल जरा भी परेशान नहीं करता है कि बाबा जन्म से मुसलमान होने पर भी क्यों हिन्दू साधू बनकर हमारे बीच अपने को पुजवाता रहा ? हम सदियों से मुस्लिम फकीरों और ईसाई सन्तों को अपनी श्रद्धा-भक्ति देते आए हैं, उनके हाथों का प्रसाद ग्रहण करके हमने अपने को धन्य माना है। हमारा समाज इतना क्षुद्र कभी नहीं होगा कि इस सिलसिले को खत्म कर दे।

मेरे लिए परेशानी की बात यह है कि दो साल बाद जब बाबा जेल से बाहर निकलेगा तो फिर कहीं किसी नदी के कछार में या कि वीरान जंगली इलाके में अपनी लम्बी जटाएँ फैलाकर बैठेगा और मगौनी-मालता जैसे चालबाज आदमी इस घुटे हुए औघड़ को फिर से मिल जाएँगे ! फरेबियों की मिली भगत का चस्का लग गया है बाबा को···जालिमों और ठगों की जमात फिर से इस रँगे सियार को अपना महन्त नहीं बना लेगी ?

हमारे समाज के अन्दर ठौर-ठौर पर कूड़ों के अम्बार इकट्ठे हैं··· इस तरह के छँटे हुए बाबा लोग वहीं अपना आसन जमाते हैं और रातों-रात नये-नये मठ खड़े हो जाते हैं ! फिर वहाँ ढाका-काठमाडू होकर चुप-चुप कीमती माल पहुँचने लगते हैं···छोकरियाँ आती हैं, छैले आते हैं, उनके साथ टेपरिकार्डिंग मशीन होती है, ट्रान्समिटर होता है !

हमारा समाज किस तरह लपकता है इन जटाधारी बाबा लोगों की तरफ !

मैं देखूँगा, जेल से छूटने के बाद यह बाबा किधर जाकर बैठता है !
मैं देखूँगा, किस तरह फिर से अपनी जटाओं के अन्दर जूँ पालता है !
मैं देखूँगा, किस तरह पाकिस्तानी और चीनी जासूस इस ...

के रंगीन चोंगे की आड़ में पनाह पाते हैं !

वह आ पहुँचा अशर्फी !

आते ही उसने सुकुल को 'पाँयलगी' की है। सुकुल ने सुर्ती फांककर उसे आशीर्वाद दिया है।

अशर्फी के हाथ में झाड़ू है। जमीन में अलग से हाथ लगाकर वह मुझे प्रणाम कर रहा है।

पाखाने वाला गमला लाकर वह सेल के अन्दर कोने मे रख देता है। पूछता है—"मस्तराम बाबा, आपको जाड़ा नही लगता है?"

मैं उसके इस प्रश्न पर मुस्करा देता हूँ। वह सेल के बाहर खडा होकर अपनी सहज मुस्कान के साथ मेरी तरफ देख रहा है।

सुकुल सेल का फाटक लगाकर ताले की छेद मे चाबी फिराता है···

मैं सेल के अन्दर उसी तरह बैठा हूँ।

अभी थोडी देर तक बैठा रहूँगा···

शाम का खाना मैंने इन दिनों छोड़ दिया है···

सामने उतरी आ रही है शाम !

बाबा

बड़ा जमादार कई दिनों से दिखाई नहीं पड़ा···

न दिखाई पड़े !

पहले दिन में पाँच-सात बार देखने आता था। अपनी पतोहू के बारे में बतला जाता था।

अब किसी दूसरे बाबा को पकड़ेगा। इस बाबा से नहीं पूछेगा।

यह बाबा बड़े जमादार की तबीयत से उतर गया है न ? हाँ, इंसान का यही तो रवैया है। जिस पर नफरत हो, उसे दिल से नीचे उतार दो···

मुझे अब इन लोगों ने दिल से नीचे उतार दिया है !

और तो और, मस्तराम कितना बदल गया ! उसने भी मुझे छोड़ दिया !

अन्दर-ही-अन्दर पछता रहा होगा मस्तराम ?

खीझ रहा होगा ?

गालियाँ दे रहा होगा ?

अजी, मस्तराम धुत्त रहता होगा नशे में।

साले को भंग तो मिल ही जाती होगी।

भंग का नशा भी कोई नशा है।

साली ·

साली सरकार। तुमसे किसने कहा था कि बाबा को सेल से हटाकर नेना वार्ड के कॉटेज में जगह दे और आठ-दस रोज बाद वापस फिर इसी सेल में ला पटक।

जेलर ने चार-पाँच रोज पहले बतला दिया था, "अब आपसे किसी

कम हँसती थी ।

बेचारी आखिर तक मेरा साथ देती…

भगौती और लालता की साजिश मे पडकर ही लछमी के दुधमुँहे बच्चे की कुर्बानी के लिए उस बार मैंने अपनी रजामदी जाहिर की थी। इन शैतानो के सिर पर नरबलि की सनक सवार हुई तो मैं क्या करता ?

दुष्ट लालता ने ताने दिए, फब्तियाँ कसी…

भगतो की मण्डली मे लालता कई दिनो तक फुसफुसाता फिरा— "लछमी अवधूतिन का बच्चा बाबा के तन से पैदा हुआ था, इसीलिए बाबा उसकी बलि के लिए तैयार नही हो रहे हैं। जनम का रोगी बच्चा आज नही तो कल यो ही मुँह बा देगा । दुर्गा मैया के चरणो पर अर्पित होगा तो उसके परलोक सुधरेंगे और मठ की शोहरत कई गुनी बढ़ जाएगी । लगे हाथ इससे बाबा की सिद्धई का इम्तहान हो जाएगा…"

मेरा अहकार उबलने लगा

उस दुष्ट की ओछी नीयत के मुताबिक, इस इम्तहान मे मुझे पास होना पडा ?

बेचारी लछमी बच्चे के बिना पागल हो गई । अनाप-शनाप बकती फिरी। अन्त मे उसका भी दम घोट दिया इन शैतानो ने ।

पता नही सिद्धई का वैसा चुतियापा कब किसी दूसरे औघड़ पर हावी हुआ होगा ?

वह बच्चा जिन्दा होता तो आज उसकी उम्र नौ-दस साल की होती…

पीछे, वर्षों तक सुनता रहा कि उस नरबलि के बाद मठ की आमदनी बढ़ गई थी ।

मठ की आमदनी कैसे-कैसे और कब-कब बढ़ी है, इसका लेखा-जोखा [illegible]ो, मालता, ठाकुर और सेठ बिर्धीचन्द को अच्छी तरह मालूम है । मस्तराम कहा करता "साधुओं की विष्ठा दुनियादारो के लिए चन्दन होती है ।"

गौरी ने कई बार मुझसे कहा . "हम कहीं और जगह अपना अड्डा

बनाएँ पलवर।"

मैं गौरी की यह बात सुनकर देर तक मुस्कराता रहता था। एक बार मेरे मुँह से निकला—"सुन गौरी, बारह वर्ष तो पूरे गुजार लूँ जमनिया में ?"

और, इसी फागुन में तो बारहवाँ साल पूरा होने वाला था। गौरी ने पिछली गर्मियों में मुझे खत लिखा था . "महाराज जी, दो महीने के लिए इधर आ जाओ आप। बड़ा आनन्द रहेगा। इस वर्ष आपके बारह वर्ष जमनिया में पूरे होंगे, याद है अपनी बात ? आपका हुक्म हो तो उत्तराखण्ड में आपके लिए कोई जगह अभी से ले ली जाए।"

मुझे क्या पता था कि इतनी जल्दी जमनिया से पिण्ड छूटेगा !... सजा का फैसला होने पर गौरी को खत डलवा दूँगा। महीने में एक आध पोस्टकार्ड तो कैदी को जरूर लिखने देते होंगे...नहीं ?

लेकिन, उत्तराखण्ड के नाम पर मेरे दिमाग में बस नेपाल-ही-नेपाल आता है। मेरी आधी उम्र नेपाल के पहाड़ों में गुजरी है न ?

हवालात में आने के बाद, जमनिया से जो भी सामान मँगवाए थे, वे मैंने जेल वालों के हवाले कर दिए हैं। बड़े जमादार ने कहलवा भेजा था कल—"पीतल का कमण्डल और कम्बल वाली आसनी चाहें तो अपने पास रख सकते हैं।"

नहीं, मैं कुछ नहीं रखूँगा अपने पास...

"बाबा, खाना नहीं खाओगे ?"

"डाल जाओ !"

"यह रोटी और यह दाल आपके लायक नहीं है बाबा ! आप बड़े साहब से आर्डर दिलवा दो तो अलग से चपातियाँ और सब्जी-चटनी आपके लिए ले आया करूँ..."

"अभी यही चलने दो !"

लोहे के तसले में रोटी-दाल-सब्जी डालकर कैदी रसोइया वापस चला गया है।

तसला उठाकर मैं एक तरफ रखता हूँ।

थोड़ी देर बाद खा लूँगा।

"इन्कलाब···जिन्दाबाद !"

"जिन्दाबाद···जिन्दाबाद !"

हड़ताली मजदूरों के तीन लीडर अभी छूटने वाले हैं। दो रह जाएँगे। पिछले सप्ताह दो बैंचों में सभी मजदूर रिहा हुए थे। लीडर रह गए थे।

सवेरे-सवेरे मेहतर आता है, वही मुझे इस तरह की खबरें दे जाता है। उसकी तो अब भी मेरे लिए वही हमदर्दी है जो पहले दिन थी।

आज खाना खाकर मैं देर तक सोना चाहता हूँ···रात नींद अच्छी नहीं आई।

"सो गया है··"

"हाँ, गाढ़ी नींद में है बाबा !"

सिपाही रामसुभग सुकुल हथेली पर सुर्ती मसलता हुआ धूप में खड़ा है। बाबा की तरफ एकटक देख रहा है। मन-ही-मन कई बार दुहरा चुका है—"सो गया है, हाँ, नींद आ गई है बाबा को ?"

दुबला हो गया है तो बेचारा···

नाटा कद है, गँठीला ढाँचा है। इसी से दुबलापन ढँका रहेगा··· लेकिन साँवलापन गाढ़ा लग रहा है।···कमजोर भी तो हो गया है, बाबा ! मामूली रोटी-दाल पर कैसे चलेगा इस बेचारे का ?

बड़े साहब बाबा के लिए कुछ-न-कुछ जरूर करेंगे ! लेकिन, इसकी तरफ से बड़े साहब को कौन कहने जाएगा ? मैं तो अधिक-से-अधिक बड़े जमादार या छोटे बाबू से ही कह सकता हूँ। ऊपर तक मेरी पहुँच थोड़े है ?

बाबा, तुम सचमुच मुसलमान माँ-बाप की औलाद हो ? जनम के [illegible] हो क्या ?

लेकिन, बीस-पचीस वर्षों से साधुअई करते-करते अब तक तो तुम्हें [illegible] हो जाना चाहिए था। नहीं, अभी कुछ कसर है···

जिस तीली से दाँत खोदते हो, उसी तीली को कानों के अन्दर क्यों डालते हो बाबा ?

ख़ैर, मुझसे तुम्हारी यह तकलीफ देखी नहीं जाती…

मैं कल कोठी पर जाकर कहूँगा…बड़े साहब तुम्हारे लिए अच्छी ख़ुराक का आर्डर दे देंगे।

मुकुल सुर्ती फाँककर आगे बढ़ गया है…

•••

नागार्जुन

पूरा नाम : वैद्यनाथ मिश्र, 'यात्री' के नाम से मैथिली में कविताएँ लिखते रहे हैं।

जन्म : ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन् 1911, ग्राम तरौनी, जिला . दरभंगा (बिहार)।

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली और बंगला में रचनाएँ कीं। मैथिली काव्य संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत। साहित्य के शलाका-पुरुष, महान रचनाकार आजीवन साहित्य सेवा करते रहे।

कृतियाँ

उपन्यास : 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा' (हिन्दी और मैथिली में), 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'वरुण के बेटे', 'दुखमोचन', 'कुम्भीपाक', 'अभिनन्दन', 'उग्रतारा', 'इमरतिया' ('जमनिया का बाबा') 'पारो'।

काव्य-संग्रह : हिन्दी 'युगधारा', 'सतरंगे पंखोंवाली', 'प्यासी पथराई आँखें', 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने', 'तुमने कहा था', 'हजार-हजार बाँहों वाली', 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'रत्नगर्भ', 'ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या !', 'आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने', 'इस गुब्बारे की छाया में' मैथिली 'चित्रा', 'पत्रहीन नग्न गाछ'। खण्डकाव्य 'भस्मांकुर'।

जीवनी : 'एक व्यक्ति एक युग-निराला', 'मर्यादा पुरुषोत्तम'।

कहानी संग्रह : 'आसमान में चन्दा तैरे'।

निबन्ध संग्रह : 'अन्नहीनम् क्रियाहीनम्', 'बम भोलेनाथ'।

अनुवाद : 'गीत गोविन्द', 'मेघदूत', 'विद्यापति के गीत', 'विद्यापति की कहानियाँ'।

बाल साहित्य : 'तीन अहदी', [illegible]।

तीन खण्डों में चुनी हुई रचनाएँ प्रकाशित

नागार्जुन

पूरा नाम : वैद्यनाथ मिश्र, 'यात्री' के नाम से मैथिली मे कविताएँ लिखते रहे है ।

जन्म ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन् 1911, ग्राम तरौनी, जिला . दरभगा (बिहार) ।

हिन्दी, सस्कृत, मैथिली और बगला मे रचनाएँ की है । मैथिली काव्य सग्रह 'पत्रहीननग्न गाछ' पर साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत । साहित्य के शलाका-पुरुष, महान रचनाकार, आजीवन साहित्य सेवा करते रहे ।

कृतियाँ

उपन्यास . 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा' (हिन्दी और मैथिली मे), 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'वरुण के बेटे', 'दुखमोचन', 'कुम्भीपाक', 'अभिनन्दन' 'उग्रतारा', 'इमरतिया' ('जमनिया का बाबा') पारो

काव्य-सग्रह हिन्दी . 'युगधारा', 'सतरगे पखोवाली', 'प्यासी पथराई आँखे', 'खिचडी विप्लव देखा हमने', 'तुमने कहा था', 'हजार-हजार बाहो वाली, 'पुरानी जूतियो का कोरस', 'रत्नगर्भ', 'ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या !', 'आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने', 'इस गुब्बारे की छाया मे' मैथिली 'चित्रा', 'पत्रहीन नग्न गाछ' । खण्डकाव्य 'भस्माकुर' ।

जीवनी . 'एक व्यक्ति एक युग-निराला', 'मर्यादा पुरुषोत्तम' ।

कहानी संग्रह . 'आसमान मे चन्दा तैरे' ।

निबन्ध सग्रह 'अन्नहीनम् क्रियाहीनम्', 'बम [illegible] '।

[illegible] : 'गीत गोविन्द', 'मेघदूत', 'विद्यापति के [illegible]', 'विद्यापति की कहानियाँ' ।

साहित्य : 'तीन अहदी', 'सयानी कोयल' ।

खण्डो मे चुनी हुई रचनाएं प्रकाशित

नागार्जुन

पूरा नाम : वैद्यनाथ मिश्र, 'यात्री' के नाम से मैथिली में कविताएँ लिखते रहे हैं।

जन्म : ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन् 1911, ग्राम तरौनी, जिला . दरभंगा (बिहार)।

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली और बंगला में रचनाएँ की हैं। मैथिली काव्य संग्रह 'पत्रहीननग्न गाछ' पर साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत। साहित्य के शलाका-पुरुष, महान रचनाकार आजीवन साहित्य सेवा करते रहे।

कृतियाँ

उपन्यास 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा' (हिन्दी और मैथिली में), 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ' 'वरुण के बेटे', 'दुखमोचन', 'कुम्भीपाक', 'अभिनन्दन' 'उग्रतारा', 'इमरतिया (जमनिया का बाबा') पारो

काव्य-संग्रह हिन्दी 'युगधारा', 'सतरंगे पंखोंवाली' 'प्यासी पथराई आँखें', 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने', 'तुमने कहा था', 'हजार-हजार बाँहों वाली', 'पुरानी जूतियों का कोरस', रत्नगर्भ', 'ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या !', आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने', 'इस गुब्बारे की छाया में' मैथिली 'चित्रा', 'पत्रहीन नग्न गाछ'। खण्डकाव्य 'भस्मांकुर'।

जीवनी 'एक व्यक्ति एक युग-निराला', 'मर्यादा पुरुषोत्तम'।

कहानी संग्रह 'आसमान में चन्दा तैरे'।

निबन्ध संग्रह 'अन्नहीनम् क्रियाहीनम्', 'बम भोलेनाथ'।

अनुवाद . 'गीत गोविन्द', 'मेघदूत', 'विद्यापति के गीत', 'विद्यापति की कहानियाँ'।

बाल साहित्य 'तीन अहदी', '[illegible]'।

[illegible] में [illegible] हुई रचनाएँ प्रकाशित